





Early European Books, Copyright © 2012 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of The Wellcome Trust, London.
3936/A



Early European Books, Copyright © 2012 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of The Wellcome Trust, London.
3936/A



Early European Books, Copyright © 2012 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of The Wellcome Trust, London.
3936/A



Early European Books, Copyright © 2012 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of The Wellcome Trust, London.
3936/A

3936 A

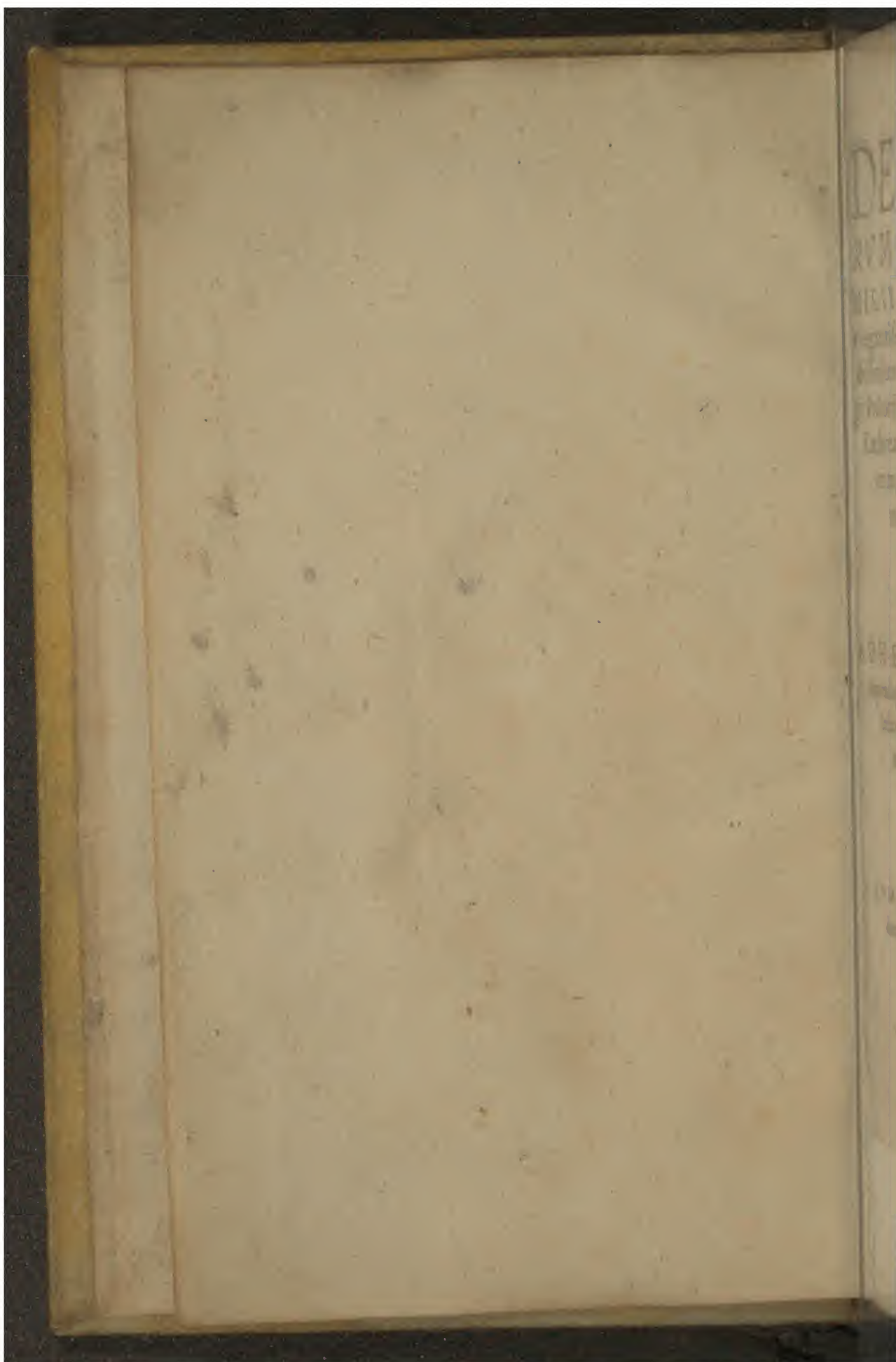
5486

N xv. Mac

23.3.0

52 D 50 23440

Haynich
2/3/10



DE HERBA

RVM VIRTVTIBVS Æ-

MILII MACRI VERONENSIS

elegantissima poësis, cum succincta admodum

difficilium & obscurorum locorum, D. Geor-

gij Pictorij Villangani doctoris Medici, & apud

Cæsaream curiam Enshemij olim archia-

trum, expositione, iam demùm sum-

ma diligentia castigata, & in

lucem edita.

ADHÆRENTIBVS GRADVVM

compendiosa tabula, omniumq; hinc contentorum fructuoso

Indice, & elencho, ut quisque facile ex eo percipiat o-

mnium morborum à summo uertice, ad mos

pedes medicinalem curam.

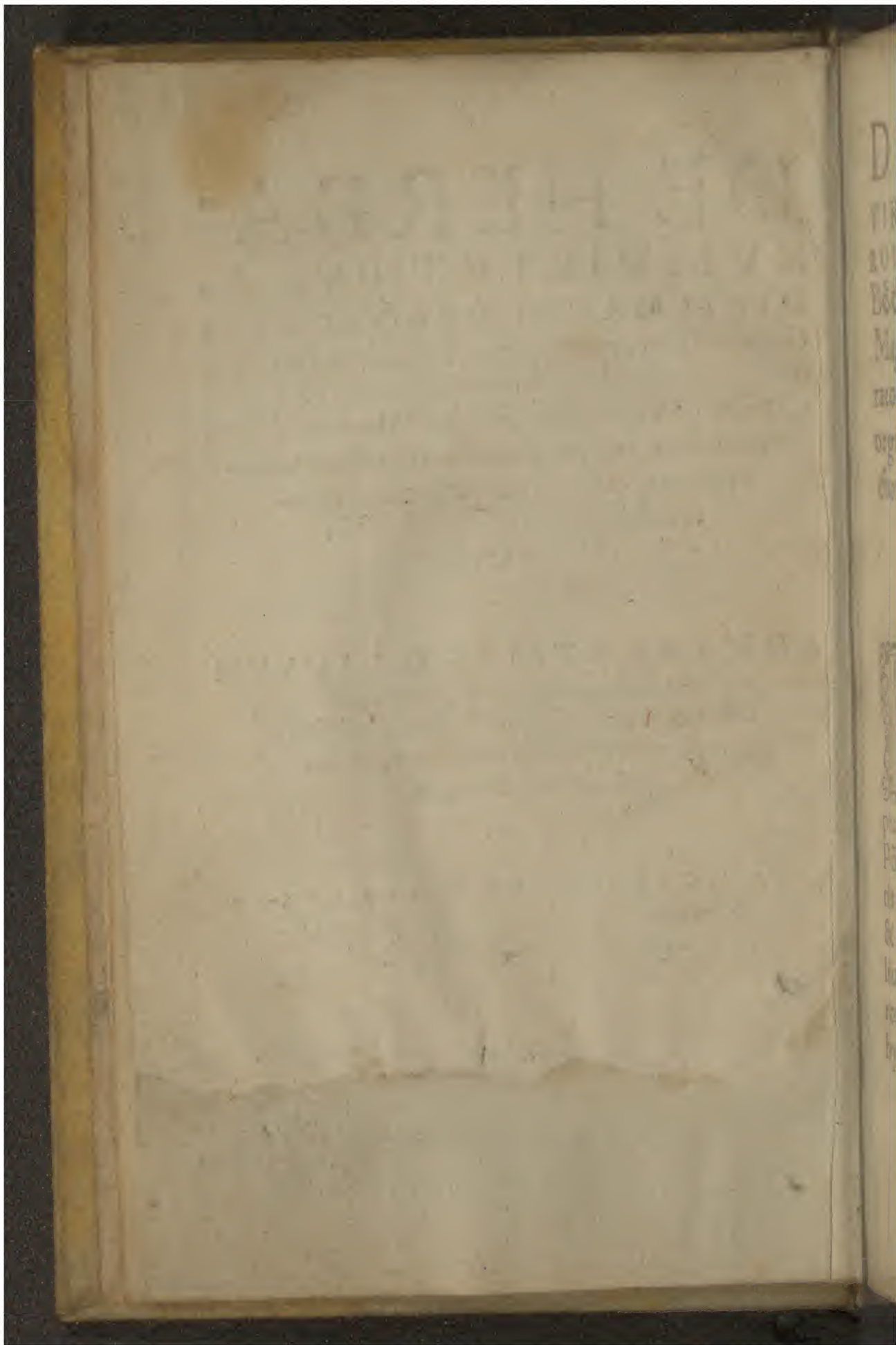
CVM, CARMINE DE HERBA QVA-

dam exotica, cuius nomen mulier est rixosa,

codem D. Georgio Pictorio Vil-

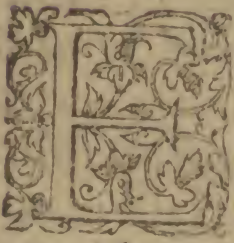
lingano autore.

BASILEÆ.



DIGNISSIMO

VIRO, ET STRENVO HE-
ROI DOMINO WILHELMO
Böcklin à Böcklinsouu, præposito
Magdenburgensi, ac strenuo militi au-
rato Domino & Meccœnati suo, Ge-
orgius Pictorius Villinganus, Do-
ctor medicus, & Cæsareæ curiæ En-
sisheimj superioris Alsatiæ
archiater, S. D.

 N tibi donamus, dignissime uir,
& strenue Meccœnas, non Ado-
nidis, de quib. Pausanias, ad bre-
uem saltem, præsentemq; uolu-
ptatē hortulos: sed Lucullianos potiùs, uel
Pōpeianos, qui tam à publicis, quàm priua-
tis negocijs dimisso, lene diuerticulum sint,
& macellum quandoq; seu pharmacopo-
lium in annos durabile potiùs. Neq; est, he-
roster maxime, quod munus nostrum ceu
hypenemium, uel Caricum asperneris, aut
† 2 nihil

E P I S T O L A

nihili habeas, quia herbae sunt, & flores, uirginibus aut delicatulis amatoribus munus tam conueniens, quam apta sunt tela Marti. Triuariam enim herbarum, florumque exaggeremus auctoritatem. Primo, quod a rerum initio artis herbariae cognitio maxime in precio fuerit, & Adam, suaeque coniugi Heuae, ductu pneumatis desuper elargita: ac quod Solomon per Philosophiam naturalem a Deo Opt. Max. datam, hanc, ut tertio Regum habetur, a cedro tractarit ad hyssopum usque. Etiam si taceam Orpheum, Hesiodum, Homerum, Pythagoram, Peonem, Podalirium, Machaonem, Hippocratem, & alios doctrinarum athletas, quos etiam multorum annorum serie libithina sacrauit, & herbarum fuerunt. Secundo, quod deos herbas tractasse maxime pateat, qui triumphum egisse rati sunt, si unam aut alteram inuenissent. Partenion enim Athlantis nepos Mercurius inuenit, hyosciamum Apollo, panacem Aesculapius, atque aurea Venus mirtum. Tertio, quod rerum omnium magistrum, naturam quippe, animalia bruta eoque pertraxisse comperitum habeamus, ut humanos in usus herbas ostende-

DEDICATORIA.

ostenderent. Quis enim dictami usum contra phalangis ictū docuit quā ceruicē? Quis chelidoniam oculis mederi quā hirundines? Qui cognouissemus rutā uenenis ob-
sistere, si mustela defuisset? Quomodo cunilā serpentis ictum curare potuisset coclea non doctrices? Serpentes fœniculum dederunt, ursi hederam, anseres syderitim, grues portulacam, & ciconiæ origanum. Accipe igitur, amplissime uir, Macri hortulum, uel magis enchiridion, cum nostris scholijs eo animo, quo nos donamus. Donamus autē satis beneuolo, ut Artici Pōponij ritu à cœna quandoq; animum relaxādum seu refo-
cillandum potiùs in horto, quē ædibus tuis contiguum habes, legas & relegas. Quam enim horum, quę nos delectāt, proficua sit lectio, Alexander Seuerus propensius declarat, qui mensæ finem nunquā expectans, semper in mēsa legebat, optimum ciborum lectionem ratus condimentum. Tiberius itē, qui ex quotidiana lectione conuiuijs excerptas quæstiones proponebat, ut epicyl-
ceon, hoc est, iocundam haberent confabu-
lationem, quam uerius animi hilaritatē In-
ducere,

EPIST. DEDICAT.

ducere, affirmabat, quam uel Homericam
Nepenten uel Buglossam. Id si feceris, am-
plissime uir, dabis nimirum alijs, etiã doctio-
ribus, uerè tessaram aut symbolum, ut Me-
cœnatem te Hetruscū facile agnoscāt, &
uberius scribant. Valeat interim dominatio
tua fœlix, quo diutius honorificè suę ditio-
ni, & multis Christianis prodesse queat. Da-
tum Enfishemij anno Virginei partus ses-
quimillesimo, quinquagesimo octauo,
die mensis Septembris ui-
gesimo sexto.

SIMPLI-

Simplicium quæ hñc habentur graduatio.

| | | | | | | | | | |
|------------|---|-------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|--------------|
| Artemisia | | 1 | | | | | | | Bugel |
| Ἀρθεμισία | 2 | | | | | | | | Beyfuß |
| Abrotanum | 3 | | | | | | | | Gerwurtz |
| Ἀβρότονον | | 3 | | | | | | | luttel wurtz |
| Absinthium | 2 | | | | | | | | zwermut |
| Ἀψιύθιον | | 1 | | | | | | | |
| Urtica | | 3 | | | | | | | Nessel |
| Ἀκάνθη | 2 | | | | | | | | Brennessel |
| Allium | 4 | | | | | | | | Knoblauch |
| Σκόροδον | | 4 | | | | | | | |
| Plantago | | 3 | | | | | | | Wegerich |
| Ἀρνολώγον | 4 | | | | | | | | Schaffzung |
| Ruta | | 3 | | | | | | | Rauten |
| Πήγανον | 3 | | | | | | | | |
| Appium | | 3 | | | | | | | Epſich |
| Σέλινον | 3 | | | | | | | | |
| Malua | | 1 | | | | | | | Bappel |
| Μαλαχά | 2 | | | | | | | | Kesli kraut |
| | | Sicca | Calida | Humida | Calida | Sicca | Frigida | Humida | Frigida |
| Folio | 1 | 4 | 7 | 12 | 15 | 17 | 22 | 27 | 29 |
| | | | | | | | | | † 4 |

Simplicium quæ hîc habentur graduatio.

| | | | | | | | | | |
|------------|----|-------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|---------------|
| Anethum | | 2 | | | | | | | Dillen |
| Άνιθοῦ | 2 | | | | | | | | Hochtraut |
| Bechonica | | 1 | | | | | | | Patnenien |
| Κίσροῦ | 1 | | | | | | | | Braun Betonic |
| Sabina | | 3 | | | | | | | Seuenbaum |
| Βραβύς | 3 | | | | | | | | Schmeck palm |
| Porrum | | 3 | | | | | | | Schnittlauch |
| Πράσοῦ | 1 | | | | | | | | Brislauch |
| Chamomilla | | | | | | | | | Camillen |
| Άνθεμίσ | 1 | | | | | | | | Gel camillen |
| Nepeta | | 3 | | | | | | | Katzen traut |
| Καλαμίντκ | 3 | | | | | | | | Acternimien |
| Pulegium | | 3 | | | | | | | Polay |
| Πλέχωρ | 3 | | | | | | | | Hertz bleich |
| Feniculum | | 2 | | | | | | | Fenchel |
| Μάραθροῦ | 2 | | | | | | | 3 | |
| Acidula | | | | | | | 3 | | Hauszwurtz |
| Άείωοῦ | | | | | | | | | Donder bar |
| | | Sicca | Calida | Humida | Calida | Sicca | Frigida | Humida | Frigida |
| Folio | 32 | 34 | 38 | 39 | 42 | 45 | 47 | 50 | 52 |

Simplicium quæ hſc habentur graduatio.

| | | | | | | | | | |
|-------------|-------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|---------|---------------|
| Portulaca | | | | | | | | 2 | Börgel |
| Ἀνδράχνη | | | | | | | 3 | | Birzel |
| Lactuca | | | | | | | | 3 | Lattich |
| Θριδάνα | | | | | | | | 3 | Lactuc |
| Rosa | | | | | | 1 | | | Rosen |
| Ρόδον | | | | | 1 | | | | |
| Lilium | | 2 | | | | | | | weis gilgen |
| Κρίνον | 2 | | | | | | | | |
| Saturegia | | 3 | | | | | | | Kirch Isop |
| Θύμβρα | 3 | | | | | | | | Sergen kraut |
| Salvia | | 2 | | | | | | | Salbey |
| Ἑλισσφορος | 2 | | | | | | | | |
| Ligusticum | | 3 | | | | | | | Liebstockel |
| Σμύρνιον | 3 | | | | | | | | |
| Ostrucium | | 3 | | | | | | | Meyster murtz |
| Σίλφιον | 3 | | | | | | | | |
| Charifolium | | 3 | | | | | | | Körbelkraut |
| Γιγγιδιον | 2 | | | | | | | | |
| | Sicca | Calida | Humida | Calida | Sicca | Frigida | Humida | Frigida | |
| Folio | 55 | 57 | 58 | 61 | 63 | 65 | 67 | 69 | 70 |
| | | | | | | | | | † 5 |

Simplicium quæ hîc habentur graduatio.

| | | | | | | | | | |
|------------|----|-------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|-----------------|
| Atriplex | | | | | | | | 1 | Scheißkraut |
| Ἀτράφαξις | | | | | | | | 2 | Melten |
| Coriandrum | | | | | | | | 2 | Coriander |
| Κόριον | | | | | | | | | |
| Nasturtium | 4 | | | | | | | | Kressich |
| Κάρδαμον | | 4 | | | | | | | Garten Kressich |
| Eruca | | 2 | | | | | | | Weis senff |
| Ἐυθωμον | 2 | | | | | | | | |
| Rapauer | | | | | | | 1 | | Klapper rosen |
| Μίπων | | | | | | 1 | | | Korn rosen |
| Σερε | | 4 | | | | | | | Zibet |
| Κρόμμιον | 4 | | | | | | | | |
| Buglossus | | 1 | | | | | | | Ochsenzung |
| Βύλασθον | 1 | | | | | | | | |
| Sinapi | | 4 | | | | | | | Senff |
| Σίνιπι | 4 | | | | | | | | |
| Caulis | | 1 | | | | | | | Köl |
| Κράμβη | 2 | | | | | | | | Kabis kraut |
| | | Sicca | Calida | Humida | Calida | Sicca | Frigida | Humida | Frigida |
| Folio | 72 | 73 | 75 | 77 | 79 | 82 | 84 | 86 | 90 |

Simplicium quæ hæc continentur graduatio.

| | | | | | | | | | |
|--------------|-------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|---------|-----------------|
| Origanum | | 3 | | | | | | | Wolgemut |
| Ορίγανον | 3 | | | | | | | | Koslen |
| Serpillum | | 3 | | | | | | | Quendel |
| Ερπυλλον | 3 | | | | | | | | Hünertöl |
| Viola | | | | | | | | 1 | Violaten |
| Αιόχαιον | | | | | | | 1 | | Mertzen negelin |
| Aristolochia | | 1 | | | | | | | Holwurtz |
| Αράραρον | 2 | | | | | | | | Osterlucy |
| Marrubium | | 2 | | | | | | | Andorn |
| Πράσιον | 2 | | | | | | | | Apffeltraut |
| Iris | | 2 | | | | | | | Blaw gilgen |
| Ιρις | 2 | | | | | | | | Viol Wurtz |
| Ynula | | | | 1 | | | | | Alant wurtz |
| | | | 2 | | | | | | |
| Ysopus | | 3 | | | | | | | Kirchen Ysop |
| | 3 | | | | | | | | Ysopen |
| Asarum | | 3 | | | | | | | Hasel wurtz |
| Άσαρον | 3 | | | | | | | | |
| | Sicca | Calida | Humida | Calida | Sicca | Frigida | Humida | Frigida | |
| Folio | 96 | 98 | 99 | 102 | 105 | 106 | 108 | 109 | III |

Simplicium quæ hæc habentur graduatio.

[illegible]

Simplicium quæ hîc continentur graduatio.

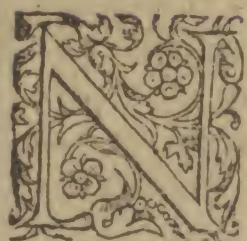
| | | | | | | | | | |
|-------------------------|-------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|---------|-------------------|
| Hellebor. alb. | | 3 | | | | | | | Weiss Nieswurtz |
| Εμβ. λευκ. | 3 | | | | | | | | |
| Hellebor. nig. | | 3 | | | | | | | Schwarz Nieswurtz |
| | 3 | | | | | | | | |
| Verbena ισρά βοτάνη | | | | | | | 2 | | Iseutraut |
| Chamaedris Χάμαιδρυς | | 3 | | | | | | | Gamenderlin |
| | 3 | | | | | | | | Vergis nit mein |
| Morella Στροχύδον | | | | | | 1 | | | Nachtschatt |
| | | | | 2 | | | | | |
| Malua | | | | | | | | 1 | Bappel |
| | | | | | | | 2 | | |
| Paratella | | | | | | 2 | | | Mengelmurtz |
| | | | | 2 | | | | | Münch reubarb. |
| Hiosciamus Ηοσκύναμ | | | | | | | | 4 | Bisentraut |
| | | | | | | | 4 | | |
| Lolium Λίρα | | 3 | | | | | | | Rattenkraut |
| | 2 | | | | | | | | |
| | Sicca | Calida | Humida | Galida | Sicca | Frigida | Humida | Frigida | |
| Folio | 128 | 132 | 133 | 135 | 136 | 140 | 142 | 143 | 144 |

Simplicium quæ hñc habentur graduatio.

| | | | | | | | | | | | | |
|-------------|-----|-------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|---------|-----|-----|----------------|
| Cicuta | | | | | 4 | | | | | | | Wüterich |
| Κωνίον | | | | | 4 | | | | | | | mundtscherlin |
| Piper | | 3 | | | | | | | | | | Pfeffer |
| | 3 | | | | | | | | | | | |
| Pyrethrum | | 3 | | | | | | | | | | Bertram |
| Πύρεθρον | 3 | | | | | | | | | | | |
| Zingiber | | | | 3 | | | | | | | | Imber |
| | | | | | | | | | | | | |
| Cuminum | | 3 | | | | | | | | | | Römisch kümich |
| | 3 | | | | | | | | | | | |
| Galanga | | 3 | | | | | | | | | | Galgenwurtz |
| | 3 | | | | | | | | | | | |
| Zedoaria | | 3 | | | | | | | | | | Zumang |
| | 2 | | | | | | | | | | | |
| Gariophilon | | 2 | | | | | | | | | | Negelein |
| | 2 | | | | | | | | | | | |
| Cinamon | | 3 | | | | | | | | | | Zimet |
| | 3 | | | | | | | | | | | |
| Costum | | 3 | | | | | | | | | | Bitter Costen |
| | 3 | | | | | | | | | | | |
| Thus | | 2 | | | | | | | | | | |
| | 2 | | | | | | | | | | | |
| | | Secca | Calida | Humida | Calida | Secca | Frigida | Humida | Frigida | | | |
| Folio | 146 | 147 | 148 | 149 | 150 | 151 | 151 | 152 | 152 | 154 | 155 | |

GEORGIVS PICTO-
RIVS D. MEDICINÆ,

candido Lectori s. d.



E tantum mihi placuisse Macrū cre-
das optime Lector, en eiusdem uitā
hīc habes per Crinitum doctiss. lite-
rarum athletam, in libro de Latinis
poētis ad Cosmum Pacium pontifi-
cem Aretinum lib. 3. cap. 51. descriptā. Ex quo eun-
dem nō usq; quaq; uirum indoctū fuisse liquido
tibi constabit, qui & alijs quoq; etiā doctissimis
placuerit. Fatemur unum & alterum uersum leo-
ninum, ac lima indigentem: non tamen adeo de-
plorandum, ut totū inde Macri opus repudian-
dum censuerim. Phrasi quid donandum asseri-
mus, dum contenti substantia non a uero degene-
ret Crinitus sic habet:

*Aemilij Macri, poēta Veronensis uita, ex Petri Criniti ab-
solutissimæ doctrinæ uiri, tertio de Latinis poētis libro
compendiosè conscripta.*

Aemilius Macer patria Veronensis fuit, ut qui-
dam existimant, ingenio & doctrina traditur præ-
stitisse, quod eius carmen satis indicat. Floruit hic
maximè temporibus, quibus Messala Corvinus
& Asinius Pollio in Latina eloquentia claruerūt.
Id cum ex alijs multis colligitur, tū ex Publio O-
uidio, qui comes illi fuit, dū iter faceret in Asiam,
ac Siciliae regionem perlustraret. Amicos præci-
puè habuit Albium Tibullum, & Ouidium ip-
sum,

E P I S T O L A.

sum, cum quibus propter suauitatē morum, atq; communia studia, magna familiaritate uersatus est. Idem Macer præter opus de bello Troiano, scripsit etiam libros de uenenatis animantibus ac de herbis, secutus Nicandrum poetam Colophonium, in quibus non mediocrē laudem tulit suæ diligentiae atq; laboris. Fabius Quintilianus elegantiam carminis in hoc poeta commendauit, ac legenda quidem esse illius opera refert, etsi ad eloquentiam oratoris non multū pertinere uideantur. Nonius Marcellus Aemilium Macrum citat in Theogonio, referens hoc carmen:

Et nunc agresteis inter Picunus habetur.

Obijt in Asia paucis annis post Publium Vergilium, ut ab Eusebio relatum est. Hæc Crinitus. Contemporaneum Ouidio fuisse, ex istis Ouidianis scriptis facile quouis deprehendet:

Sæpe suas uolucres legit mihi grandior auo,

Quæq; nocet serpens, quæ iuuat herba Macer.

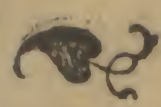
Item:

Tu canis æterno, quicquid restabat Homero,

Ne careant summo Troica bella manu.

Sunt qui ab hoc aliū fuisse Macrum testantur, & hūc ex poetarū collegio propter phrasim expungendū censent: quib. planē non subscribimus, dū omnia quæ scribit, bonorū autorū ductu scribit, neminēq; hætenus uerborū lænocinio curatum pateat. Autorū nomina, quos imitatus est, quorū itē suffragio scholia nos addimus, infra fol. 161. reperiēs. Tu saltē boni cōsule Lector oprime, & uale.

A E M I L I I



AEMILII

MACRI VERONEN-

SIS DE HERBARVM VIRIBVS,

opus tam utile, quàm necessarium, cum Scho-

lijs Georgij Pictorij Villingani, Doctoris Me-

dicilongè utilissimis, iam demùm excu-

sis, & in uarijs locis auctis,

ac castigatis.



DE ARTEMIS-

ia. Von Beyfuß. Bu-

cken. S. Iohansgürtel.

Sonnennwendgür-

tel. Cap. 1.

DE Artemisia

scribit Galen.

lib. 6. simpli.

medic. Dioscor. lib. 3.

cap. 118. Aeginetali.

7. cap. 1. Lucius Apu-

leius de uirtutibus her-

barum cap. 10. Plin-

nus lib. 25. cap. 7. An-

glicus lib. 17. cap. 16.

uulgò beyfuß:

A Herba,



Herbarum uarias dicturus carmina ui-
res,

Herbarum matrem (dedit Artemisia
nomen,

Cui Græcus sermo) iustum puto po-
nere primo,

Huius opem fertur prior inuenisse Diana,

Ætæus Græcè, quæ dicitur: indeq; nomen

Herba tenet, quia sic inuentrix dicitur eius,

Præcipue morbis mulieribus ipsa medetur,

Menstrua deducit eius decoctio sumpta,

Hocq; facit matrix, si sæpè fouetur eadem.

Vel si cruda mero sociata terendo bibatur,

Aut à trita uirens & super alium nocte ligetur,

Pellit abortiuum potu, uel subdita tantum

Duritiæ & soluit stericas pellitq; tumores,

Vrinam potata ciet, lapidesq; repellit,

Ictericosq; iuuat cum uino sæpius hausta.

Hanc ad ipsi iunctam strumis opponere laudat

lib. 22. Plinius, atq; iubet eum uino sumere tritam.

30. Hæc 4. opium nimium si quemq; læserit haustum

Subuenit eximie, si uino iuncta bibatur:

Affirmant etiam quisquis gesta uerit illam,

Quod nullo ualeat & nocuo medicamine lædi,

Et quod eum morfu non apperat ulla ferarum,

Radix illius collo suspensa rubetis

Dicitur, & cunctis & nouis oblistere ramis,

Succus ad hoc eius cum uino proderit haustus,

Si musto contrita recens seruabitur herba,

Vinum

Vinum prædictis reddit medicabile morbis,
Et sapor est, & odor uino gratissimus illi,
Confortat stomachum, sanat præcordia sumptū,
Et multis alijs affirmant utile caulis.

SCHOLIA.

- 1 **I**ndēq; nomen.] à Diana Iouis ex Latona filia, quā ἄρτεμις Graio dixerunt sermone, hanc herbam nominatā scribit Macer, uel hinc fortassis quod Artemim deā uotis et precibus uocatam, id potuisse creditum est, quod cui seu uirtuti huius herbæ arcanarum rerum periti quoq; adscribunt, hoc est, quod sciuerit trahere menses, elicere fœtus, excludere secundas & locorum inflammationibus mederi. Qua ratione Parthenim quoq; nominant herbam, id est, uirginalem, quod à uirginitatis Dea nomen sibi traxerit. Sed alij ab Artemisia regina Halicarnassi, uxore Mausoli, regis Cariæ dictam, impugnat: quæ glorioso adoptionis genere huius herbæ inuentum sibi adscripserit, indeq; βασιλικὴ λέχων, id est, regium olus dictam, uel Anacloium, quod est regale, dum Anactas reges Græco idiomate nominari cōstet. Quisdam Sozusam, quasi salutarē, ob præsens quod mulierū locis suggerit remedium. Tamen quàm in multiplici huius herbæ nominū ambitu ueteres laborarint, Dioscorides amussatim declarat, quem legendi auidus tertio libro capite 118. legat.
- 2 **S**uper aluū nocte ligetur] Aluū Dioscorides imū uentrem interpretatur præfato loco, quem Iulius Pollux in Onomatistici secundo uolumine hypogastrium, quod est subuentrale nominat, & complures pubem.
- 3 **D**uricias soluit stericas] hoc est matricales, nondū infamē uersos tumores, quales nimis barbara uoce Rases quādoq; ra Ad Almagadias nominat, ὑπερπαρα enim fœui gerendo, uas habile, hoc est lib. 9.

A 2

matricem,

4

AMILIVS MACER

matricem, Galenus nominat. Idem Siluaticus facit cap. 657.

4 Hæc opium nimium læserit si] Quæ opium laqueo gustatum sequatur, Nicander recenset, dum præter perfrictionem cuius Dioscorides meminit 6. lib. profundum somnum recenset, languorem, pruriginem, toto corpore odorem, pallidam faciem, labiorum igneum colorem, exiguam & frigidam respirationem, liuescentes ungues, distortas nares, & cœcauos oculos. Est autem opium papaueris nigri liquor, frigidus & siccus in quarto, cuius drach. 2. penso, si Rasi habenda fides, hominem interficiunt.

5 Nocuo medicamine lædi] Est enim uenenis singulare Bezoar, & phliris quoque Theffalis, quæ ut plurimum insaniam inducunt.

6 Nouis obistere ranis] Rubetis & aliquibus ranis inesse uenena Plinius 25. naturalis historiae lib. cap. 10. docet. Bufones tamen, per ranas nocuas quoque intelligere datur.



DE ABROTANO.

Stabmurtz. Garthagen.

Gerndwurtz. Schoffsmurtz.

Wieltraut. Affrutsch.

Cap. 2.

Abrotanon describit Galen. lib. 6 simplic. cap. 1. Avicenna lib. 2. Dioscorides lib. 3. cap. 26. Serap. cap. 117. Plinius lib. 21. cap. 21. Oribasius de simplic. uirtute lib. 2. Vide Nicandri interpretem.

Ter-

Tertius 1 Abrotono legitur gradus esse caloris
 Et desiccandi semen feruentius herba est,
 Vnde iuuat nervos, & causas pectoris oēs,
 Illius elixi si sit decoctio sumpta,
 Sic quoque 2 disipnoicis prodest, rursimque repellit.
 Et prodest lumbis, sic 3 uuluarumque querelis
 Omnibus his, crudū cum uino proderit haustu.
 Vrinam purgat, sic & 4 præcordia mundat,
 Sic 5 schiasim curat, sic sumptū 6 menstrua soluit.
 Serpentes nidore fugat bibitumque uenena
 Illorum 7 extinguit, sedat quoque frigora 8 febris,
 Antea quam ueniant, si mixto sumitur amne,
 Aut oleo quo decoquitur, si membra perungas.
 Lumbricos 9 uentris hanc sæpe bibendo necabis,
 Huic panis micas & mala Cydonia iungens
 In simul amne coquas, oculorum cocta dolori
 Apponas, uel feruori, curabis 10 utrumque
 Stirpes infixas, & spinas abstrahet ipsum,
 Appositum per se, uel adeps si iungitur illi.
 Hæc etiam Venerem puluino subdita tantum
 Incitat, & uentri nocuis porata resistit.

S C H O L I A.

Tertius Abrotono legi] Medicinarū simplicium fa-
 cultates in quatuor gradus, Galenus & alij naturarū in-
 dagatores distinguunt, sic ut primus in corpore humano
 sua efficiat qualitate operationē, sensu non perceptā. Secundus
 qualitatē sensu perceptā, citra tamen læsionē functionum. Tercie-
 us ut lædat, sed non funditus eruat. Quartus qui operādo mortifi-
 cationem & destructionē ingerat. Quibus gradibus & metas, uel

mansiones adiiciunt, sicut idem Galenus 5. simplicium docet: tamen quia illas ex autorum iudicio ferme incerto limitatas cernimus, ut Cepe indicat, quam autor præfatus in tertia mansione tertij gradus calori assignat: & Auicenna in prima quarti gradus, data opera in harum rerum descriptione quiescimus.

2 Disпноicis prodest] aliquod malū quādoq; cōtingere circa fauces 4. lib. Celsus 4. capite scribit, hocq; pro ut se intendit, in tres species idem partitur, & primam quæ ægrum modicum angit, sed nō strangulat δυσπνοια vocat: secundam quā æger cum sono spirat ἄσθμα: tertiū si tantū recta ceruice aërem capiat ὀρθοπνοια. idem facit Hippocrates, nisi quod & quartam speciem addit præfatis ferme præsentiorē lib. 3. prognosticorū commēto 17.

3. Vuluarumq; querelis.] muliebribus locis, quæ γυναικεία nominant.

4 Præcordia mundat] per præcordia distinctionem intelligit Macer superiorū uiscerū ab inferioribus διάβραγμα, hanc Galenus uocat de usu partium corp. hum. 4. lib. Quidam septum transversum, Plato περὶνα, quod eo inflammatione affecto mens quoq; lædatur, uelut idem Galen. 5. locorum affect. indicat.

5 Sic schiasim] Schiasim curat, hoc est, morbum quē ἰσχίαν Græci uocant in uertebis seu coxendicibus molestantē, quem Hippocrates describit libro de morbis, qui extra contingunt.

6 Menstrua soluit] suppressis mensibus medetur dilatando meatus.

7 Illorum extinguit] Pota herba priuatim scorpionum & phalangiorum moribus aduersatur, inquit Dioscorid.

8 Sedat frigora febris] hoc est febrīū accessiones impedit.

9 Lumbricos necat] Lumbricorū tria ponit genera Aegineta 4. lib. cap. 17. Galenum, ut assolet seculus, rotundos, la-

tos, &

tos, & aslan les. Hippocrates quarto de morbi: saltem duo recen-
set latos, & ascarides Auicenna quatuor, 10. omnes abrotam de
coctum Macer necare ait.

10 Curabis utrumq[ue] dolorum & oculorum inflammatio-
nem ablegabis, si emplastrum modo in cydonio cum pane & aqua
herbæ decoctum imposueris.

11 Et uentri nocuis. omnia uentris animalia prescribere
quidam testantur.

DE ABSINTHIO. Von Wermuth. 8. l.
fomen. Cap. 3.



De Absinthio
Galenus de
morb. curan-
dis lib. 7. &
11. item de
med. sanit.
lib. 6. & ad
Glaucanem
de arte. uo-
rat. lib. 1. in
cura tertian-
æ febris, &
simpl. med.
lib. 6. Auic.
lib. 2. cap. 2.
Mes. de sim.
med. Argem-
neta lib. 7.

Diosc. lib. 3. cap. 24. Serap. simplic. cap. 24. Plin. lib. 27. cap. 7.

A 4

In pri.

IN primo calor esse gradu, uis sicca secundo
 Dicitur Absinthii, stomachū corroborat herba
 Illius, quocunq; modo qui sumpserit illam:
 Sed melius i pluuiæ si sit decocta liquore,
 Et sic sub dio prius 2 infrigidata bibatur,
 Sic poterit uarijs eius succurrere morbis.
 Hocq; modo pellit lumbricos, mollit & aluum
 Eius 3 & immodicum sedat sic sumpta dolorem,
 Vrinam potu producit, menstrua soluit,
 Illi 4 si nardum, quam profert Gallia iungas,
 Et coniuncta teras, & mulla trita resoluas,
 Præcipue tali purgabis menstrua potu,
 Hoc quoq; præstabunt cū lana 5 subdita molli,
 Si 6 filer & nardus, & acetum iungitur illi
 Noxia deterges potu fastidia tali,
 Gramina 7 si rutæ iungas huic, salq; piperq;
 Cumq; inero tundens das hæc, decocta uē potu
 Noxius en cūctus stomachi purgabitur humor,
 Iri 8 coniuncta pectus mirē iuuat hausta
 Acri cum uino trita se quilibet ungens
 Non metuet culices, istoq; fugantur odore,
 Ictericis crudam dabis hanc apio 9 sociatam
 Curat hepar sibi iungatur si Gallica nardus,
 Splenq; sibi iuncto potata iuuabat aceto,
 Sic quoq; fungorū 10 depellit sumpta uenenum,
 Obstat lethiferæ 11 cum uino sumpta cicutæ,
 Sicq; uenenatis o- t morsibus hausta,
 Et claros oculos melle peruncta,
 Hocq; mode superaddita prodest,
 Decocta q;

Decoctæq; uapor obstrusas liberat aures,
Si manant sanie, cum melle terens, superadde,
Subuenit 13 anginae mellis, nitroq; iugata.
Vulneribus prodest contrita recentibus illa,
Si superaddatur capitis 14 sic ulcera curat,
Pruritusq; iuuat eius decoctio fotu.
Nausea 15 non poterit quenquã uexare marina,
Antea commixtam uino, qui sumpserit illam,
In lini panno si circumcincta geratur,
Inguinis & modicum fertur cohibere tumorem,
Olfactu somnum capiti uel subdita præstat,
Hanc sibi subponi, si non præsenferit æger,
Denigrat crines cinis eius, si bene mixtus
Cerato fuerit, & eo sic sæpè perunctus
A' tinea 16 tutam reddit, qua conditur, arcam,
Sub lingua 17 factum curat cum melle tumorem,
Liuoremq; nigrum, qui circa luminis orbem
Apparere solet, purgabit idem medicamen,
Auris depellit sonitum cum felle bouino,
Duriciam splenis eius cataplasma resoluit,
Coniuncto 18 sibi melle sterẽ si subditur herba
Deficcabit eam, manereq; menstrua cogit,
Ex 19 oleo fuerit uiridis si cocta iuuabit,
Nō modicè stomachũ qui sit hoc unguine fatus,
Incausto 20 uino quo sit macerata soluto
Si scribis chartam mus non teret amplius illam,
Plinius 21 attollit magnis hæc laudibus herbam,
Romanosq; refert sacris 22 ex more diebus
Dum quadrigarum cursu certare solebant,

A s

Absinthii

Abfinthi succum solitos donare bibendum,
 In capitolina uēctori sede locaro,
 Credemus precium prę cunctis reddere dignum
 Illi quo firmam posset seruare salutem,
 Quę constat mundi precio 23 preciosior omni.

S C H O L I A.

1 **S**ed melius pluuię] Auicennā sequitur Macer, qui
 1. primi doct. 2. cap. 16. cæteris aquis pluuialem maxime
 præfert, quod eius materiam à uirtute cæli, eam eleuante,
 subtiliari contingat: sed omnibus laudabiliorē scribit, quę pluuiā
 his æstiuo tempore collecta est, & ex fissā nube per tonitru inflam-
 mata & subtiliata cecidit. Galen. in libello de aquis, 5. cap. idem
 facit & Auerrois 2. tract. 1. partis capit. 6.

2 Prius infrigidata] Euenit quādoq; ut nubes propter ex-
 halationē terrestrem, quę uentorum est materia, inspissentur, &
 aquam effundāt turbidam, ubi tutior uia est, sicut Macer hīc mo-
 net, ut sub dio per stationem limpidiorem fieri curemus.

3 Eius & immodicum sedat] Damas decoctum abfin-
 thijs per pluuialem aquam, anodinum esse, hoc est mitigatiuū im-
 mensi cruciatus tenasmonis, magis tamen asserimus, si aliis ex eo
 sæpius fota seu irrigata fuerit.

4 Illi si nardum] Celticam spicam intelligit, quę diureti-
 ca est, cōplexioni participans spicæ Indicæ, de qua Galen. 8. sim-
 plicium, cap. 2. Dioscor. lib. 1. cap. 7. Serap. cap. 52.

5 Cum lana subdita molli] Si cum lana carminata ta-
 lis liquor, pessarij modo, locellis muliebribus imponatur.

6 Si siler & nardus] Siler montanum intelligit Masilien-
 se, nō Aethiopicum, quod falsò, ut solent, à seplasiarijs uenditur.

7 Gramina si ruta] Ea ex Plin. mutuata lego, q̄ graminis
 nullam

nullam mentionem facit. Vnde temporis iniuria uocabuli lapsum arbitror. Plin. lib. 27. cap. 7.

8 In coniuncta] facile thoracem purgat (sunt Plinij uerba) cum iride sumpium absinthium. de iride sequitur cap. 43.

9 Apio sociatam] uel adianto.

10 Sumpra fungorum uenenum] fungis uenenum inest, quod stomachū distendit, inguen turbat, urinā impedit, pectoris & anhelitus constrictionē inducit, syncopē ac mortem denūo, quibus omnibus medetur absinthium cum aceto prælibatū.

11 Lætiferae cicutæ] Cicuta algoris modum sic excedit, ut præsens uenenum sit. publica, inquit Plinius, Atheniensium poena, qua & Socrates uitam dedit.

12 Suggillatis] id est, percussis.

13 Subuenit anginæ] faucium morbis, aut tumoribus.

14 Capitis ulcera curat] ἀλωπίαιαν innuit.

15 Nausea non poterit] Nauseas maris arcet in navigationibus potum, inquit & Plinius.

16 A tineis tutam] Creditur, inquit Dioscorides, absinthium scrinijs, & armarijs inditū, tutas & incolumes à tineis seruare uestes, 3. lib.

17 Sub lingua tumorem] sub lingua tumorem intelligit, quem Rasēs 9. ad Alm. cap. 47. Ranulam uocat.

18 Coniuncto sibi melle steræ] uas per steram fœtū habite denotat, sicut in Scholijs primi capitis quoq; ostensum est.

19 Ex oleo fuerit uiridis] Dioscorides oleum ligustrianum commendat, uel rosaceum.

20 Incausto uino] quin etiam diluto absinthij Dioscorides inquit, dilutum librarium atramentum, incolumes à muribus librorum chartas tuetur.

Plinius

21 Plinius attollit] libro 27. cap. 7.

22 Sacris diebus] Latinarum ferijs.

23 Precio preciosior omni.] Pythagoras Samius satis diuitem ratus est sanum, ideoq; edicto statuit ut singulis epistolis amicis quandoq; mittendis ceu genuinum præfigeretur exordium, sanitatis optio. de qua re multa habentur in nostra tuendæ sanitatis ratione Dialogo primo,



DE VRTICA,
Von Nesseln. Cap. 4.

De Vrtica quæ à Græcis
ἀκανθὴν ἢ κνίδαν vocatur
Galen. li. 2. de alimen. cap.
52. & lib. 6. simp. ca. 13. &
ad Patern. cap. 283. Aui-
cen. can. 2. cap. 719. Diosc.
4. cap. 89, Plin. lib. 21. ca.
15. & 22. cap. 13.

Gracus Acalca-
phen. nos ur-
ticam uocamus,
Feruida nō modicè

uis illi dicitur esse,
Vnde nec immerito nomen sumpsisse uidetur,
Tacta i quod exurat digitos urtica tenentis.
Hæc solet ictericos & cum uino sumpta iuuare,
Illius semen & cholicis cum melle medetur,
Et tussim ueterem curat si sæpè bibatur,

Frigus

Frigus pulmonis pellit, uentrisq; tumorem
 Omnibus his prodest puluis cum melle iugatus,
 Aut succus uiridis cum uino sæpius haustus,
 Cum sale de folijs eius factum cataplasma 4
 Viceribus prodest, & uulnera sordida purgat,
 Et contra morsus ualer hoc cataplasma caninos,
 Hoc cæcos 5 & parotidas 6 luxataq; 7 curat.
 Hocq; reformatur caro quæ discessit ab osse,
 Et solet humores desiccare nocentes.
 Acricum uino radix contrita tumorem
 Compescit splenis, podagræ 8 sic subuenit illa,
 Omnibus & morbis sic subuenit articulorum,
 Omnib. his prodest superaddita, uel sibi iuncto.
 Si coquis hæc oleo, foueasq; hoc unguine mēbra,
 Naribus impositus succus, foliūm uē, cruorem
 Elicit, innata est illi uis tanta caloris.
 Quodd si manantem cupias retinere cruorem,
 Vrticæ succo frontem line, reprimat illum.
 Si supponatur cum mirrha menstrua pellit.
 Si claudit 9 uuluam matrix humore grauata,
 Vrticæ folijs reserabitur illa fricata,
 Cum uino bibitum Venerem semē mouet eius,
 Et melius tritæ si iungas melq; piperq;
 Et sic cum uino prædicto more bibatur
 Pleureticos 10 pectus, pulmones, adiuuat eius
 Semen, si sumptum fuerit cum melle iugatum.
 Cum mulsâ bibitum, lotiū producit abundans,
 Herba recens eius olerum si more coquatur,
 Detur & illius decoctio, molliet aluum.

Ore

Ore diu clausus succus si uoluitur eius,
 Vux 11, non modicum poterit sedare tumorem;
 Sudorem mouet ex oleo decocta perunctis,
 Si quadrupes quæcunq; marē præferre recusat,
 Vrticæ folijs illius uulua fricetur.
 Sic naturalem calor excitat illi calorem.
 Defluuium capitis, si succo seminis huius
 Vngas sæpè caput reprimat doctore Galeno.
 Illius semen collectum tempore messis
 Et desiccatum, multis erit utile causis,
 Omnibus his prodest puluis cum melle iugatus.

S C H O L I A.

1 **T**Acta quod exurat] ob igneum pruritus urtica
 nomen sortita est.

2 Hæc solet ictericos] Icterus morbus est, at-
 quatus alijs dictus, aut regius morbus, ex obstructo hepate plerun-
 que eueniens, & ab interpretum nomen habens, auicula quippe quam
 miluium interpretantur, & Plinius Galbulam uocat. de hoc mor-
 bo Auic. 15. Fen. tertij can. uulgò gelsucht.

3 Colicis medetur] κολικοι uocantur, qui colica labo-
 rant. hoc est morbo cuius minera est in intestinis inferioribus aut
 crassioribus, cum nausea, ex retentione illius, quod naturaliter e-
 gredi deberet, sicut flatus esse possunt, feces, humores, aut uera-
 mes quandoq;.

4 Cataplasma] emplastrum ex herbis & oleis.

5 Hoc caneros] Cancer idem est, quod καρκίνωμα, mor-
 bus à similitudine cancri: atrobilarius, cum duritia & quadā in-
 flammatione.

6 Et parotidas] παρωτίδας iuxta aures abscessus uocamus,
 qui

qui subinde post chronicas febres ui morbi impetuosè emergunt.

7 Luxata [cp] hoc est, membra à suis locis mota.

8 Pod-grę subuenit] Podagram non esse morbū incurabilem in lib. nostro succisuarū lectionum ostendimus Dialogo 5.

9 Si claudic uuluam] per uuluam interius matricis orificium intelligit.

10 Pleureticos] Pleuriis abscessus: sūt lateris, in pellicula obducente costas.

11 Vuæ tumorem] hoc est, casum uuulæ, das zepflin.

DE ALLIO. Von
Knoblauch. Cap. 5.



De Allio
quod à Græcis
ονόποδος
dicitur, uide
Galen. lib. de
morb. curan.
14. Hippoc.
de uict. ratio.
morb. acut. li.
2. & li. 4. et li.
de morb. quæ
extra conting.
Aegin. lib. 7.
ca. de scordio
& allio, & lib.
1. cap. 76. Cæ
lius Aurelia.

2. chrononrôn cap. 14. C. Plin. 2. lib. 4. de re medica, Serapius lib.
aggregat. cap. 331.

ονόποδος

Σ *Kópodon* à Græcis sunt allia dicta Latina,
 Huius uim medici calidā, siccamq; periti,
 In quarto posuere gradu mansum, uel in
 unctum,

Curat, quos serpens, uel scorpius intulit ictus.
 Et nocui uermes triti pelluntur odore.
 Sanat & appositū morsus cum melle caninos,
 Et mulla coctum commixtum cui sic acetum
 Et bibitum uentris uermes, tineaſq; repellit.
 Ex oleo cum ueste sua si decoquis illud,
 Morsus pestiferos reddes hoc linguine sanos,
 Corpus & attritum cura sanabis eadem,
 Vnguine uesicę dolor, & tumor hoc reprimuntur.
 Ipse refert Hippocras 3 educi posse 4 secundas,
 Fumo combusti si uulua diu foueatur,
 Pulmonis uarias coctum cum lacte querelas,
 Potatumq; iuuat, uel crudum sæpè comestum.
 Cum centaurea 5 Diocles dare præcipit illud
 Hydropicis 6 sic humores desiccat aquosos,
 Idem Nephreticis 7 elixum sumere iussit,
 Pythagoras illo fuit usus cum coriandro
 Et uiuo, causas sic curans ictericorum,
 Et sic potatum dicit quod molliat aluum.
 Cumq; faba coctum capitis sedare dolorem
 Dicitur, attrito si tempora perlicis illo,
 Anferis hinc adipem iunge, repidumq; dolenti
 Infundas auri, præclare subuenit illi,
 Elixum tulsim iuuat & suspiria sedat,
 Clarificat raucam crudum, coctum quoq; uocē:

Sed

Sed magis elixum iuuat illam sæpè comestum.
 Adiuuat incoctū pulti, sumptumq; s tenesmon
 Porcino iungens adipi si conteris ipsum,
 Nō modicos reprimes superaddēs sæpè tumores
 Hunc ignoratum non lædet potus aquarum,
 Hæc diuersorum mutatio facta locorum,
 Alia qui mane ieiuno sumpserit ore.

S C H O L I A.

Morsus caninos] morsus rabiosi canis.
 2 Tineasq; repellit] id est, lumbricos.
 3 Ipse refert Hippocras] lib. de fameinea natura.

4 Posse secundas] hoc est, embrionis armarium, quod secundinam uocant, & Galenus chorac commento 49 in aliquem, aphorif. 5. libri appellat.

5 Cum Centaurea] De Centaurea sequitur cap. 53.

6 Hydropicis] qui morbo laborant intercutaneo.

7 Nephreticis] νεφριτις renum affectus est, aliquando ex innato lapide, aliquando ex apostemate, aut ulcere, non dissimilis cholico.

8 Sumptumq; tenesmon] τενεσμος uulgò tenesmus, uoluntas est egerendi citra effectum.

B

De plantag.



DE PLANTAGL

ne. Spitzigermegrich.

Schaffzungen.

Cap. 6.

DE ἀρνολάβο Gal.
libro de morbis cu-
radis 5. & li. Simp.

ca. 56. Diosc. lib. 2. ca. 115.

Plin. lib. 25. ca. 8. Serap. lib.

agg. cap. 213. L. Apuleius

li. de Herbar. uirtut. cap. 1.

Herbarum quæ
nostra lingua
Plantago uo-

catur,

Hanc ἀρνολάβον Græcus uocat, est quia linguæ
Agninæ & similis folijs. Plantaginis huius
Sunt geminæ species, & maior prima uocatur:
Altera uerò minor, quam uulgo lanceo latam
Dicunt, quòd folijs 2 ut lancea surgat acutis.
His inflammandi, desiccandiq; uocatur
Tertius esse gradus: maiorem uim tamen esse
Maior dicunt, nimis humida uulnera siccat.
Si superaddatur cum melle, & sordida purgat
Cum sale, sicut olus si iuncta coquatur aceto.
Ventrem restringit nimium, si mansa fluentem,
Si supradictis lens concocta, iuuabit
Sic dysentericos, melius cibatur, & ciliacos: 4
Stringit manantem superaddita sæpè cruorem,
Et

Ernigris maculis fertur reparare colorem,
 Et scrophas; spargit superaddita cum sale trīa:
 Hydropicis ut olus decocta, comestaq; prodest,
 Sic iuuat asthmaticos, fertur iuuare 6 caducos.
 Sordida purgabit bene uulnera 7 quælibet oris,
 Ore diu tentus si succus uoluitur eius,
 Hīc intus fusus curat syringia 8 succus,
 Et dolor hoc auris sedabitur, & sacer 9 ignis
 Fert hæmophthoicis 10 hīc opem si sæpe bibatur
 Per se fortior est, si sit coniunctus aceto.
 Sicq; iuuat 11 phthisicos, infectus uerò per anum,
 Stringit nō modicum fluxum dysentericorum,
 Pellitur ex oculis tumor hoc, feruorq; perunctis,
 Sæpius hanc ipsam si dentibus atteris herbam.
 Gingiuas 12 reprimet tumidas, & sanguine plē,
 Sicq; solet dentis cōpescere sæpè dolorem, (nas,
 Succus dum lana matrici subditus eius
 Stringit manantem nimīū siccando 13 cruorem,
 Cunctis prædictis eius decoctio causis,
 Prodest, & potus cum uīno seminis huius
 Vesicæ, renumq; iuuat potando dolorem.
 Dicunt non nasci scrophas gestantibus eius
 Radicem collo suspensam, uis ibi tanta est.
 Radices eius tres attere, iungito tritis
 Vini tres cyathos, & aquæ hac sit modus idem,
 Hæc nondum tremulo potanda dabis febrienti:
 Sic pelles febrem, cui dat lux 14 tertia nomen,
 Bis binæ quoq; quartanis prodesse putantur,
 Cum totidem uini cyathis si dentur & amnis.

B 2 Cuncta

Cuncta potest plantago minor prædicta iuuare,
 Quamuis non tantas vires uideatur habere,
 Præcipue succus curat plantaginis huius,
 Quod iuxta nares, uel lumina nascitur ulcus:
 Si superaddatur cum lanis mollibus illi,
 Perque nouem cataplasma dies istud renouetur,
 Eius si succo tepido uenter foueatur,
 Acri depulso sanabitur ille dolore.
 Lumbricos succus depellere dicitur eius,
 Si porcina uetus axungia iungitur illi,
 Sedabit duos istud cataplasma tumores,
 Parotidas, uulnusque recens hoc adiuuat unguem
 Ante duas horas quartanæ quæ tremor is ægrum
 Vexet, si succum biberit plantaginis huius,
 Sentiet eximia facili medicamine curam.
 Eius 16 potatum depellit sperma secundas,
 Si uia longa pedum mouet (ut fit sæpe) dolorem
 Acri cum uino superaddita trita iuuabit.
 Cum passo succus bibitur si sæpius eius,
 Vesicæ uariis fertur succurrere morbis.
 In desiccando uis est plantaginis ingens,
 Maioris queat ut (ueluti 17 cauteria) corpus
 Appositum siccare, refert, ut Plinius autor,
 Composuit librū Themison 18 de uiribus eius,
 In quo præclaris celebrauit laudibus illum.

S C H O L I A.

1 **L** Inguæ agnæ similis] ἄρνα agnū sonat, γλῶσσορ
 lingua: sed multi nō arnoglossam, uerū q̄a septē crassio-
 rib. fibris, quasi costis in dorso, per longitudinē distincta
 est.

est, pentapleuram dicunt, quod $\pi\lambda\upsilon\rho\alpha$ costā sonet. Dioscorides, quod non semper fibrarum respōdeat numerus (variant enim fibræ pro latitudine folij) polyneuron uocat, quasi multi neruia: alij pentapleuron, quod est quinque neruiam.

2 Qui folijs surgat acutis] Plantago maior à foliorum latitudine, Germanis braité Weegerich. Minor, quia foliū eius acutiū in acumen, ueluti in lanceæ mucronem fastigiatum desinit, Spitzenweegerich rectissime dicitur

3 Hic dysentericos] id est, eos quos intestinorum disturbant cum ulceratione tormina.

4 Ciliacos] κοιλιακοί uocantur, qui aluum induratum habent, quæ nihil reddit, ac ne spiritum quidem transmittit.

5 Et scrophas spargit] id est, dissoluit. Scropharū Auicenna meminit secunda primi, doct. 1. cap. 5. & sunt abscessus à phlegmate, ut plurimum in collo aut sub ascellis emergentes.

6 Iuuare caducos] id est, morbo affectos, quæ hieranoson, quod est, sacrum nominant, dum sacram corporis partem, cerebrum quippe possideat, in quo animæ sedes recondita. Herculeū multi dicunt, ab Hercule, quem fortitudine uincat, aut comitalē, à comitijs, die fallent sucht.

7 Vulnera quelibet oris] pustulas intelligit oris candidas, quas Rasēs qui 9 ad Alm. alcolas uocat.

8 Syringia succus] hic succus fistulas curat, quæ ulcera sunt profunda à similitudine instrumenti dicta, à Græcis σὺριγγις nominata.

9 Et sacer ignis] der brand, quem sacram uocant, quod præstantissimū quemque inuadat, ac saltem cum morte relinquat: alij Persicum ignem dicunt.

10 Fertur nemophthoicis.] cruorē exspuentib. de quib.

B

3

Atheno

Auicenna decima Fen. tertij tract. tertio, cap. 1.

11 Sicq; iuuat phthilicos] Phthisis expulio puris est cū
tussi uehementi.

12 Gingiuas reprimet] Gingiuas, id est, carnes, quæ den-
tes ambiunt: & Pollux ἐλα & ὀρθα nominat.

13 Nimum siccando cruorem] menses exundantes ni-
mum inhibet, Galeno referente 5. de morb. curand.

14 Cui dat lux tertia nomen] περιόλην, quæ de ter-
tio in tertium affligit, innuit. Hanc tertianam uocant.

15 Quā tremor & grū] ante accessionem seu paroxysmum.

16 Eius potatum sperma] id est, liquor uel succus ex eo.

17 Veluti cauteria] est cauterium instrumentum, quo mor-
bos subinde curamus, aliās uix curabiles: est autem actuale & po-
tentiale. De quibus multa Albucases 1. lib. cap. 1.

18 Themison de uiribus eius] Themisonē Plin. fuisse
medicū scribit 25. li. ca. 8.



DE RUTA. Von
Rauten. Cap. 7.

DE ruta Græcis Πύρα-
νον dicta. Gal. Simplic. li.
7. cap. 119. & lib. 8. cap.
48. Aeginet. lib. 7. Auic.
2. canon. capite de Ruta,
Dioscor. libro 3. cap. 47.
Theophrast. de plantis, li-
bro. 5. Plinius libro 19.
capite 8. & cap. 7. & 10.
& lib. 20. cap. 13.

A' medi-

A Medicis Rutę uis feruida dicitur esse,
 Siccaq; fertur in his gradus illi tertius esse:
 Vtilis est ualde stomacho si sæpè bibatur,
 Expellit 1 partus bibita, Veneremq; coërcet.
 Tussim si bibitur, compescit, menstrua 2 purgat.
 Si coquis hanc in aqua, cui nimium iunxeris acre,
 Compescit talis decoctio tormina 3 uentris,
 Pulmones iuuat, & pectus, morboq; medetur
 Costarū, quem pleuresim 4 uocat Attica lingua:
 Artheticos 5 schiasimq; iuuat, febribusq; medetur
 Hausta, uel ex oleo, uiridem si coxeris illam, (tur
 Et foueas tepido patientes ante tremorem.
 Matricis prodest, intestiniq; tumori
 Hoc unguen, uel clysterio 6 si funditur intus,
 Haustaq; cum uino prodesse ualebit utrumq;
 Lumbricos oleo decocta, & pota repellit,
 Cum caricis 7 decocta diu, uiniq; liquore
 Profunt hydropicis 8 si sunt superaddita nocte,
 Cruda comesta recens oculos caligine purgat,
 Et melius marathri 9 cum succo, felleq; 10 galli
 Melleq; si succus ex æquo iungitur eius,
 Inde q; sint oculi patientis sæpè peruncti,
 Cum oleo miscens roseo, nec non & aceto,
 Illius succum, capitis curare dolorem
 (Quāuis immodicū) poteris hoc sæpè perungēs,
 Naribus expressus si succus funditur eius,
 Sistit manantem bene desiccando cruorem,
 In corico mali granati si tepefactum
 Auribus infundas depelles inde dolorem,

B 4

Cerussæ

Cerussæ u roseoq; oleo miscens, & aceto
Illius succum, mirandum conficis unguem
Ad depellendum sacrum, quem dicimus ignem,
Ad scabiem dertę, quæ dicitur herpeta 12 Græcè,
Et Græcè dictas achoras 13 hoc unguine purgas,
Vlcera sunt capitis humore fluentia 14 pingui,
Curat & ozœnas 15 immissum naribus, hæc sunt
Quę grauius fœtent in naribus ulcera nata.
Obstat pota mero, uel cruda comesta, uenenis
Hoc Mithridates rex Ponti sæpè probauit,
Qui rutę folijs uiginti, cum sale pauco
Et magnis nucibus binis, caricisq; duabus,
Ieiunis uesci, consurgens mane solebat,
Armatusq; cibo tali quascunq; ueneno
Quilibet insidias sibi tenderet, haud metuebat.
Mustelęq; docent obsistere posse uenenis,
Mirificę rutam comedunt, quę primitus illam
Cum pugnaturę sunt cum serpentibus atris.
Cum butyro, modicoq; oleo decocta tumorem
Matricis subiecta tepens fugat illa, coliq; 16
Et cunctis intus morbis sic subdita prodest,
Hac etiam testes poteris curare tumentes
Cum folijs lauri, bene tritam si superaddes.
Ex hac antidotum non paucis utile causis
Conficitur, medici dicunt diapeganon illud,
Peganon 17 in Græca lingua, quod ruta uocatur,
Illius antidoti confectio talis habetur:
Pondere iunge pari nitrū 18 piper, atq; ciminū,
De tribus his quantum, de rutaposito tantum,
Sed

Sed prius ex acri uino macerare ciminum
 Conuenit, in ferro post assari calefacto,
 Omnia deinde simul bene trita ex melle iugabis
 Pectoris & lateris, iecoris, renumq; dolores.
 Hoc ex antidoto curantur sæpè comesto
 Extenuat bilem, mollit sine tormine uentrem,
 Confortat stomachū, facit ut bene digerat escam.

SCHOLIA.

- 1 **E**Xpellit partus bibita.] genituram expellit in cibo, potuq; ruta Dioscor. inquit.
- 2 Menstrua purgat.] cit menses.
- 3 Tormina uentris.] maximè si rutæ concoctum fuerit sic cum anethum.
- 4 Pleuresim Attica lingua.] sic Græci: nos morbum costalem dicimus.
- 5 Artheticos, schiasimq; iuuat.] artheticam, Græci ἀρθρίτιν, quod est, morbum articulare uocant, & est arthetica genus ad omnes morbos neruorū, ut σπασμὸς est χερῶν, ποδῶν, & ἰσχίᾱς. genus hoc Schiasim Macer nominat.
- 6 Vel clysterio.] id est, lauamento, quod κλύσῃριον Græci nominant.
- 7 Cum caricis.] carica, ficuum genus est.
- 8 Profunt hydropicis.] anasarcha laborantibus, inquit Dioscorides, uel intercutaneo morbo.
- 9 Marathri cum succo.] cum succo fœniculi.
- 10 Felleq; galli.] Fellis seruādi ad colyria, rationem pulchrè Dioscorides enarrat li. 2. cap. 75. ubi Marcel. Vergilius uolucrū fel, in siccando potentius esse, quàm uel omnium quadrupedū scribit, maximè galli, perdicis, & accipitris.

B s

Cerussa

11 Cerussæ, roseoq[ue] oleo] Modum ostēdere quomodo cerussa fiat longum est. Vnde satis duximus descriptionem indicasse 5. lib. Dioscorides capite 57. qui eandem uenenum esse testatur lib. 6. cap. 22.

12 Herpeta Græcè] ἑρπῆς ἰατρίῳ μὲν ues ulcus est, à serpendo & corrodendo, etiam ad ossa dictum.

13 Achoras] ἄχωρ, capitis ulcus est, squamas furfurum instar habens.

14 Humor fluentia ping.] capitis apostema innuit, quod fauum dicunt, à similitudine faui mellis.

15 Curat & Ozenas] Circa nares quādoq[ue] ulcera emergūt, Græcis ozena dicta, quæ Macer etiam prædicto unguine curanda monet, sed Cor. Celsus alias adscribit curas sexto libro 21. ca. 8.

16 Coli'q[ue]] ultimi intestini.

17 Peganon in Græca] πῆγανον Græci rutam dicunt.

18 Nitrum atq[ue] ciminum] Nitrum mineræ genus est, salpeter, cuius Dioscorides meminit quinto lib. cap. 48. Ciminum autem semen est diureticum, Rômsch kîmich, cuius Galenus usum describit 7. Simp. cap. 59.

19 Extenuat bilem] choleram rubeam.

DE APIO.



DE APIO.

Von Epffich oder
der Eppich.

Cap. 8.

Σελινον Gal. des
scribit lib. 7. Sim.

ca. 37. & ca. 76.

& lib. 8. cap. 96.

Diosc. lib. 3. capi

tib. 67. 68. 69.

70. 71. Plin. Na

tur histor. li. 20.

cap. 20. & li. de Re medica 4. cap. 2. L. Apuleius lib. de herb. ca.
9. Cassius Felix cap. de Macedonico. Aegineta li. 7. cap. Selimon.

E Stapium dictū quod apex hāc ferre solebat
Victoris, ueterū fieret dū more 1 triumpho,
Ipse sibi talem prior imposuisse coronam
Dicitur Alcides 2 morem tenuēre sequentes.
Ast alij dictum credunt, quod apes uehementer
Illius soleant aurē decerpere flores.
Hanc herbam 3 σελινον solet Attica dicere lingua
Virtutis calidæ, siccae quoq; dicitur esse.
Tertius à medicis dat⁹ est gradus huic in utroq;
Illius succo si candida 4 mica terendo
Panis iungatur, oculi sedare tumorem
Dicitur, emplastri noctu superaddita more,
Sicq; ferunt mammis prodesse tumentibus illa,
Sedat feruorem stomachi, pellitq; tumorem,

Et

Et quicquid uenti creat, includiturq; nociui
 Deliccans potis assumpta repellit apertis,
 Prouocat urinas hæc cruda comesta, uel hausta,
 Sed mage radicum facit hoc decoctio sumpta.
 Hoc itidem semen operatur fortius haustum
 Tota uenenatis occurrit moribus herba,
 Sed semen potius uel apoz. mas proderit eius,
 Et bibitur tussimq; modo sedabit eodem,
 Ventrem constringit, uomitum potata coërcet,
 Lymphæ commixtum quoq; si iungatur acetū,
 Aegris amissum fertur reparare colorem,
 Cruda à ieiunis fuerit si sæpè comesta
 Vna quaq; die uexantem corpore febrem,
 Cum lymphâ porata fugat febris ante tremorē,
 Hydropicos, & splen tumidū iuuat illa, iecurq;
 Si cum fœniculi succo contrita bibatur,
 Hæcq; superposita turpis lentigo 6 fugatur,
 Illius succus farris cum polline mixtus
 Atq; oui lachryma 7 uulnus benè purgat, & ulc,
 Si superaddatur emplastri more frequenter.

SCHOLIA.

- 1 **V** Eterum more triumphus.] Coronandi morem
 per apium, nactō triumpho, Plutarchus 4. Symposia.
 cōn tāgit, & Angel. Polit. 12. li. epist. ad Merulā decima.
- 2 Dicitur Alcides. Hercules, qui sic ab auo suo, patre
 Amphitryonis nominatus est.
- 3 Hanc herbam Σελινόρυ.] quasi paludibus impulsam, pa-
 ludosis enim gaudet, & in ijs enatum lætius exurgit.
- 4 Candida mica panis] panis hordeacei.

, Apozima

5 Apozima proderit] Apozima decoctio est diuersorū medicaminum.

6 Turpis lentigo] deformis, uulgò riselen, Græcè φακός.

7 Ouilachryma] albumen intelligit.



DE MALVA.

Von Pappel.

Cap. 9.

Μαλαχὴ Græcè Latī
nè malua, per Galenū
describitur li. 7. Sim.
cap. 91. Auicenna ca
no. 2. ca. Alihea. Dio
scor. lib. 2. cap. 10. Se
rap. agg. cap. 76. Ori
bas. de cōfect. ciborū
lib. 3. cap. de istis quæ
humeēt. Pli. secundus
de re medic. li. 1. cap.
5. in Nat. hist. lib. 20.
cap. 21.

Alteam maluæ speciem nullus negat esse,
Alteamq; uocant illā quod crescat in altū,
Hanc ipsā dicunt Euisū, quod quasi uisco
Illius radix contracta madere uidetur,
Agrestisq; 2 soler à multis Malua uocari,
In muisa coctus flos eius uulnera purgat,

Vel

Vel si cum uino tritum florem superaddas,
 Spargere sic scrophas; anumq; iuuare dolentem
 Dicitur, hocq; modo conquassatis medicatur,
 Elixata prius radix adipisq; terendo
 Addito porcino, therebintinaq; 4 tumores
 Matricis curat, reliquosq; leuare dolores
 Dicitur, illius neruos sic ipsa relaxat:
 Rumpit, uel spargit sic apostemata dura,
 Omnes has causas elixatura iuuabit,
 Si loca morborum foueantur sæpe repenti,
 A' dysentericis radicum coctio sumpta
 Cum uino, fluxum stringens compescit eorum,
 Et pellit tardas; hæc coctio sumpta secundas,
 Et prodest hæmorrhoidicis 6 lapidesq; repellit,
 Vesicæq; solet uarijs succurrere caulis.
 Acri cum uino contritum semen oliuæ
 Iungito, deformes maculas hoc unguine pelles,
 Cum pusca 7 potara potest obstare uenenis,
 Elixata prius, cum melleq; trita, replebit
 Vulnera 8 quæ caua sunt, si sit superaddita sæpè:
 Sic quoq; duricias mollit, lenitq; rigores,
 Decoctis oleo folijs factum cataplasma,
 Quosuis pestiferos morsus, combustaq; curat.

S C H O L I A.

M Adere uidetur] Theophrastus maluã humore mul-
 to abundare scribit, ideoq; procline solẽ, ac si rationis
 compos, insequi testatur, qui ui & calore suo, id quod
 de humido superest, exugat, ut latius uirescat. Existimans aut or
 inde

inde naturam homini bene consuluisse, quæ per oleris folium temporis mensuram, & horarum quodammodo ostenderit rationem etiam nubilo cælo, dum sic colligimus meridianas, & alias etiam utrinque horas. Maluæ flores cum sole circumagi, Columella carmine suo quoque ostendit, dicens:

Et Moloche prono sequitur quæ uertice solē.

Ibi antiquo more non Malacham, sed Molochen pro malua dixit Columella. Athenienses primi Malachan maluam nominarunt.

2 Agrestis solet malua] Hic Macer agrestis describit malua uirtutes, quæ sua sponte in locis nascitur incultis: & quasi molua, ut Varro inquit, dicitur quod uentrē molliat. μαλαχῆν enim mollire est Græcorum idiomate. Quod uentrem molliat Martialis libro 10. hoc disticho declarat:

Exoneraturas uentrem mihi uillica
maluas

Attulit, & uarias quas habet hortus
opes.

Altera malua quam hortensem nominant, & in arborem ferme grandescit baculi instar, hoc loci Macer non tangit. uulgo Ein rosen, quod tempore messis floreat.

3 Spargere scrophas] dissoluere. De scrophis dictum est.

4 Therebintinæque] Therebintū resina ex arbore eiusdem nominis est, ex Arabia Petræa, Syria, Cypro, Aphrica, aut ex Cycladibus ad nos portatilis, bonitate alias omnes uincens resinas: bonitate tamen excedit, quæ lucida & candida, Diosc. lib. 1. cap.

78. Galen. ad Paternianum cap. 147.

5 Tardas secundas] non statim partum sequentes.

6 Hæmophthoicis] De his dictum est.

7 Cum

7 Cum pusca] Pusca per decoctionem fit ex duabus parti-
bus aquæ, & tribus uini, Galen. in lib. Dinamid. quidam loco uini
acetum habent, & Oxycraton uocant.

8 Vulnera quæ caua] ἰσχαρὰς intelligit, hoc est, ulcera
cauernaosa & crustis intecta.



DE ANETHO.
Von dyllen oder hoch-
traut. Cap. 10.

Ἄνιθον describit Gal.
li. 6. Sim. cap. 43. & lib.
ad Paternianū ca. 4. Dio-
scor. lib. 3. cap. 60. Plin.
li. 19. cap. 8. & li. 20. ca.
18. Aegin. li. 7. Itē Plin.
de re med. lib. 4. cap. 27.
& L. Apuleius de herb.
histor. cap. 122.

A Medicis ca-
lidum, sic-
cūq; refer-
tur anethum.

Et dicūt quod sit gradus huic in utroq; secundus.
Lac dat abundanter eius decoctio sumpta
Nutrici, stomachi q; solet depellere morbos:
Tres cyathos eius tepidæ si sumpserit æger,
Indicio ructus sit, qui demonstrat apertum
Os stomachi: uentum q; per hoc exisse nociuū,
Atq; grauis tali sedatur nausea potu.
Prouocat urinas, obstantia quæq; repellens.

Matri

Matricem iuuat, bene si foueatur eodem.
 Cum tepido tritum patiens si potet aceto,
 Intestinorum curat, uentrisq; dolorem.
 Hoc etiam poru digestio tarda iuuatur,
 Vnde minor fieri uis egestiua uidetur.
 Assidue bibitum uisum nocet, & genitale
 Clauditer, siccans humorem 3 seminis intus,
 Vuae 4 si nimio turgens humore grauetur
 Suspendit puluis combusti seminis eius,
 Appositus digitis, aut intus clystere fusus:
 Acrior esse cinis radicum dicitur eius,
 Rodit crescentes cinis hic in uulnere carnes.
 Vulnere 5 quæ serpunt, & sordida uulnera curat,
 Vlceræ præcipue membri curare uirilis
 Dicitur iste cinis infusus sæpius illis,
 Olfactu reprimat singultum semen anethi,
 Assatum & feruens si sæpius olfacit æger.
 Dicunt feruores oculorum tollere posse
 Eius radices tritas prius, appositasq;
 Apponas hæmorrhoidis 6 si semen anethi
 Vitum, curat eas, & condylomata 7 soluit,
 Flos oleo si decoquitur medicabile reddit.
 Illud præcipue natis de frigore causis
 Prodest, & capitis compescit sæpe dolorem.
 Neruorum laxat 8 tensuras, frigora pellit.

SCHOLIA.

O Stomachi id est, uentriculi ostiolum, quod Gale-
 nus etiam cor stomachi uocat, conuene, in tertio Præ-
 dictionum, Hipp. cap. 3.

C 3 Ventum

- 2 Ventum exisse nocium] id est, eructationē acetosam, quam ἐξυγρυμία uocant, à causa frigida ortam.
- 3 Humorem seminis intrus] Venerem impedit.
- 4 Vualp] de uua dictum est, quæ τὰ φυνά dicitur.
- 5 Vlcera quæ serpunt] γόγγυρα, quæ species cancri est, intelligit, aut ulcera phagedena, cum inflammatione ossa depascentia.
- 6 Apponas hæmorrhoidis] id est, fluxui sanguinis ex capitibus uenarum, quæ sunt in ambitu podicis, de quibus Galen. abbreviat. lib. 6. cap. 79.
- 7 Condylomata soluit] hoc est, tumores, ac nodos in fissili, id est, in extremitate podicis emergentes. de quibus multa Aegineta lib. 6. cap. 80.
- 8 Neruorum laxat tens.] neruos emollit indignatos.



DE BETONICA.

Von braun Betonick.

Cap. II.

DE βήτινα Galen. lib. 8. Simp. cap. 20. & ad Paternanū cap. 285. Diosc. lib. 4. cap. 1. Serap. lib. Agg. cap. 322. Plin. li. 25. cap. 7. & li. 26. cap. 7.

Betonica soliti sunt Cestron dicere Græci, Vrinæ potata ciet, lapidesq; repellit, Fert

Fert hæmorrhhoicis 3 cū pusca sumpta iuuamen
Hydropicosq; iuuat cum uino, melleq; sumpta.
De folijs eius tritis factum cataplasma,
Non modicum prodest oculis, quos læserit ictus:
Illius succus roseo commixtus oliuo
Auribus infusus, uarios fugat inde dolores.
Betonice puluis cocto cum melle iugatus
Hemphecos 4, tulsimq; iuuat, suspiria 5 sedat:
Et stomachi uarios sumptus iuuat ille dolores,
Si febrit ex 6 calida, cum uino si febris adsit.
Cum mulsa bibitus idem puluis, mouet aluum.
Cum sale contritis folijs cataplasmate facto
Vulnera curabis, fuerint quæ facta recenter,
Trita q; fracturæ capitis hæc sola medetur.
De folijs eius elixis fit cataplasma,
Vtile non modicum uarijs uicijis oculorum,
Restringit lachrymas oculorū mansa, uel hausta:
Hac etiam caligo solet metuenda repelli,
Aequo si rutæ fuerit cum pondere iuncta,
Et sic cum lymphâ sumatur trita tepenti,
Sic oculis nocuus sanguis per subteriora
Dicitur expelli, sic lumina libera reddit:
Sumpta hac cum tepida purgatur uomica 7 dira,
Pectoris & morbi potu curantur eodem.
Splen iuuat illius decoctio sumpta, iecur q;
Vncia Betonice socianda quaterna uetusti
Vini cum cyathis tribus, at his addito grana
Viginti septem piperis simul hæc bene trita
Hausta q; purgabunt renes, pellentq; dolores.

C 2

Vncia

Vncia cum cyathis calidæ potata duobus
 Dicitur immodicum uentris sedare dolorem,
 Hæc tussim cū melle fugat, uentrē quoq; mollit.
 Vna quaq; die 8 febre si uexabitur æger,
 Vncia iungatur plantaginis una, duabus
 Betonica, sic cum repida contrita bibatur
 Antea quā febris prænuncia frigora fiant.
 Vncia Betonicæ calidæ cyato resoluta
 Prodest hydropicis, si sit potata frequenter.
 Radicum puluis cum mulla tritus & haustus,
 Humores uelut helleborū 9 uomitu citò purgat.
 Bis binas drachmas præcepit Plinius 10 harum
 Radicum dare cum passo, mulsouē bibendas.
 Præcipuē phlegma uomitu purgabitur isto,
 Cum mulla bibitus prodest puluis foliorum
 Ruptis 11, atq; steris potus leuat ista cadentes 12.
 Cum uino sumptus obstat potata uenenis,
 Præcipuē semen: quod si desit, datur herba
 Vncia Betonicæ cum uino sumpta repenti.
 Ictericos curat, cum mulla menstrua purgat,
 Pondere uerò fabæ 13 puluis cum melle uoratus
 Post cœnā, stomachū iuuat ut benè digerat escā.
 Si de Betonica uiridi sit facta corona
 n. lib. 25. Circa serpentes (ut Plinius asserit autor)
 s. Audebunt nuncq; positam transire coronam,
 Sed morsu proprio pereunt, & uerbere caudæ.
 Omnibus antidotis Meniacus eam sociari
 Præcipit, ut stomacho magis herbā omnibus aptā
 Plinius hanc, inquit, qui secum gesserit herbam,
 A' nullo

A' nullo poterit nocuo medicamine lædi:
Et dicunt quod ea cum uino sæpius hausta,
Plumbeus abscedat color, & melior reuocetur.

Plin. lib.
cap. 11.

SCHOLIA.

- 1 **B** Etonicam soliti] *Vetonicam* quidam scribendū censent, & ab inuentoribus sic nominatam. *Vetones* enim Hispani hanc inuenisse traduntur, 25. Plin. cap. 8.
- 2 Cestron dicere Grai] *Cestron* à uarietate, & copia remedium Græci hanc herbam nominant, qui etiam alia multa hac appellatione proferunt. Telum quippe, quod primo in Persico bello inuentum fuit, opus interpunctum, item acutæ pictum.
- 3 Ferthæmophthoicis] de istis & pusca dictum est.
- 4 Hemphecos iuuat] id est, pulmonarios, qui purulentas excreatione eijciunt.
- 5 Suspiria sedat] hoc est, difficultatem anhelitus.
- 6 Ex calida] id est, aqua.
- 7 Vomica dira] *Vomica* tumor est ex pure collecto.
- 8 Vnaquæq; die febre] id est, si ex pituita laborat quotidiana.
- 9 Velut helleborum] album intelligit, niesß wurtz.
- 10 Præcepit Plinius] lib. 26. cap. 11.
- 11 Ruptis] id est, herniosis.
- 12 Steras cadentes] ὕστερον quid sit, in capite recensuimus primo de Artemisia.
- 13 Pondere fabæ] Hæc ex Plinio habet.



DE Βαρβυ. siue Βαρύθρo Galen.lib. Simp. 6. cap. Savina,
 Auic. canon. 2. cap. Abel. Serap. agg. cap. Abhel. Galen.
 ad Patern. cap. 13 2. Dioscor. lib. 1. cap. 86. Plin. in his-
 tor. mundi lib. 24. cap. 1. & 11. & lib. 17. cap. 13. & lib. de Vis-
 rib. herb. cap. 88. Aegineta lib. 7.

BRatheos est Græcè, Sabina uocata Latinè,
 Sicca calens eius uis est, & tertius illi
 Est in utroq; gradu, uulnus cū melle, uel ulc-
 Fortiter exsiccat, sordes quoq; purgat eorum:
 Sic iuuat anthracas 1, bona quæ plebs ulcera dicit:
 Menstrua deducit, corruptos extrahit aluo
 Conceptus, si cum uino sit sumpta frequenter.
 Vel si trita prius matricis subditur ori,
 Cerotis admixta cutem facit esse nitentem.

Omni

Omnibus & morbis prodest de frigore factis,
 Illius in uino uel aqua decoctio curat,
 Quos uertigo nocet, si lotum sit caput inde,
 Herbaq; temporibus, & fronti cocta ligetur
 Duplum sabinæ, si desint cinama 2 poni
 In medicamentis iubet Oribasius 3 autor.

SCHOLIA.

Sic iuuat anthracas] ἀνθραξ tumor ex humore melan-
 Scholico, crasso & feruente natus dicitur, quē sapius Carbu-
 culū uocamus, propter magnā inflammationē nigredine ac-
 cedēte. Constātinus autor est Affricanus. Vulgò dicitur gūi platerē
 oder S. Barblē platerē.

2 Si desint cina-
 ma] Cinamum dicitur,
 & Cinamomum.
 3 Oribasius au-
 tor] Oribasius Sardi-
 anus libro de uirtute
 simplicium secundo.

DE PORRO.
 Von Schnittlauch.

Cap. 13.

De porro à Græ-
 cis πρῶλον.
 Dios. lib. cap.
 188. Serap. aggregat.
 cap. Curat. Aegin. lib.
 1. cap. 76. Plin. lib. 20.
 cap. 6.

C 4

In



IN multis causis usus medicamine porri
Dicitur Hippocrates 1, medicinæ maximæ
autor:

Istius succum solum dedit ille bibendum
Aegrotis, qui reijciunt, sputant uel tumorem,
Quos hæmophthoicos soliri sunt dicere Græci.
Cum galla 3 dant hunc alij, thuris uel 4 farina,
Aut geminis drachmis porrorum seminis, unum
Apponunt myrrhæ, uino quoq; trita resoluunt,
Præcunctis alijs dicunt hæc sumpta iuuare;
Manantemq; potes naris retinere cruorem,
Vngas si nares intus medicamine tali
Contractas uuluas 5 succo curabis eodem.
Reddit fœcundas mansum per sæpè puellas,
Vlcera cum melle tritum iuuat, appositumq;
Humorem capitis, si distillatio 6 fiat,
Pulmones, pectusq; nocens, uocemq; canoram:
Indeq; confurgat tussis præcordia lædens.
Cum ptisana 7 succum porri sorbere iuuabit,
Et per se solum prodest his omnibus ipsum,
Si porri partes in lympa coxeris albas,
Sicut aquam primam mures, addasq; secundā,
Vtilis eius aquæ duro fit potio uentri 8.
Dicitur hæc eadem cum uino stringere 9 uentrē,
Cum uino potus datur his, quos læserat anguis,
Quodlibet, aut animal fundens lethale uenenū,
Nec minus his prodest si uulneribus superaddas,
Sic uelut emplastrum porrum cū melle subactū.
Commixtus porri succus lacti muliebri,

Et

Et bibitus tussim fertur sanare uetustam,
 Et uarijs uicijs pulmonum subuenit idem.
 Auris compescit cum capre felle dolorem,
 Prestat idem pariter cum mulso mixtus, & auri
 Infusus tepidus, fungis si manditur obstat,
 Eius iungatur succo pars tertia mellis,
 Et sic per nares tepidum fundendo, uel aures
 Immensum poteris capitis sedare dolorem,
 Ex uino bibat hunc, lumborum quoque dolor angit.
 Dicitur utilius tali nihil esse dolori,
 Fracturas solidat cito, duriciasque relaxat
 Appositum, uulnusque recens cito cum sale claudit.
 Si crudum fuerit sumptum leuat ebrietatem,
 Sic uentrem stimulat, sic duram molliet aluum.

S H O L I A.

1 **D**icitur Hippocrates] id quod cernere licet Epi-
 dem. 5. lib. de Victus ration. 2. & lib. de Morbis, qui
 extra ueniunt.

2 Maximus autor] Maximus fuisse Hippocratem uel id ar-
 gumento est, quod hunc pari suffragio omnes medicinae principes
 statuunt, quodque huic ob diuinam artis cognitionem non aliter sa-
 cra habere curauerunt antiquitus, quam Dioni cuiuspiam uel Apol-
 lini, quem item Plinius primo medicinam inuenisse 10. lib. 2. cap.
 scribit, & 29. cap. 1. scripta repetit.

43 Cum galla] gallam fert quercus, Dioscorides inquit lib.
 1. cap. 127. Gallapffel.

4 Thuris farina] cum polline thuris.

5 Contractas uulvas] Quod Macer contractas dicit, hoc
 Dioscorides praclusos foeminarum locos nominat, quos porri suc-

C 5 cus

cus aperit. 6 Si destillatio fiat] si rheuma diffluat à capite in membra subiecta.

7 Cum ptisana] Ptisana ex hordeo confectus est cibus Hippocrati, & alijs multum laudabilis. De ptisana Hippoc. lib. 4. de Vict. rat. morb. acut. & Christoph. de honest. ad finem anti. dotarij Ioannis Mesue, item Arnold. de Villa noua in lib. de aquis medicinal.

8 Duro uentri] quem remollit.

9 Stringere uentrem] nimis fluentem.

10 Lumborum quem dolor angit] qui hypocondria suspensa habet, & murmure repleta. de quibus Hippocrat. lib. 4. Aph. 73. Sunt autem hypocondria loca sub costis, aliquibus lateralia dicta.



DE CHA
mænula. Von Cha
millè. Cap. 14.

DE Anthez
mide seu
Chamæmi
la Gal. 3. Simpl. &
6. de Simpl. medic.
cap. 45. Auic. 2. ca
non. cap. 122. Dio
scor. libro 3. cap.
143. Serapius ag
gregat. in cap. Be
thoni. Plinius libro
22. cap. 11.

Anthemi

Anthemiū magnis cōmendat laudibus autor
 Aesclepius 1 q̄ Chamimēlā, nos uel Camomillam

Dicimus, hec multū redolēs est & breuīs 2 herba,
 Herbe tam similis, quam iusto nomine uulgus
 Dicit Amariscam 3 quōd foeteat & sit amara.
 Ut collata sibi uix discernatur odore.

Autores dicunt species tres illius esse,
 Quas solo florum distingui posse colore
 Tradunt, est cunctis medius flos aureus illis:
 Sed uarijs folijs flos circumcingitur ille
 Albi, uel lutei sunt, purpurei ue coloris,
 Dicitur Anthemion 4 propriē, cuius foliorum
 Purpureus color est, maiorq; & fortior hæc est:

Ar Leucanthemion 5 folijs deprehenditur albis
 Melinis chrysanthemion 6 uis omnibus illis
 Sicca, calensq; gradu primo conceditur esse:

Prouocat urinam cum uino quælibet hausta,
 Vesicæ frangit lapides, & menstrua purgat.

Si foueatur aqua matrix, qua cocta sit herba,
 Aut si cum uino poterit sæpius illa,

Tormina sic sedat, stomachiq; inflatio potu

Pelletur tali, squamas de uultibus aufert:

Si tritam apponas solam, melli ue iugatam,

Ictericis prodest eius decoctio sumpta,

Et mirè prodest iecoris potata querelis:

Pellere cum uino potata refertur abortum.

Hac oleo cocta foueas si febricitantem

Frigus depelles, febrem quoq; sæpe fugabis.

Yngvine purgantur hypocondria 7 turgida tali

Pellit

Pestiferos morsus serpentum, pondere drachmæ
 Cum uino, prohibet anthemis sumpta nocere,
 Plinius affirmat hac quadraginta diebus
 Vna quæque die bis sumptam pondere drachmæ
 Cum geminis cyathis uini subtilis & albi,
 Cum lotio sensim totum purgare lienem:
 Aegilopas & curat, si quis commasticet illam,
 Et sic apponat, sic ulcera sordida purgat.
 Ebullire & caput febris feruore grauatum
 Sæpe solet, uel collectis humoribus in se
 Vlcera producit: uocat anathemata 10 Græcus
 Hæc decocta uirens oleo camomilla repellit.
 Quod si defuerit uiridis, maceretur aceto,
 Et caput inde lauet, nullū magis adiuuat unguē.

S C H O L I A.

- 1 **A** Esclepias] Aesclepiadem ex scriptis Plinij citat,
 quæ 22. lib. cap. 21. habentur, qui de hac herba inte-
 grum librum conscripsit.
- 2 Et breuis herba] Nam rami palmum uix excedunt. Dio-
 scorides à mensura dodentalem uocat.
- 3 Dicit Amariscam] quidā Amaracum, non quem sam-
 psychon uocant, sed partheniū, uel solis oculum, aut cotulā fœti-
 dam, Krottendill, uel Wild Camillen, graui odore florentē her-
 bam, & multū amaram. Vnde Macer iusto nomine Amariscam
 dictam innuit, quasi amaram & fœtentem.
- 4 Dicitur Anthemion] Dioscor. ἀνθήμιον uocat,
 quod Vere floreat, Germani à similitudine calcaris, Rittersporn.
 Consolidam regalem Latini.
- 5 At Leucanthemion] λευκάνθμιον in ambitū cæcidis
 folijs

folijs circūposita est, & Camillē uulgò dicitur Latine Camomilla.

6 Melinis Chrysanthemion] χρυσανθίμιον Dioscori-
des à suis florib. nominat aureis, Germani ad Græcam appellatio-
nem alludunt & Goldplumen, Sireichplumen, uel lang Camillen
nominant.

7 Hypochondria tali] ileosorum & inflatorum, de Hypo-
condrijs dictum est.

8 Aegilopas curat] αἰγίλωψ oculi uiciū est circa angulum
lachrymale, quem domesticū uocāt. id multi fistulam nomināt.

9 Ebullire caput] & mollire caput legendum arbitror.

10 Exanthemata Græcus] Exanthemata in summa cū-
te exulcerationem Alexander uocat, haud absimilem uescicis, quæ
urticarum insequuntur tactum cap. de Psidracia. De his item pul-
chra scribit Ioannes Alexandri. sophista super primū Epidimias-
rum Hippocratis commento 12.

DE NEPETA. Von wilden Poley, oder
Kornmüntz, Katzenmüntz. Cap. 15.

DE hac Dioscor. li. 3. cap. 38. Aegin. li. 7. Plin. Nat. hist.
lib. 20. cap. 14. & lib. de remed. 4. cap. 22. L. Apuleius
de uirtut. herb. cap. 91. & 94.

Herbā quā Nepetā uulgarī more uocamus,
Hanc medici Græcè Calaminthī nomīne
dicunt:

Sicca calensq; illi uis est & tertius item.

Est in utroq; gradus, cum mulsā trita tepentī

Sumpta solet totum sudore reuoluere 2 corpus,

Ex oleo quo sit decocta perunge fricando

Illum, uenturæ metuit qui frigora febris,

Non frigus tantum, sed febrem sæpè repellit:

III

Illi qui schiasim³ patitur, coxæ superadde,
 Contritam uiridem fertur comburere pellem,
 Et sic humores siccando fugare dolores,
 Apposita, potuq; suo citâ menstrua purgat.
 Est lepræ 4 species, Elephantiasisq; uocatur,
 Quæ cunctis morbis maior sic esse uidetur,
 Ut maior cunctis elephas animantibus extat,
 Hunc in principio morbū potus Calaminthes,
 Cum uino curat humores extenuando.
 Serpentum morsus superaddita trita nocere
 Non sinit, & pellit cum uino sumpta uenena
 Potus, & iniectus lumbricos enecat eius
 Succus, & in mēbris uermes necat omnibus ipse.
 Si mel iungatur huic, cum sale plus operatur,
 Si bibit hāc prægnans, aut tritam subdit abortit:
 Purgat & ictericos, cum uino curat sanhelos,
 Asthmaticos medici quos Græco nomine dicūt,
 Et iecoris morbos cum uino mitigat hausta,
 Hocq; modo ueterem lateris iuuat illa dolorem
 Atq; cicatrices nigras superaddita trita,
 Hæc naturalem reddit purgando colorem,
 Vīno decocta facit hæc melius cataplasma.
 Compescit stomachi cum uino sumpta dolorem;
 Fumis de domibus serpentes effugat eius.
 Tollere singultum & cum uino dicitur hausta,
 Hocq; modo Venerē cohibet potata frequēter.

S C H O L I A.

- 1 **C** Alaminthi nomine] Calamintham complures
 quasi bonam, uel utilem mentam nominatam dicunt.
 2 Reuoluere

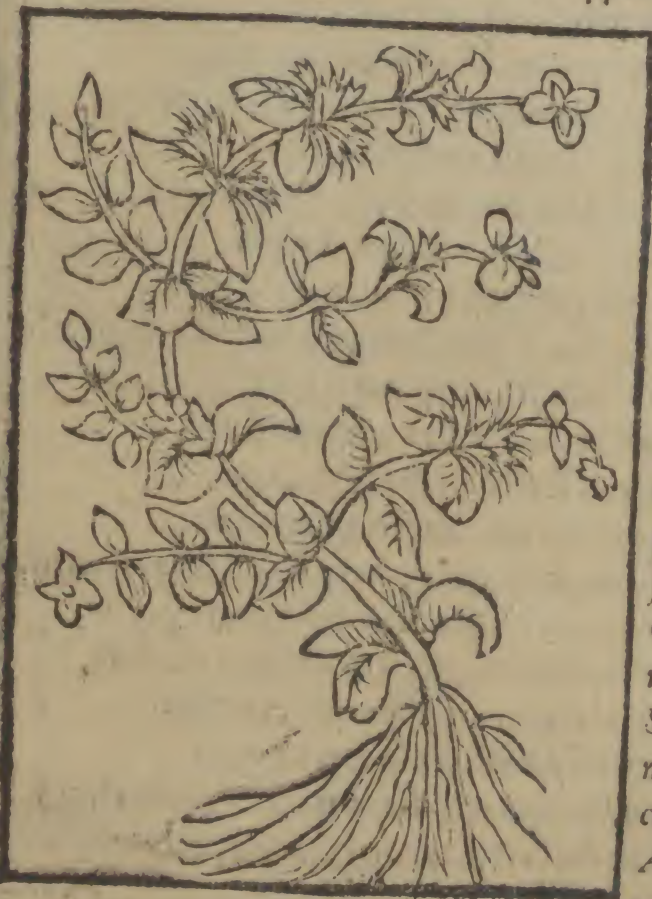
2 Reuoluere corpus] aperiendo & dilatando corpus sua
dare facit.

3 Schiasim patitur] de schiasi dictum est.

4 Est lepre species] λεῖπρα species, morbus ex humore me-
lancholico fit, quo corpus multis maculis, squamisq; induratum de-
formatur, ad modum cutis elephantis, & est species lepræ.

5 Curat anhelos] hoc est, nisi recta ceruice spirantes.

6 Tollere singultum] λυγμός Latine singultus est, ex sto-
machi oris affectione superueniens, sicut iussis ex pulmone, & ster-
nutatio ex cerebro. Singultus mentionem Hippocrates habet lib. 7.



Aphorif. 13.

DE PVLE

gio, Von Poley.

Hertzbleich.

Cap. 16.

DE Pule-
gio quæ
Græci

Πύχονα uel

Βρύχονα nomina

nāt, Gal. 6. Sima

plic. ca. 110. Dio

scor. li. 3. ca. 31.

Oribasius de ui

rib. herbar. li. 2.

Serap. ca. Sande

nig. Plin. li. 20.

cap. 14. Lucius

Apulei. de uirtu

te herb. cap. 94.

Feruida

qui non negligenda scribit.

Feruida pulegij uis, siccaq; dicitur esse,
 Tertius a medicis datus est gradus huic in utroq;
 Sæpius hanc herbā si prægnans sumit, abouit,
 Menstrua deducit cum uino sumpta repenti.
 Hocq; modo tardas hæc extrahit herba secūdas:
 Hoc nomen quia non notum reor esse quibusdā,
 Exponam talī quid nomine significetur,
 Ut nondum natus testa circumdatur ouī
 Pullus, sic infans matris uestitur in aluo
 Quadam pellicula matris de semine facta,
 Quam nascēs rumpit quasi testā pullulus ouī:
 Istas pelliculas medici dixere secūdas,
 Quod mox expositos naturæ iure sequantur.
 Hæc si plus iusto, uicio cogente, morantur.
 Aut mors subsequitur, dolor aut qui uix tolera-
 Istas pulegium prædicto more repellit, (tur.
 Cum sale contritam melli si iunxeris illam,
 Vnguinē cōtractis 1 pōt hoc succurrere morbis,
 Illius puluis sumptus cum melle, uel haustus
 Pectoris humores uiscosos 2 extenuare,
 Et per sputa potest illos educere mirē:
 Nausea, uel morsus stomachi 3 curabitur illa
 Cū pusca 4 sumpta uel aceto quod sit aquosum.
 Cum uino nigram cholera potata repellit,
 Sicq; uenenatis serpentum moribus obstat,
 Si per uim febris nimio uel fluore cruoris
 Aut aliquo casu subito defecerit 5 eger
 (Quod solet a doctis medicis madefactio dici)
 Pulegium ualido tritum iungatur aceto

Nari-

Naribus ægroti sic apponatur, odore
 Solo confestim dicunt releuare iacentem.
 Gingiuas sicci puluis confirmat, & iusti,
 Appositum uiridem dicunt sedare podagram,
 Et quosuis alios solet emendare tumores:
 Si superaddatur repidæ permixta polentæ
 Addita ceratis, pupulas 6 de corpore tollit.
 Spleneticis multū superaddita cum sale prodest,
 Elixatura si quisquam sæpè repenti
 Illius abluitur, pruritus non patietur,
 Et sic matricis poteris curare tumorem.
 Tussim compescit cum uino sumpta repenti,
 Et sic urinam compellit reddere largam,
 Et magis ex uino si sit decoctio facta,
 Aut oleo mixtam contritam si superaddas.
 Si radix acri trita iungatur aceto,
 Sedabit quosuis superaddita sæpè tumores:
 Obstat serpentum cum uino sumpta uenenis,
 Et sic assumptum Venerem stimulare fatentur,
 Sic quoq; pulmonis prodest, iecorisq; quærelis,
 Et sic nutriti sumptum lac præbet abundans,
 Herba uirens curat morsus cum melle caninos,
 Si superaddatur, & uino mixta bibatur.

S C H O L I A.

Contractis morbis] hoc est, cōuulsionibus & pos-
 tissimū opisthotono, Plinio teste.
 2 Viscosos extenuare]. i. exscreabiles facere.
 Stomachi morsus] Morsum Dioscorides & Plinius ergo
 sionem interpretantur.

D

4 Cum

4 Cum pusca sumpta] Id quidā ad uitæ referunt frugalitatem, & eos homines minus nauseam, & stomachi erosiones incurere testantur, qui paucis contenti ex horto uiuūt & agro: hoc est, qui pulegio uictitant cum pusca, quam qui popinarium luxū ex foro, & macello comparant. Pulegium enim pro sanitatis usu quotidianum ueteribus fuisse cibum, seruatamq; hanc herbam omnium salgammorum ritu. sale conditam Columella ultimo sui operis uolumine scribit.

5 De fecerit æger] Angustiùs hanc rem contraxit Plinius. & tot tantum defectus animæ, qui in fœminis strangulatu uulnæ coincidentibus fiunt, intellexit: in quibus obmutescendi uerbo plerumq; Plinius utitur. Sed Macer hoc loco omnes ex quacumq; causa obortos intelligit.

6 Scrotas tollit] id est, uaros seu uenarum scrotas.



DE FOENICULO. Von Fenchel.
Cap. 17.

DE fœniculo, quod Græcè μάρανον dicitur, Gal. 7. Simplicium, cap. 93. ad Paternian. ca. 108. Auic. cano. 2. cap. 181. Dioscorid. lib. 3. capite 74. Serap. cap. 324. Plinius lib. 8. cap. 27. & lib. 20. cap. 23.
Fœniculum

FOeniculū medici calidum, siccumq; secundo
Dicūt esse gradu, Marathrum i Græcus uocat
illud:

Cum uino cunctis obstat hæc herba uenenis,
Hac mansa & serpens oculos caligine purgat,
Indeq; compertum est humanis posse mederi
Illam luminibus, atq; experiendo probatur.
Radicis succus inmixtus cum melle recenti,
Pulla reddit eos omni caligine claros,
Expressus marathri uiridi de semine succus
Soleq; siccatus, magnum medicamen habetur,
A' quæscunq; uelis oculorum pellere morbos.
Auribus infusus uermes succus necat eius:
Renibus in ptisana radix decocta medetur,
Cum uino fugat hydropicos potata tumores,
Sicq; uenenatis obstat morsibus illa,
Sic quoq; pulmonis obstat, iecorisq; querelis,
Et sic nutriti sumpta, sit copia lactis.
Cum uino, uel aqua radicis coctio sumpta
Nephreticis; & uesicæ morbis medicatur,
Vrinas purgat, & menstrua sumpta resoluit:
Vel si trita super pectus hæc herba ligetur,
Nausea cum uino sumpta sedabitur illa:
Feruorē stomachi & cum lymphâ mitigat hausta.
Radix illius uino decocta dolores
Fomento curat: patitur quos uirga uirilīs
Hoc quoq; si iungas oleo facit, hocq; perungas
Ictus, uel facti subito quoscunq; tumores,
Apponas tritam iuncto sedabit aceto.
Semen cum uino bibitum Veneris mouet actus,

D 2

Hocq;

Hocq; modo lateris diros sedare dolores
Dicunt, aut herbæ si sit decoctio sumpta
Tradunt autores, eius iuuenescere gustu
Serpentes, & ob hoc senibus prodesse putatur.

S C H O L I A.

1 **M** Arathiū Græcus uocat] Fœniculum dictum
putant, quòd satum magno cum fœnore semen red-
dat: sed Marathrum à marcescendo, quòd ad con-
dienda plurima cum inaruerit, commendatissimum sit.

2 Hac mansa serpens] Fœniculū, si Nicandro in Theria-
cis credimus, & Plinio quoq; octauo Naturalis historiæ, in primis
serpentes nobilitauère, gustu exuentes senectutem & succo huius
aciem oculorum roborantes. Quos humana denuò sequuta est so-
lertia, fœniculum collyrijs addens, ut uisus deponat caliginē, aut
amissum reparet. In quem item finem secundis mensis fœniculi co-

mas, caules & semē addere
non sunt ueriti antiquitus,
Marcello scribente Vergil.

3 Nephreticis] de
nephreticis dictum est.

4 Feruorem stoma-
chi] stomachi astuationē,
quā uulgò densaut uocāt.

DE ACIDVLA,
Semperuiuo. Von Hauffs-
murtz, Donderbar.

Cap. 18.

DE αἰσθη Galen. lib. 6.
Simp. cap. 8. Dioscor. li. 4.
cap. 86. Plin. Nat. hist. lib.

15.



18. cap. 17. & lib. 25 L. Apuleius in histor. de herbarum uiribus.

Dicimus acidulā, quā Græcus dicit aizoon,
 Sic dici credunt sapor illi, quod sit aceti:
 Crescit arenosis in pratis, & secus amnes,
 Hanc auidē 2 quidā concedunt in tempore ueris,
 Expertumq; ferunt sibi, quod fastidia tollat.
 Virtus est illi siccans & frigida 3 ualde,
 Tertio à medicis datus est gradus huic in utroq;
 Hac fugit apposita sacer 4 ignis, & herpetamor-
 Et tumor ex oculis trita cataplasmate redit, (dax
 Ulcera quæ serpunt cohibet, combustaq; curat,
 Et multum calidæ dicunt prodesse podagra,
 Si fuerit folijs illius operta uirentis.
 Aut cataplasmata 5 mixta contrita polenta,
 Eius cum roseo succus permixtus oliuo
 Dicitur antiquo capitis prodesse dolori,
 Qui dictus dolor est lingua Cephelargia 6 Græca,
 Omne genus fluxus uentris restringere mirè
 Cum uino potata solet, uel mansa frequenter:
 Hocq; modo nimium manantia menstrua sistit,
 Vel si matrici tritam uiridem superaddas,
 Sic quoq; lumbricos pellit potata rotundos:
 Taliter & cunctis prodest potata uenenis,
 Exhilarat uisus illius succus inunctus.
 Cum uino uarijs obstat potata uenenis,
 Affirmant istam, qui secum gesserit herbam,
 Quod hunc non appetat lethali scorpius ictu:
 Auribus expressus succus si funditur eius,
 Adiuvat auditum mirè, pellitq; dolorem.

D 3 Altera

Altera uerò minor species est istius herbe,
 Quam semperuiuam dicunt, quoniã uiret omni
 Tempore, barba Iouis uulgarè more uocatur.
 Esse refert similem prædictæ Plinius istam,
 Nec minus omnibus hæc prædictis posse iuuare,
 Manè solent adeo palpebræ glutine 7 quodam
 Phlegmatis astringi, ualeant ut uix aperiri,
 Hac mirè succus herbe deglutinat huius
 Illo si tactæ fuerint, digito'ue perunctæ.

S C H O L I A.

1 **C** Rescit arenosis] Habet se hæc herba ad alias herbas, non aliter quàm homines quidã, qui uitam suam non ex aliorum adminiculo dimetiuntur, sed ut meliorum habentes fortunam, ex bonitate propria se bona uale tudine, & uita frui arbitratur. Hæc enim in domuum tectis maximè crescit, & raro in pratis: ab alijs sequestrata herbis, æterna gaudens uiriditate, non curans æstus, non frigus seu alias cæli, aut naturæ iniurias, superbiens in tanto suorum nominum ambitu. Nam aizoon quasi semper uiuens Græci dixerunt. Ambrosiam quidam ab immortalitate, Chrysospermon ab aureo seminis colore: Zoophthalmon alij propter oculorum animalium similitudinẽ. Stergcithron multi ab amore, quem conciliare fertur, seu Bupthalmum, quasi bovis oculum.

2 Hanc auidè quidam] Scribit Columella 13 libro, sedum inter iuris salgamata quoque locum habuisse mensisq; frequens fuisse ornamentum. At non est quòd maius sedum uel aizoon intelligamus, de quo hoc loci Macer tractat: sed herbam quandã congenerem, quam alij portulacam uocant, germani burgel, herbam gustu quoq; acetosam.

Et

Et frigida ualde] irrepsit iam pridem uulgaribus, indigna
 celo superstitio: quippe hanc herbam propter suam frigiditatem
 ic cœlestibus aduersari ignibus, ut ubi floreat, domus habeantur
 à fulmine indemnes. Circa quæ tales ignes facile ignauos duxe-
 rim, minimeq; timēdos, si tam exigua plantæ frigus, tam impetuo-
 sas flammæ cœli, mortales faceret, aut non accendi curaret, po-
 tissimum quum tantam cœlestibus firmitatem, & robur indies in-
 esse uideamus, ut non uel magnis quandoq; fluminibus etiam fri-
 gidiſsimis. Iouis extinguamus tela.

4 Sacer ignis] de his dictum est.

5 Aut cataplasmata] Hic cacosynthetō est aut cacephatō.

6 Cephalargia lingua Græca] κεφαλαργία capitis do-
 or est: debiliior tamen quam Cephalæa.



7 Glutine quodā] Le-
 marum uitur paraphraſi: per
 eiufmodi enim gluten, iſtum
 humorem intelligit in oculis
 concretum, quem Lemam, un-
 de lippitudo uenit, uocamus.
 DE PORTULACA.
 Von Burtzeltraut oder Por-
 tzel. Cap. 19.

DE Portulaca uel ἀ-
 ράχνη Gal. 9. Sim-
 plic. ca. 41. & 42. de
 Alimentiſ cap. 45. Dioſcor. 2.
 cap. 113. Auic. cano. 2. cap.
 de Portul. Serap. cap. 849. Et
 L. Apulei. de uirtu. therbarū
 lib. cap. 104.

D 4

An-

Andrachine Græcè, quæ portulaca i Latine
 Dicitur, hæc uulgi pes pulli more uocatur:
 Humida uis eius & frigida dicitur esse,
 Vnde iuuat febrem, quā dicit Græcia 2 Causon:
 Tertius humori, stridori uero secundus
 Huic gradus est, utilis stomacho quoq; habetur.
 Trita super stomachum uiridis si ponitur herba,
 Præstat idem succus si sumitur, herbaq; mansa
 Aut ut olus accepta, solet lenire calorem:
 Mansa uel hausta, potest nimum restringere fluxū
 Sanguinis, & uentris nimum cohibere fluorem.
 Esse uetat dentes 3 illis contrita stupentes,
 Et tumidis oculis prodest superaddita trita,
 Feruorem solis æstate comesta nocere
 Non sinit, & uentrem cum uino & sale mollit:
 Vesicæq; solet sedare comesta dolores,
 Est hæmorrhificis 4 hæc sæpè comesta salubris,
 Acidule similes huic penè per omnia uires,
 Effectusq; pares testatur Plinius esse.

S C H O L I A.

- P**ortulaca Latine] Germanicè Burzel, corrupta tamē
 uoce, quum porcell efferendum sit, ac si porcellorum her-
 bam dixeris, quod porci eam in delicijs habeant.
- 2 Græcia Causon] καύων tertianæ febris species est, & ar-
 dens interpretatur uel adurens, à cholera intra uenas cordi pro-
 pinquas ortum trahens, quæ continuo patientem affligit.
- 3 Dentes stupentes] Dentium stuporē αἰνωδία Græci
 nominant, malum quippe, quod nulla grauiore intrinseca causa
 sit: sed ab acidis, acerbisq; ciborū succis ita cōtingit, ut sæpe adeo
 torpes

torpeant, quòd sine dolore commanducare aliquid, & atterere ne
queant.

4 Hæmophthificis] sanguinem spuentibus.



DE LACTV,
ca. Von Lattich.

Cap. 20.

De Epidax & Gal.
6. Simp. cap. 4. de
Alimen. lib. 2. cap.
39. Dios. lib. 2. ca.
125. Serap. egg. ca
pi. 249. Auic. can.
2. cap. 452. Plin.
lib. 19. cap. 8.

F Rigida la-
ctuce uis
cōstat, &
humida ual-
de,

Vnde potest nimios hæc mansa leuare calores,
Et præstabit idem superaddas si bene tritam.
Vtilis est stomacho, somnū dat, mollit & aluum:
Omnibus his melius prodest decocta comesta,
Et stomacho potius non lora i comesta medetur.
Lactucæ semen compescit somnia uana,
Cum uino bibitum fluxum quoq; reprimat alui,
Lac dat abundanter nutriti sumpta frequenter,
Vt quidam dicunt, oculis caligo creatur
His quibus assidue fuerit cibus eius in usu,

D 5 SCHO.

Non lota comesta] illota, & iam primū ex terra
eruta, maiorem vim stomacho cibum non continenti,
inferre etiam Diosc. testatur.

2 Fuerit cibus eius in usu] Conditur enim in fictili ad
continuum usum muria, aliorum salgamorum modo.



DE ROSA.

Von Rosen.

Cap. 21.

DE Rosa uel Pódo.

Auicen. capite de Vi.

ribus cord. & 2. ca.

no. cap. 570. Diosc.

415 Galen. 8. Sim.

plic cap. 77. & ad

Patern. cap. 228.

Mesue simpliciū ca.

pit. 8. Serap. aggre.

gat. cap. 108. Ra.

ses 23. contin. cap. 7.

Dici flos florū nobis rosa iure uidetur,
Quod specie cunctos præcedat, odoreq;
flores:

Non tamen hæc tantum specie, nec odore iuuare
Nos

Nos ualet, & uarijs nos adiuuat illa medelis.
Eius sicca gradu uis est, & frigida primo.
Compescit sacrum, si trita apponitur ignem:
Sic quoq; si stomachus calet, aut præcordia, sedat
Fluxum matricis, cum uino stringit & alui,
Illius succum collyria plurima quærunť,
Et sicca puluis morbis bene subuenit oris,
Infriktus per se tantum, cum melleuē mixtus
Omnes feruores superaddita trita coërcet.
Ipsa recens, uel si mulsæ contrita bibatur,
Ex hac conficitur oleum, roseumq; uocatur,
Diuersis morbis, & multis utile causis.
Si bibitur uentrem mollit, stomachiq; calorem
Extinguit nimium bene si foueatur eodem:
Et dolor & feruor capitis curabitur illo.
Permiscendo illi si fortē iugatur acetum,
Expurgat sordes, uulnus repletq; profundum,
Et combusturis præclare subuenit ignis.
Ore diu tentum, dentis sedare dolorem
Dicitur, & duras palpebras reddere molles.
Aufert suppositum pruritus interiorum,
Et sterics 2 uarijs ualet hoc succurrere morbis.
Hoc oleum quoniam uariatur 3 conficiendo,
Dicam Palladius 4 quid scripserit inde peritus,
Quod rubrum fuerit foliorum sumito floris,
Vncia sic purgatorum iungatur oliui
In libra, uitreo sic claudens omnia uase
Sub Phœbo tantum septem suspende diebus,
In medelarum uarios seruetur ad usus.

S C H O

SCHOLIA.

Dici flos florum] Rosam florum omnium florē meritò dicimus, qui nō solū à coloris præstantia, odorisq; bonitate gratiam, & honorē sibi conciliat, sed etiā maiestatem quandā ob diuinos natales sibi captat. Nam Græcorū poetæ à Venere rosam primò hac temporum serie inuentā tradunt, qua Paris Priami filius tres Deas in unum conscripserat, ut se pulchritudinis iudicem audirent. Licet Iouianus Pontanus à Græcis dissentiat, & secundo libro Eridani uersu ad Venerem cōscripto, eo tempore per eandē Deam inuentā testetur, quo Adonidem in delicijs habuit. Nisi quis uel inde rosam præ alijs floribus nobilitare propensius uelit, q̃ in rosæ totius fabrica nihil reperitur, quod cum fruge non in usus maximè cadit humanos: proficua enim homini sunt folia, ut Macer scribit: semen medio inclusum & anthera dictū, nam oris collutionibus ualet, & gingiuas roborat. Calix item qui coctus, uentris fluori remedio est, et hæmorrhosiæ. Et aqua denuò ex ea per sublimationem collecta, cuius bonitas tam est nota, quàm etiam rhodolæi utilitas, multis commodo esse potest.

2 Et stericijs uarijs] matricis passionibus.

3 Quoniam uariatur conficiendo.] Variatur, sicut apud Mesue & Nicolaum in antidotarijs legitur, qui conficiendi plures ostendunt modos.

4 Dicam Palladius] in libro de Simplici medicina in elemento R.

DB



DE LILI-
is. Von Weis-
gilgē. Cap.
22.

De lilys uel xpī
vois. Galen. ad
Patern. capite
152. & Simp.
lib. 7. cap. 53.
Auic. de Viri-
bus cord. Raz-
ses 22. contin.
cap. 5. Diosc.
li. 3. cap. 107.
& li. 1. cap. 1.
Plin. lib. 21.
cap. 5.

L Aurolas (ut credo) rosas argentea 2 debent
Lilia iure sequi, quæ nec specie, nec odore
Cedere creduntur, roseo collata decori:
Nec minus in multis hominū sunt apta medelis.
Eius radicis bulbus, quæ lilia profert,
Sub prunis tectus, iuncto quoq; tritus oliuo,
Prodest usturis mirè superadditus ignis,
Et melius roseum sibi si iungatur olium,
Duricias stericas mollit, si subditur idem,
Elixis eius solijs, cataplasmaq; factum.
Mollescunt nerui, combustaq; membra iuuatur:
Sicq; superpositus morabitur anguis,

Aut

Aut secum uino bulbus potabitur ipse:
 Sic quoq; fungorum uetat ille uenena nocere,
 Hunc uino coctum, tritumq; pedum, 3 superadde
 Clauis nec soluas, nisi cum lux tertia transit.
 Pingui porcino, si decoquis hunc, uel oliuo,
 Reddere posse pilos membris narratur adustis.
 Cum uino potum nocuum purgare cruorem
 Per uentrem dicunt, & sic prodesse lieni.
 Sicq; inuat uulnus, sic idem menstrua purgat:
 Vel si cum uino ueteri coctum superaddes,
 Præcisis neruis tritus cum melle medetur.
 Expressus succus foliorum mixtus aceto,
 Et melli coquitur, sint mellis, sint & aceti
 Ut geminæ partes prædictis quinque liquoris,
 Ad desiccandas nihil est magis utile plagas.
 Inq; cicatrices ducit, licet inueteratas,
 Elixus bulbus, & cæratīs bene mixtus
 Rugas distendit uultus, maculas fugat omnes:
 Lichenas 4 purgat, faciē quoq; surfure mundat:
 Exprimitur succus de tritis floribus eius,
 Qui uultus mollit cum lana subditur illis.
 Illius asseritur sudorem posse mouere,
 Turgida maturat, primò coquit & citò purgat.

S C H O L I A.

L Aurolas rosas] Cur laurosas nominet Macer, nō intel-
 ligo: nisi ad Plinij uerba alludat, qui 21. lib. cap. 5. rosas
 cognatione quadā unguento Lirino, quod aliās Susinum
 uocant, & ex liliorum folijs coadunatur, proximas esse docet.
 2 Argentea] candida. Et ne quid in rerū natura uoluptatis
 foret,

foret, quod antiquorū superstitio non suis dijs adscribere lilij candorem Iunoni adpropriarunt. Ex huius enim profuso in terram lacte, cum dormiens Herculem mammis repleffet, lilium primò enatum Græcorum poëta fabulati sunt.

3 Pedum clauis] Pedū clauus apostema melancholicū est, quod Auicenna cornu nominat, uulgò agerstenaug. Clauo Siliū Italicum perijisse tertio epistolarū Plinius secundus scribit, sed nō pedum clauo. Est enim & capitis quidam intolerabilis cruciatus, quem c̄ auum dicunt, & eo perijit poëta.

4 Lichenas purgat] Græcis λεχένις impetiginis seu menta græ species est: nam cutem asperam facit & squamosam. quidam Gallicum morbum nominant, aliqui lepram. Lege Hippocratem Prædictionum secundo libro.



DE SATV
regia. Vō kirch
isop. Sergen
traut. Kunel. Io
seplen. Cap.

23.

De θυμβρα
Dios. li. 3. cap.
40. Aegin. lib.
7. Plinius lib.
19. cap. 8. Ses
rapius capite
313.

Thymbra

Thymbra solet Græcè dici, Satureia Latinè
 Illi sicca nimis uis est, sed feruida ualde
 Prouocat urinam, cū uino mēstrua sumpta,
 Pellit abortiuum, muliebria uiscera purgat:
 Illius puluis cum cocto melle subactus
 Et mansus, uel cum uino si sumitur idem,
 Pectoris humorem ꝑ pellit persumpta renacem.
 Cum uino tepido compescit tormina uentris,
 Si largè bibitur: uerū iam sæpè probaui,
 Est quidam morbus lethargus nomine dictus,
 Oppositum ꝛ medici quem dicunt esse phrenesi,
 Quod uetat hic somnum, somno grauat hic ni-
 mis ægrum:
 Hoc tamen lethali somno depressus aceto
 Thymbram commiscens foueat caput inde fre-
 quenter,
 Sic uiciū pigri ꝛ poterit depellere morbi.
 Hanc herbā caueat mulier contingere pregnans,
 Nam non mansa modo, separatim subdita tollit:
 Nausea sedatur hac, si bene trita bibatur
 Cum modico uino: sed si sumatur in ouo,
 Hocq; modo mirè Venerem solet illa mouere,
 Si larga potu uiridis, uel sicca bibatur.
 Quo si cum uino mel iungitur, & piper illi
 Non modicū Veneris succendere dicitur ignem:
 Hinc est à Satyris meritò Satyreia uocata,
 Quod sint in Venerē nimis hæc animalia prona
 Si desit thymus ꝛ pro thymo ponere thymbram
 Præcipiunt medici, quia uis est æqua duobus.

S C H O.

SCHOLIA.

H Vmorem tenacem] phlegma uisofum.

2 Lethargus nomine dictus] ληθαργός morbus est, ab obliuione omnium rerum dictus, qui accidit cum mentis alienatione, ac dormiendi inexpugnabili necessitate.

3 Oppositumq; dicunt phrenesi] φρενίτις insaniæ species est cum dementia continua & insomnietate non cessante.

4 Pigri morbi] id est, lethargi.

5 Thymus si desit] Thymus herba est, quæ per inferna puitam ducit. Diosc. autor lib. 3. cap. 39.



DE SAL-
uia. Von Salbey.
Cap. 24.

DE ἑλελίσφακος
Gal. lib. 6. Sim-
plicii cap. 124.
Diosc. lib. 3. cap.
35. Serapius lib.
aggregat. capite
154. Plin. lib.
26. cap. 6. Aes-
culet. lib. 7.

S Aluia cui
nomen
Elelis-
phacus est
apud Ar-
gos,
Cum

Cum mulla iecoris prodest potata querelis,
 Pellit abortiuum, lotiumq; & menstrua purgat.
 Trita uenenatos iuuat, & superaddita morsus
 Crudis uulneribus, quæ multo sanguine manant
 Apponas tritam, dicunt retinere & cruorem.
 Cum uino succus tepidus si sumitur huius,
 Compescit Venerem, tussim, laterisq; dolorem.
 Pruritus uulvæ curat, uirgæq; uirilīs
 Si foueas uino, fuerit quo salua cocta,
 Illius succo crines nigrescere dicunt,
 Si sint hoc uncti crebro sub sole calenti.

SCHOLIA.

A Pud Argos] id est, apud Græcos. sunt enim Argos
 lici Græci.
 2 Retinere cruorem] Huc ponendum uidetur,
 Agrippam hanc herbam ideo sacram nominasse, quod suffumi-
 gata saltem mulierum fluores nimium manantes impediat: quod
 item imprægnatas multum laxas, & fluentes commanducata,
 sanitati restituat, conceptumq; artissimè in debi-
 tum tempus contineat, quæ o-
 mnia Aëtius tes-
 tatur.

DE



DE LIGV-
stico. Von Lieb-
stöckel. Cap.

25.

De Ligustico uel
Σμυγνισ Dioscor.
lib. 3. cap. 53. Plin.
lib. 19. cap. 8. Aca-
gin. lib. 7.

A Ligurū
patria
sump-
tere ligustī-
ca nomen,
Copia q̄d ma-
ior ibi nasci-
tur illius her-
bæ,

Tertius huic gradus est calidi, sicq̄ uigoris.
Maior radicis uis est, & seminis eius,
Et par est illis uis in medicamine quouis.
Inflato stomacho cum uino sumpta medetur,
Et tali potu uis digest uia iuuatur.
Omnibus & morbis sic prodest interiorum,
Vrinas sic sumpta mouet, & menstrua purgat.
Tota uenenatis medicatur morsibus herba,
Si bibitur bene trita prius, uinoq̄ soluta,
Et pars contrita ponatur desuper herbæ,
Non modicū colicis prodest hæc māsā, uel hausta.

E 2 Vel

Vel si radicis elixatura bibatur,
 Nec solum colicis decoctio proderit ista,
 Sed supradictis medicabitur omnibus hausta,
 Digestilibus semen bene iungitur eius
 Omnibus antidotis, quod sit huic peptica 2 uirt,
 Hanc oculis 3 Strabus, potuq; & odore 4 nociuam
 Afferit, antidotis eius tantummodo semen
 Misceri iussit, hoc uerum dixerit à se,
 Aut à doctorum libris, non est mihi notum:
 Hoc scio, quod ueteres nō paruis laudibus istam
 Attollunt herbam, nec me legisse recordor
 Vllum qui Strabi sermonibus astipuletur.

SCHOLIA.

1 **S**umpsere ligustica nomen] Sunt qui ligusticū, de
 quo Dioscorides tercio libro, & hinc Macer scribūt, non hanc
 herbam esse uolunt, quā uulgò liebstöckel nominamus: & a
 lter Smyrnion dicta est, quod myrrha odorē referat. Quibus cer
 te facile subscribendum duxerim, nisi breuibus textum illustrare
 statuissemus, & non uolumen scribere.

2 **Peptica uirtus**] Pepticam uirtutē Siluaticus digestiuam
 interpretatur, & Peptica omnia nominat, quæ concoctricem ad
 iuuant.

3 **Hanc oculis Strabus**] Strabus Gallus, qui tempore flo
 ruit Ludouici imperatoris, anno Virginei partus 1340.

4 **Potu & odore nociuam**] Strabi scripta ex duodecimo
 capite sui hortuli apponimus.

Inter odoratam memorare Lybistica syluam
 Fortia, suadet amor parui diffusior horti,
 Hoc germen succo quamuis & odore gemellis
 Orbibus

Orbibus officere, & tenebras inferre putetur:
 Semine sæpè tamen quæsitis addere curis
 Parua solent, famamq; aliena laude mereri.

DE OSTRVTIO. Von Laferwurtz, oder Meys
 sterwurtz. Cap. 26.

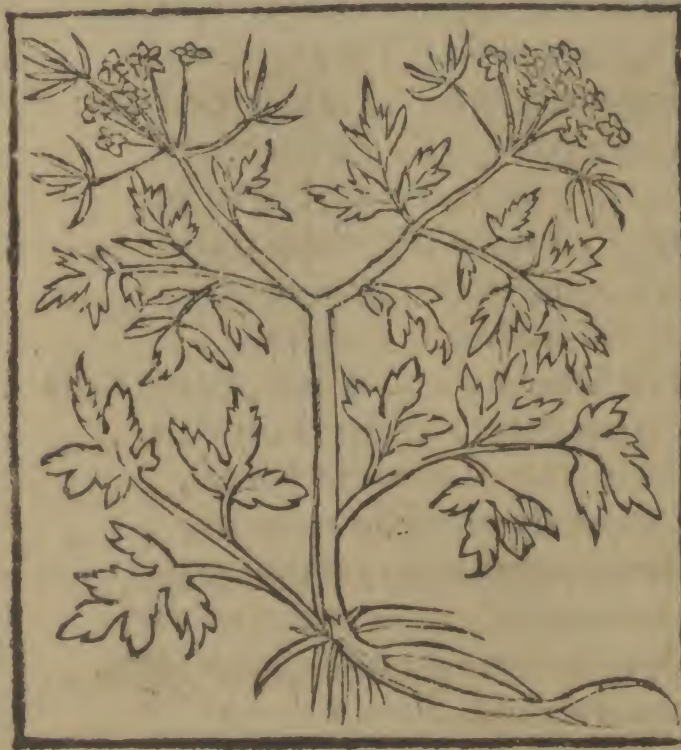
De Ostrutio uel Σιλαφία Plin. lib. 13. cap. 21. & lib. 24. cap. 11.
 Diosc. lib. 3. cap. 85.

STruthion, Ostrutiū: qd uulgi more uocatur
 Vim calidā, siccamq; tenet, radix fugat eius
 Cum uino morbos iecoris: si trita bibatur
 Ictericos sic sumpta iuuat, splenisq; tumorem
 Durum, quem Græci sclyrosin 2 dixere, repellit.
 Hocq; modo lapides uesicæ frangere dicunt,
 Menstrua sic, lotiumq; mouet, tussiq; medetur:
 Sic orthopnoicis 3 prodest, si sæpè bibatur.
 Subdita matriçi depellere fertur abortum,
 Et sic tarda nimis seducere menstrua tradunt,
 Acri cum uino si iungitur atq; polenta,
 Illius succus lepras emendat inunctas.
 Hoc etiam succo iuncto cum polline, quem dant
 Hordea, curatur (ut dicunt) pustula quæuis.
 Si superaddideris emplastri more dolori,
 Illius succus cum melle terendo iugatus,
 Humores capitis purgat si nare trahatur,
 Sternutamentum per se puluis mouet eius.
 Naribus iniectus ueratro 4 non segnius albo,
 Ictericis succus mirè medicabitur eius,
 Hunc si nare trahant lacti mixtum muliebri.

E 3 SCHO.

SCHOLIA.

- 1 **S** Truthion, Ostruthiū] Σιληφιο, recti nominis adhuc
 umbram tenet, à maioribus tractā, qui hoc laſerpitium dixe-
 runt, & nos Oſteritiū ſeu Oſtrutium diuino quaſi nomina-
 mus idiomate, quam umbrā item uulgò inſequi-
 mur: & quum la-
 ſermurtz dicere deberent, concifo uocabulo meyſtermurtz dicūt.
 2 Græci ſclyroſini dixere quod eſt tumorem durum ex
 craſſiſſimo humore melancholico, uix ſentientem or-
 um.
 3 Sic orthopnoicis] id eſt, illis qui ſpiritum non niſi recta
 ceruice ducere poſſunt.
 4 Veratro non ſegniu's albo] helleboro albo.



DE CHAE
 rifolio. Von
 Korbeltkraut.

Cap. 27.

De Charifolio
 aut γινδιος Di-
 oſcorides lib. 2.
 cap. 126. L. A.
 puleius in hiſto-
 herb. ca. 5. Ae-
 gineta de oleri-
 bus lib. 1. cap.
 74. & lib. 7. Pli-
 nius hiſt. mund.
 lib. 20. cap. 5.
 & de re med. 4.
 lib. cap. 37.

ER

E St chærifolio uis acris, & ignea ualde
 Appositū cancris tritū cū melle medetur
 Cum uīno bibitum lateris sedare ⁊ dolorem
 Sæpè solet, tritam si nectis desuper herbam.
 Cum mulsā bibitum pituitæ noxia soluit,
 Ex oleo coctum frigus depellit inunctum;
 Si tritum mixto uiolento soluis aceto,
 Lumbricos tali potu, tineasq; repellis:
 Cum uīno ciet urinas, & menstrua purgat,
 Virgine cum cæra ⁊ uetus huic axungia mixta
 Non modò parotidas ⁊ uerū quoscunq; tumores
 Curat, uel reprimit, si sæpius hæc superaddas.
 Intinctum ualido si manducetur aceto,
 Sæpè solet uomitum, uentremq; tenere solutum;
 Si trito tegitur pectus, succusq; bibatur,
 Vrinæ clausos referat quoscunq; meatus,
 Illius elixatura uertigo fugatur,
 Si caput hac tepida patientis sæpè lauetur,
 Herbaq; temporibus, & fronti cocta ligetur.

SCHOLIA.

- 1** Ateris sedare dolorem] costalem intelligit, quem
 pleuriticum nominant.
2 Virgine cum cæra] Cæram dicimus uirgineam,
 quæ est de trunco apum examine.
3 Non modò parotidas] quid sit Parotis, dictum est.

E 4 DE



DE ATRI-
plice. Vñ Moltē oder
Miltē. Item scheiß
traut. Cap. 28.

De Atriplice, uel ἀ-
τραπίς, ἢ χρυσάνα
καὶ Gal. lib. 6. Sim-
plicium cap. 69. ὅ-
lib. 2. Alim. cap. 44.
Dios. lib. 2. cap. 110.
Serap. aggregat. ca-
pi. 146. Plin. lib. 27.
Col. lib. 12. Rasēs 3.
ad Almanforem.

INfrigidare gradu primo, humectare secundo.
Atriplicem dicunt, eius mollit cibus aluum,
Duritias soluit uarias, clauisq; 1 medetur
Emplastrum crudæ, uel coctæ si superaddas:
Hocq; superpositum scabros 2 citò detrahit un-
gues,

Ignibus & sacris dicitur sic posse mederi.
Atriplicem tritam cum nitro 3 melle & aceto
Dicunt appositam calidam sedare podagram
Istericis, dicitq; Galenus 4 tollere morbum,
Illius semen cum uino sæpius haustum.

SCHOLIA.

CLauis medetur] id est, pedum porris melancholicis,
seu melancholia ortis.

2 Scabros,

2 Scabros ungues] citò, id est, sine iniuria. sic Plinius 4. de Remedica, cap. 7.

3 Cum nitro] sale nitri, de quo Dioscorides lib. 5. cap. 84. uulgò salpeter.

4 Dicit Galenus] In lib. Simplicium medic. 6. cap. 69.



DE CORIANDRO.

Von Coriander.

Cap. 29.

De Coriandro, Græcis κόριον
uel κοριαννον dictū, Diosco-
rides lib. 3. cap. 64. & lib. 6.
cap. 9. Serap. lib. aggregat.
cap. Diabola. Gal. lib. 7. Sim-
plicium libro cap. 41. Auic.
libro 2. cap. 144. Plin. libro
20. cap. 20.

F Rigida uis herbe
coriandri dici-
tū esse,

Austerēq; simul quid
dā uirtutis habere:

Hancq; Galenus ait, per quam depellere uentre
Lumbricos, tineasq; solet, si trita bibatur.

Cum uino uel si mixta sumatur aceto,

Vna cum passa & coriandrum, melq; iugatum

Sedabunt uarios superaddita trita tumores:

Precipue testes tumidos iuuat hoc medicamen.

Illius semen uentrem stipare solutum

E s Fertur,

Fertur, aquæ iunctum fuerit si sæpius haustum.
 Argenti spumam; cerussæ 4 contere mixtam
 His tritis succum coriandri iunge, & acetum
 Quatuor his roseum miscendo iugabis olium,
 Ista terendo simul preciosum conficis unguen,
 Quo sacros ignes pellas, calidosq; tumores.
 Si tibi difficilis confectio tanta uidetur,
 Succus cum solo prodest commixtus aceto.
 Et si frumenti panis mundissima mica
 Iungitur huic succo, sedat quemcunq; calorem.
 Huic succo si iuncta fabæ sit sola farina,
 Et superaddatur serophis, medicabitur illis,
 Et cedit feruens emplastro pustula tali.
 A' multis scriptum legitur, febris ante tremorem
 Si tria grana uoret coriandri seminis æger,
 Euadet febrem, cui dat lux tertia nomen.
 Præstat idē lectum coriandrum mane, priusquā
 Sol surgat, cervicali si subditur ægri.
 Xenocrates scripsit totidem cessare diebus
 Menstrua, quot mulier coriandri grana uorabit.
 Absiduum quidam condemnant illius usum,
 Nempe putāt mortē, s; quēuis'ue parare dolorē.

S C H O L I A.

Coriandri dicitur esse] Persuasum aliquibus est co-
 riandro cimices nomen fecisse, quod folia eius, & caules
 cimices post frictū oleant. Sed multi quoq; quasi Coriam-
 bion dici fatentur, quod herbam significat oculorum pupulas he-
 betantem: oculis enim proficuum nusquam legitur.

Vna

- 2 Vna cum passa] cum uino cocto.
- 3 Argenti spumam] per argenti spumã lythargyron intelligit, quod uulgò Silberglettin dicimus, & uenenis, si propinemus connumeratur, sicut Dioscor. lib. 6. cap. 72. bene indicat. De hac spuma qua arte fiat, idem Dioscor. lib. 5. cap. 56.
- 4 Cerussæ contere] De cerussa, quam Germani Bleymeis nominant, Dioscor. lib. 5. cap. 57. & lib. 6. cap. 22.
- 5 Nempe putant mortem] Etenim uenenum esse rerũ periti testantur, nisi ipsius malitia aceto, in quod per dies aliquot infunditur, rescecet. Venenum esse apud Dioscoridem leges lib. 6. capite 9.



DE NASTUR
tio. Von Kressig oder
der Gartentressich.
Cap. 30.

DE καρδάμω
Dioscor. lib.
2. cap. 144.
Galenus Simplic. lib.
7. cap. de Natur. Ras.
3. ad Alm. Auic. pri-
mo can. Fen. 4. cap. 7.
Plin. lib. 20. cap. 19.
Et lib. de Remed. 4.
cap. 12. Lucius Apu-
lei. in hist. herb. ca. 20.

Dicunt

Dicunt feruētes quod habēt nasturtia iuires,
 Et siccās hac re Venerem ceu rita coērcet,
 Siccando semen fuerit si sumpta frequēter,
 Fermenta commixta recens hęc herba terendo
 Andracas 2 curat, bona quę plebs ulcera dicit:
 Si superaddatur, curaq; furunculus 3 ista
 Emittit saniem, cum qua dolor ipse recedit.
 Illius succus crines retinere fluentes
 Illius asseritur, dentisq; leuare dolorem,
 De qua parte dolens dens est infusus in aurem,
 Fortius est herba semen, depellit abortum.
 Haustum cum uino, uentrisq; animantia pellit,
 Et sic serpentis dicunt obstare uenenis.
 Solus odor positi carbonibus effugat illos,
 Splen reprimit mixto, si sæpē bibatur, aceto.
 Herbam uel semen cum polline iunge & aceto,
 Hęc contrita simul schiasis superadde dolori.
 Vtile non modicum confirmant hoc medicamē,
 Lichenas 4 succus purgabit melle perunctus,
 Si prurigo caput, aut ulcera turpia foedant,
 Anseris admiscens adipi nasturtia trita,
 Sæpius unge caput, uitium pelleretur utrumq;
 Si coquis hanc herbam capre cum lacte recenti.
 Illius aut semen dolor angit pectora quisquis
 Assumpto tepido potu sedabitur isto.
 Semen cum tepida cōtritum pondere drachmæ,
 Et bibitum, dicunt duram quod molliat aluum.
 Tussim compescit semen cum melle uoratum.

SCHOLIA

SCHOLIA.

N Asturtia uires] Nasturtiū, Plinio & Varrone testibus, à naribus torquendis appellatū est, quòd odore & seminis acrimonia sternutamenta prouocet. Sed Græci Cardamon dictum arbitrantur, quod cordi, cor enim cardian uocant, utile & accommodatum habetur.

2 Andrakas curat] de his dictum est.

3 Curaq; furunculus] Furunculi grana sunt minuta in facie, seu pustulæ albæ, quas alio nomine papulas uocamus.

4 Lichenas] cutis asperitatē, quæ aliquādo in leprā mutatur.



DE ERUCA.

Von Weifs Senff.

Cap. 31.

DE Eruca, quæ Græcis
Ἐρῳον dicitur Diosc.
lib. 2. cap. 129. Gal. lib.
2. Aliment. cap. 51. Plin-
nius libro 19. cap. 8. Se-
rap. aggregat. ca. 224.

E Rucam calidā
dicūt medio-
criter esse,
Siccā non adeo,
cibus eius digerit
escam:

Tertius erucæ fertur gradus esse caloris,
Et ualet urinas hæc mansa, uel hausta mouere,

Man-

Manditur utiliter pueris, tussimq; repellit.
 Emundare curem maculis cum melle iugatam
 Tradunt, & mundos lentigine reddere uultus.
 Elixata prius radix, ualideq; subacta,
 Ossibus, & fractis superaddita, reñcit illa.
 Cum uino tritum si semen sumitur eius,
 Quosuis pestiferos ictus curare uidetur.
 Hæc nigras maculas purgat cum felle bouino
 Illita, mira loquor, cum uino largius haustam
 Indurare ferunt hanc contra uerbera sensum.
 Si condituris coquus hanc admisceat herbam,
 Aut semen, gratum dicunt præstare soporem,
 Euzomonq; 2 solent hac causa dicere Græci
 Erucam, succus quod gustu sit bonus eius:
 Nō modicè māsam Venerē stimulare, uel haustā
 Confirmant medici pariter, pluresq; poëtæ.
 Est cum lactucis hæc herba comesta salubris:
 Namq; calor dat temperiem cū frigore mixtus.

S C H O L I A.

LEntigine reddere] *Lentigines faciei maculæ sunt, à
 similitudine lenis dictæ.*
 2 Euzomonq; solent] *Cibos saporosos facit hæc
 herba, & peculiarem illis parit gratiam. Vnde hoc nomen Græci
 indidère. Sed ab erodendo Erucam nominatam fama habet: hæc
 enim si gustaueris, linguam uellicat, satisq; acriter mordicat.*

D E



DE PA
pauere. Von
Klapperrosen
Kornrosen.
Cap. 32.

DE papaue
re, Græcè μί
κρον, Galen. 7.
Simplic. capi
te 102. Auic.
Cano. 2. cap.
de papau. Sea
rap. agg. cap.
Caxchax. Dio
scor. libro 4.
cap. 62.

Dicunt uim gelidā, siccamq; papaueris esse,
Tres illi tribuunt species, flos unius albus,
Alterius roseus, rubeusq; minoris:
Flos est, hanc uulgò dicunt agreste papauer,
Cunctis nobilior est, cui flos innascitur albus,
Ex huius teneris faciunt opium capitellis.
Incisa leuiter i summa cute, lacq; quod inde
Defluit, accipiunt cocleis, succumq; reseruant
Antidotis multum aptum, varijsq; medelis.
Sunt qui contundunt cum lacte suo capitella,
De quibus expressum, siccant in sole liquorem:
Post

Post primum succus uires habet iste secundas,
De specie uerò roseos, quam gignere flores
Dixi, conficiunt oleum de semine tonso,
Non modicum gustu iucundum somni, ferumq;
Tertia cui flos est rubeus, semenq; nigellum
Præstat, si bibitur, reliquarum more et soporem
Elixatura tepida cuiuslibet harum,
Aeger si foueat faciem, uel si bibit illam,
Optatum capiet, nisi mors sit proxima somnum.
Sperma nigri et bibitum cum uino stringere uentrē
Dicitur, hocq; modo menses retinere ualebit.
Somnū dat bibitum, tussim compescit iniquam,
Pondere denarij debent hæc semina sumi.
Nam plus lethargum et uel mortē sæpius infert.
De folijs eius tritis factum cataplasma
Eximiè fauces, dicunt curare tumentes:
Quosq; uocant sacros extinguere dicitur ignes,
Frigore, uel cantu, potu'ue, cibo'ue, uel æstu.
Aspera si fuerit uocalis et reddita uena,
Apposito tali fiet medicamine lenis.
Candida Miconi species (sic nempe uocari
Græcorum lingua dicunt quodcunq; papauer)
Longè nobilior est, utiliorq; duobus:
Tunc cum lacte fluunt capitella papaueris huius
Lecta coquantur aqua, cui sit pars tertia mellis
Addita, cuncta coquis, donec decoctio spissa
Sit quasi mel, uarios sic conseruetur ad usus:
Sūpra facit somnū, tussim fugat, abstinet aluū.
Vocalis uenæ bene rheumatismata siccāt,

Eiusdem

Eiusdem teneris opium factum capitellis,
 Sicut iam docui, roseo miscebis oliuo:
 Vnge caput mixtis, sedabitur his dolor omnis.
 Et solet hoc unguen somni præstare quietem,
 Prædictis admisce croci 7 redolentia fila.
 Auris curabis hæc infundendo dolorem:
 Hoc quoq; foemineo cum lacte, croco'q; subacto
 Vngendo calidam poteris sedare podagram:
 Ano suppositum solet hoc adducere somnum,
 Illud idem solo præstare uidetur odore.

S H O L I A.

1 Incisa leniter] Quomodo conficiatur opium scribit Ma-
 cer. De opio dictum est ex sexto Dioscoridis libro.

2 More soporem] Per soporem non simpliciter som-
 num intelligit, sed profundum quasi, uel longiorem, uelut ex his
 Plinij uerbisprehendimus: Quando inquit curandum est, ne
 somnus sopor fiat.

3 Sperma nigri] liquidum ex papauere.

4 Lethargum infert] Notandum est Lethargum ex tota
 uocis æstimatione nihil aliud esse, quàm uel obliuiosam desidiam,
 uel desidiosam obliuionem, inexpugnabilemq; dormiendi neces-
 sarietatem, Galeno autore in suo Diffinitionum libro.

5 Fauces tumentes] Branchum intelligit.

6 Vocalis uena] tracheam arteriam uocalem uenam no-
 minat, quam quidã spiritalem fistulam uocant, Græci pharingã.



7 Croci redolentia fila] id est, croci flores.

F

DE



DE CEPIS. Von
Zwibel. Cap. 33.

DE Cepis uel κρομμύων Ga-
len. Simpl. libro 7. cap. 56. 
li. 2. de Alm. ca. 685. Serap.
agg. 355. Plin. libro 19. cap.
6.  lib. 20. ca. 5. Diosc. lib.
2. cap. 139.

DE cepis i medi-
dici nō cōsen-
tire uidentur,
Nāq; Dioscorides in-
flare, caputq; grauare,
Atq; sitim cepas dixit
succendere manfas:
Fellitis 2 non esse bo-
nas, ut ipse Galen. 3

Phlegmaticis uero multum putat esse salubres.
Non modicum sanas Aesclepius asserit illas,
Præsertim stomacho, pulchrumq; creare colorem
Affirmat, quoties aliquis conspexerit illas,
Et dicit quisquis ieiunia 4 soluerit illis
Vnaquaq; die, quod uiuet hîc absq; dolore.
Affirmant omnes manfas inferre soporem.
Et dicunt illas mollire salubriter aluum:
Appositos perhibent morsus curare caninos,
Si tritæ cum melle prius fuerint, uel aceto.

Appo-

Apponunt alij cum uino melleq; tritas,
Transactisq; tribus soluunt cataplasma diebus:
Sal tritum, cepasq; Dioscorides iubet, anguis
Morsibus apponi, sic asserit ille iuari.
Fœmineo lacti commixtus succus earum
Pellit sæpe graues infusus ab aure dolores:
Hic succus commixtus aquæ, bibitusq; iuuabit
Illos, quos subitus facit obmutescere morbus.
Naribus attractus harum tantummodo succus
Humores nocuos capitis deponere cogit:
Mansæ uel potæ tardantia menstrua purgant,
Triturasq; 6 pedum solæ quas uel caligarum
Duriciæ faciunt, succo sanabis eodem.
Cum gallinarum pingui si sæpe perungas,
Manè sibi dentes qui luco perfricat isto,
Dicunt hunc dentis nunquam sentire dolorem.
Vlcera compescunt oris cum pane comestæ,
Intingens oleo coctas qui sumpserit illas:
Sedat quos intrus dat dyssenteria 7 morbos.
Contritæ cepis loca denudata capillis,
Sæpe fricans capitis poteris reparare decorem.
Oris fœtori profunt, fastidia tollunt,
Hasq; iubet hæmorrhoidis 8 superaddere tritas,
Illarum succus caligine lumina purgat:
Admixtus mellis maculas quoq; iunctus aceto
Emendare solet, si sint hoc sæpe fricatæ.

DE cepis medici] Apud Aegyptios morsu cepas laedere fuit religio, saltē quod eas sacras crederent, & utrasq; lunæ fortunas imitari, facile enim patet, luna toto orbe fulgente cepas augeri ac syderis fulgore minuto eas minui. Tamen medicinis adhiberi nulla lege cautū fuit, neq; edicto prohibitum. Vnde Macer dissonantiam autorum allegat, qui cepas antidotis insinuare statuunt.

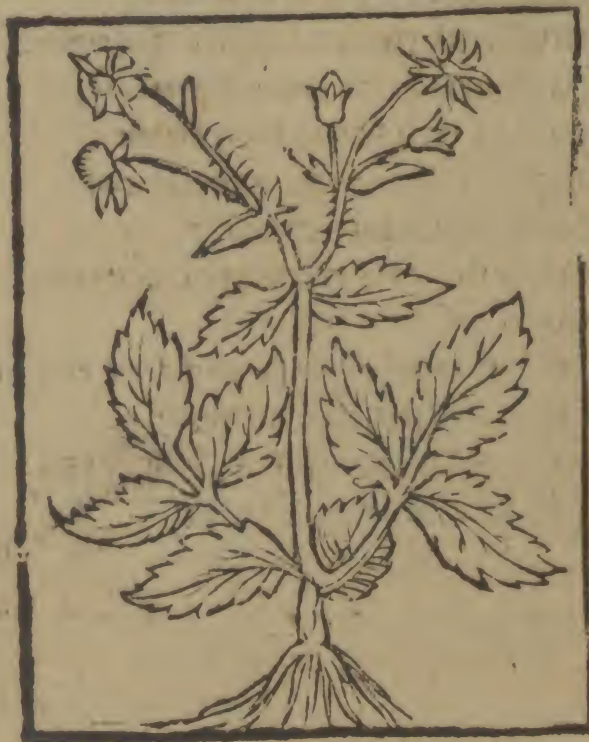
2 Fellitis non esse] id est, cholericis quibus exundat bilis.

3 Galenus] libro secundo de Aliment. cap. 685.

4 Quisquis ieiunia soluerit] id est, qui ieiuno stomacho quotidie cepas uorauerit.

5 Illos quos subitus] id est, qui loquelam amiserunt.

6 Trituras pedum] calles pedum intelligit.



7 Dyssenteria morbos] Dyssenteria cum inestimatorum excoriatione fluxus uentris est.

8 Hemorrhoidis] de his dictum est.

DE BUGLOS
so. Von Ochsenunge
gen. Cap 34.

De βούλωσσι Dioscor. lib. 4. cap. 123.

L. Apuz

L. Apuleius lib. de Virt. herb. cap. 41. Plin. lib. 25. cap. 8.

Lingua bouis Graio sermone buglossa : uocatur,

Hæc cholera 2 rubea nimio seruire perusta

Purgat, cum uino fuerit si sumpta frequenter

Cardiacum 3 cholerae 4 quem fecit copia nigra,

Consimili potata modo curare ualebis.

Humores nocuos pulmonis detrahit hausta,

Mixtus aque repida si succus sumitur eius,

Illi qui patitur schiasim mirè medicatur.

Vim memorem cerebri dicunt seruare periti

Vinum potatum, quo sit macerata buglossa.

Lætas 5 conuiuas decoctio dicitur eius

Reddere, si fuerit inter conuiuia sparsa.

S C H O L I A.

Buglossa uocatur] Quam nulla in herba istius repariatur autorum symmetria, Leoniceus Manardus, Vergilius Macellus & L. Fuchsius bene ostendunt, dum omnes ferè Boraginem, Buglosson esse contendunt. Sed quia Macrum interpretari deliberatum est, lectorem ad præfatos remitto, ut ex illis ancipitem opinionem postponat, & rectissime Buglosson à Boragine distinguere addiscat.

2 Cholera perusta] bilem incineratam.

3 Cardiacū] Cardiaca passio cordis tremor est, uel oris stomachi dolor, & punctura ab Hippocrate lib. 5. de Loc. affect. xap αλωγμὸς dicta.

4 Cholerae nigra] id est, melancholia.

5 Lætas conuiuas] Vinū Buglossatum animi uoluptates auget, & uocatur inquit Plin. Euphrosinum. Sed de eo multa habes

bes apud Arnoldum de Villa noua in libro de uinis.



DE SINAPIO.
Von Senff. Cap. 35.

DE sinapio Græcè Σινάπις
Auc. secund. Cano. capite
683. Serap. lib. aggregat.
cap. 373. Plin. lib. 20. ca.
22. Galen. 7. Simpl.

INter eas quas Py-
thagoras lauda-
uerit herbas,
Asseritur primā lau-
dē tribuisse sinapi,
Quarto ei gradus est
in ui sicca, calidaq;

Extrahit humores uiscosos, extenuatq;
Comburit cutem, uis illi 1 est tanta caloris,
Maior uis eius in semine dicitur esse,
Sensus exacuit, cibis eius commouet aluum,
Confringit lapides, urinamq; menstrua purgat,
Si tritam iungas tepidæ 2, uersesq; 3 palato,
Ad solem capitis purgabit phlegma nocuum,
Sternutamentis 4 hoc admiscere salubre est.
Isto nam capitis strictura resoluitur omnis,
Mansum confortat stomachum, suspiria; sedat:
Morsum

Morsum serpentis trito si iungas acetum,
Et superponas tali medicamine curas,
Mansum pestiferos uetat intus ledere & fungos,
Vi nimium feruente cutem comburere dixi.
Sed tamen hec multis est utilis & uestio causis,
Hac oculis & nocuus capitis sedabitur humor,
Et qui distillans pulmonum concaua ledit,
Et stomachi, morbosq; curat, tussimq; phthisim.
Huc per uescicas coxę dolor inueteratus (quę
Elicitur, schiasim quam Gręco nomine dicunt,
Hacq; tumor splenis durus, iecorisq; fugatur.
Et multum causis hec subuenit inueteratis,
Vtile tot causis quoniam cataplasma sinapis,
Sæpius à medicis uariatur conficiendo.
Hoc dicam qualiter fieri iubeat Meniacus,
In mortariolo ꝑ tritum bene pone sinapis
Semen, iungatur panis huic candida mica
Sic, ut tertia pars sit panis iuncta sinapi,
His ficus siccas, & mel iungas & acetum
Aetatis quantum, uel morbi causa requirer.
Nam quo plus ficus siccæ, uel mellis habebis
Ille sinapismus, tanto solet acrior esse:
Debilior, quo plus panis micas & aceti.
Ne tibi sit uilis moneo confectio talis,
Effectum cuius in multis sæpe probaui,
Non tamē hanc iubeo cunctis apponere morbis,
Sed raro, magnis & causis inueteratis.
Plinius in musto cum semine præcipit huius
Radices mergi, sic postquam senserit harum.

Omnem uim uinum, multum putāt esse salubre.
 Faucibus & stomacho potatum, luminibusq;
 Pluribus & capitis dicunt prodesse querelis:
 Infuso 10 faciunt oleum de semine quidam,
 Utile lumborum uitijis, stupidis quoq; neruis:
 Exprimitur succus tenero de caule sinapis,
 Quod sicco mandens dentis tormenta fugabis,
 Vocales uenas 11 semen lenire sinapis
 Mansum confirmant, adipi tundendo uetusto
 Commixtum scrophas dispergit si superaddas.
 Illius fumus multum prodesse caducis
 Dicitur, atq; steræ 12 causas siccando iuuare,
 Cum sicu tritum capiti superaddere raso
 His qui lethargum patiuntur magna medela est,
 Vel si sæpe pedes ungendo fricabis eorum.
 Semen contritum melli coniunge uel uncto,
 Illud alopecias 13 iuuat unguem sæpe fricando,
 Acri cum uino lepras emendat inunctum,
 Hoc quoq; curatur manso periodica 14 febris,
 Antea quàm diri ueniat commotio morbi.

S C H O L I A.

1 **V** Is illi est tanta caloris] id est, causticam uim habet, quam aduratiuam quidam uocant.

2 Tepidæ] aquæ.

3 Ver'esq; palato] hoc est, si eo seminis decocto pro collutione utaris.

4 Sternutamētis] quod est puluerib. naribus insufflādis.

5 Suspiria sedat] à uiscofo humore difficultatem anhelitus proscribit.

Vetat

6 Verat lædere] fungorum coërcet malitiam, qui uentrem inflando disturbare comesti solent, atq; cum anhelitus difficultate quandoq; mortem pariunt.

7 Vtilis uetis causis] De sinapismo loquitur Macer, quem sæpè Dropacem nominamus, aut Dropodismon. Et est rubrificatiuum medicina ex sinapi, seu uesticatoria.

8 Hac oculis nocuus] hic usum & utilitatem dropodismoni ostendit.

9 In mortariolo] quomodo sinapismum arte parare debemus docet.

10 Infuso faciunt] De olei huius confectiōe scribit Auisenna.

11 Vocales uenas] tracheas arterias intelligit.

12 Steræ causas] uuluarum conuersionem seminis tremor excitat, inquit Plinius.

13 Illud alopecias] Alopecia casus capillorum est, à uulpe nomen habens, qui eo item morbo laborat.

14 Periodica febris] id est, interpellata, ex cholera extra uenas putrescente, quæ de tertio in tertium diem manifestè affligit.

Hic DE CAUSIS.



DE CAULE Von
töl oder tabistraut,
Cap. 36.

De caule uel καυλός
Gal. 7. Simp. med. cap.
47. Auic. cano. secun.
cap. 143. Scrap. aggr.
ca. 32. Gal. 2. de Alim.
ca. 143. Dios. li. 2. ca.
111. M. Varro de re rus.
ca. 157. Pli. li. 19. c. 7.

Caulis Ro-
mana, Gre-
corū Bras-
sica lingua

Dicitur, is quamuis 1 passim nascatur in hortis,
Est tamen illius ad multa salutaris usus.

Annis sexcentis usos medicamine caulis
Romanos Cato testatur, medicina 2 priusq;
A medicis Romæ descripta fuisset in usu:
Tunc hortus escas illis dabat, & medicinas,
Vulnera non tantum curare recentia caulem
Ipsemet 3 affirmat, sed quamuis inueterata
Et cancos etiam, loca sed prius amne lauari
Præcipit, aut uino tepido, sic deniq; crudum
Vnaquaq; 4 die his, tritum apponere caulem
Hordea quam dederint cauli miscere farinam
Idem præcepit, tritum quoq; cum coriandro 5
Et sale permodico, sic omnia mixta terendo

Apponi

Apponi diræ docuit cataplasma podagræ.
Hoc etiam morbis medicabitur articulorum:
Hoc quoq; syringas 6 ait, & luxata iuuare,
Atq; superpositum varios sedare tumores,
Illius urinam fuerit qui caulibus usus.
Causis neruorum calefactum censuit aptam,
Hæc ex urina pueri si sæpè lauentur,
Afferit illorum multum conferre saluti.
Hæc narrat de caule Cato, scripsisse libellum
Chrysippum 7 dicunt, huius de uiribus herbæ
Omnes confirmant, caligine lumina tergi
Eius, qui uiridi uescatur caule frequenter.
Auget lac mammis cibus eius; menstrua purgat,
Atq; iuuat stomachū sumptas ut cōcoquat escas.
Si multum coquitur, restringere dicitur aluum,
At semicrudus solet illum soluere sumptus:
Ac sumptus crudus, sic ut tingatur aceto,
Splen reprimat tumidum; semen depellit abortū,
Vino cum ueteri coctos benè contere caules,
His oleum roseum quantum res postulat addas,
Ardores nimios iuuat hæc confectio 8 febris,
Si superaddatur stomacho, membruë calenti
Acri non scissum 9 si mergis alumen aceto
Et caules, sic ut corpus redigantur in unum
Cuncta terēdo dici potes hoc compescere eleprā,
Et plures alias maculas his sæpè perungens.
His etiam crinis poteris retinere fluentes,
Dicitur & testes istud curare tumentes,
Et uarios morbos genitalia quæ patiuntur.

Et

Et melius si prædictis faba cocta iugatur,
 Cum foenu Græco si tundis hanc, & aceto,
 Et super artheticos apponas ista dolores.
 Multum subueniet illis, uicq̃s q̃ podagræ
 Non modicum poterit istud cataplasma mederi.
 Vino cum ueteri caulis cineres bene triti
 Profunt ad ueteres lateris, coxæ q̃ dolores.
 Sic licet hæc uilis, tamen est medicina salubris,
 Si caulis semen mixto potatur aceto,
 Pellere sæpe solet animalia noxia uentris.
 Fit cinis ex siccis caulis radicibus ustis,
 Subditus, hic uuam releuat siccando iacentem:
 Dentibus attriti succum glutire uirentis
 Affirmant rauæ multum succurrere uoci,
 Naribus infusus succus, purgat caput eius,
 Qui prius 10 est caules, uix sentiet ne ebrietatem,
 Euulsam caulis radicem, postea terram,
 Quæ non attigerit, collo Melinius inquit,
 Suspensam uarias uuæ depellere morbos.

S C H O L I A.

Q Vamuis passim nascatur in hortis] licet
 propter sui copiam uilis habeatur. Vilia enim sunt &
 cōtemp̃ta ferre, quæ abundant, sicut his uerbis Oeta
 uius Cleophilus ostendit,

Optima quadriuiō non inueniuntur in omni
 Nobilius quantō rariū omne uides.

2 Medicina priusquam] Vsq̃ ad tempora Catonis Censo
 rij saltem hortorum cura, sine medicis usi fuerāt Romani, sed eo
 dem Censorio suasore ex Græcia denuō uocati sunt, quorū præsi
 dēs

dijs frui sanitate sperabant. Qui tamē, quod Romanos barbaros ducerent, in eos falsa, dolosaq; usi sunt medicatione, & ob hoc unum omnes turpiter ab Vrbe proscripti, eorumq; in locum rationales medici, sicut hoc loco Macer innuit, plantati. Ea pulchrē describit Plinius lib. de re medica 4. cap. 29.

3 Ipsemet affirmat] loco præscripto.

4 Vna quaq; die] Plinius id medicaminis antidotum Castoris nominat.

5 Cum coriandro] De coriandro dictum est cap. 29.

6 Syringas] id est, fistulas, ut prius dictum est.

7 Chrysippum dicunt] peculiarem de Brassica, omnium morborum curas continentem librum conscripsit Chrysippus, auctor est Plinius.

8 Confectio febris] febrium ardores mitigat.

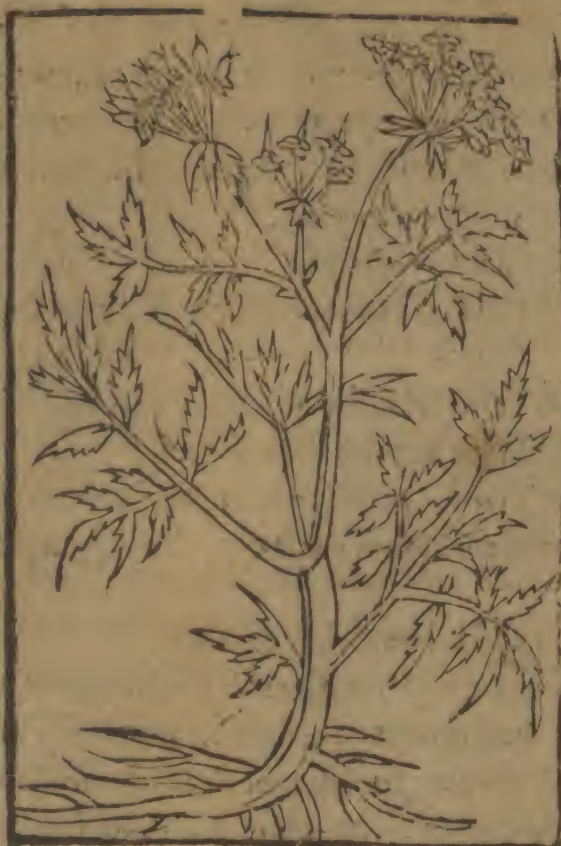
9 Non scissum alumen] Vt differenter scribit Macer, alumen non scissum suæ traditioni infert, innuens utendū esse vel rotundo, quod saccarinū uocant, seu alumine de Roche uel Lipparino. Nam tria genera Cassius Felix capite de passionibus stomachi habet.

10 Qui prius est] id est, qui prius comedit.

11 Non sentiet ebrietatem] Aristoteles Brassicam, quam Iulius Pollux Cramben, Theophrastus raphanum uocat ebrietati obriti, saltē propter suam dulcedinem scripsit: id quod in rei medicæ professoribus notum esse quoq; deprehendimus. Etenim si uinolentia grauati uiderint, mox aduersus euaporantis fumi, ex uini reliquijs, uim panē melle illitum porrigunt, ut percussu malo grassanti obuেনiat dulcedo. de qua re prolixius scriptum habetur in mea tuendæ sanitatis ratione ad medium

fermē tertij dialogi.

DE



DE PASTINACA

ca. Von Pastiney, Gera
lin, oder Mören.

Cap. 37.

De pastinaca uel Σιοα
p^o Diof. lib. 3. cap. 76.
Plin. li. 19. ca. 5. Serap.
agg. lib. cap. 26. Gal.
li. 6. Simp. cap. 105. &
ad Patern. cap. 218. &
lib. 8. simp. ca. 116. Pl.
itē in li. de re med. li. 4.
cap. 32. L. Apuleius li.
de uirtut. herb. cap. 81.

E St pastina-
ca uirtus in
semine tāta

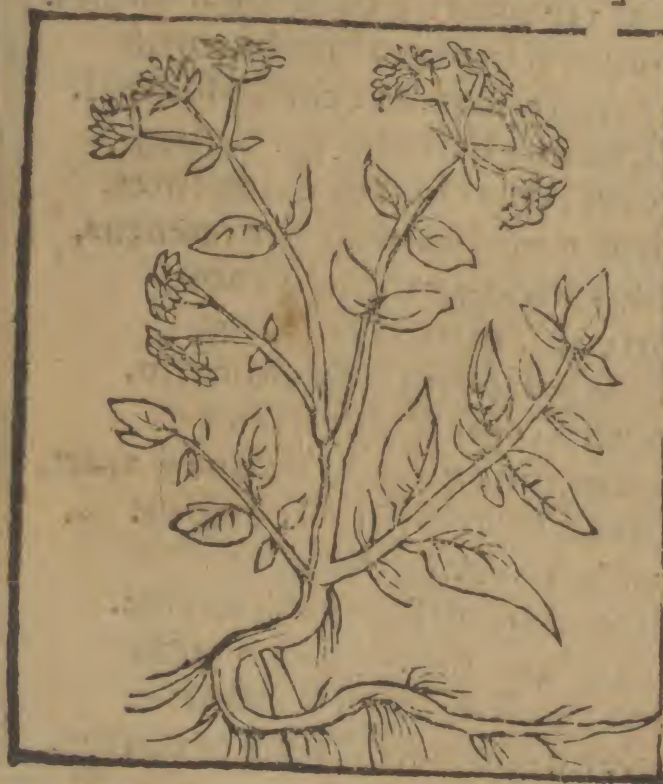
Et radice sua, mulsā si decoquis eius
Radices, multum decoctio proderit eius:
Si potanda datur splenis, iecorisq̃ querelis
Lumborumq̃ iuuat eadem potata dolorem,
Has si lacte coquas, decoctio sumpta iuuabit
Asthmaticos, quāuis ueteres, uentresq̃ fluentes
Radix illius collo suspensa, tumores
(Vt quidam dicunt) compescit testiculorum.
Qui pastinacam fert, aut qui mandidit illam,
Dicitur a nullo serpente posse noceri;

Accent.

Accendit Venerem, si largè sumitur illa,
 Si circum scalpīs dentes radicibus eius,
 Dicunt ingenti persæpè dolore iuuari.
 Ex uino pastinacæ si sperma bibatur,
 Compescit diros, quos scorpion intulit ictus:
 Sic quoq; fœminei & uentris curare tumorem
 Dicunt, quod mulier quasi prægna's esse uiderur:
 Appositum cancris totum cum melle medetur,
 Quod pastum tribuat est pastinaca uocata,
 Namq; cibum nullæ radices dant meliorem.

SCHOLIA.

Sperma bibatur] sperma, id est, semen.
 Fœminei uentris tumores] Molā intelligit, quā



Aegineta magnū
 uentris tumore,
 omnia ueræ im-
 pragnationis si-
 gna ementientē,
 nominat.

DE ORI-
 gano. Von Zwola
 gemuth. kosten.

Cap. 38.

O Riga-
 ni ui-
 res ca-
 lide, sicceq;
 leguntur,
 Ter-

Tertius huic in utroq; gradus conceditur esset
 Illius in uino curat decoctio sumpta,
 Quosuis pestiferos morsus, si sæpe bibatur.
 Cum mulla sumpta prodest aconita i bibenti,
 Sic multis alijs dicunt obstare uenenis:
 Conquassata iuuat mansum, uel sæpius hauustum,
 Hydropicos reprimat bibitum, siccaturq; tumores.
 Cum mulla bibitum cholera deponere nigram
 Dicunt, oxybaphi 2 fuerit si pondere sumptum:
 Menstrua deducit bibitum, uel si superaddas
 Tritum, uel cocta mulier si se fouet herba.
 Illius puluis rufsim cum melle repellit,
 Pruritus, acoras 3 maculasq; cutis fugat omnes.
 In quo decoquitur si sæpius amne lauentur
 In lauacro, iuuat ictericos hæc coctio sumpta.
 Succus prædictæ uiridis si sumitur herba,
 Vuas 4 & fauces 5 curat siccando tumentes.
 Oris uulneribus 6 medicabitur ore retentus,
 Naribus infusus, Irino 7 mixtus oliuo:
 Infusum capiti coget manare cruorem,
 Auribus infusus sedat cum lacte dolorem.
 Hic succus mixtus cepis & rosyriaco 8
 Ponitur ad solem, tunc quando Syrius 9 ardet,
 Sicq; quater denis feruebit in aëre diebus:
 Si supponatur lecto confectio talis,
 Effugat (ut dicunt) animalia cuncta nocua.
 His quibus ex aliquo uitio digestio tarda
 Euenit, ex uino prodest albo: si sumitur
 Cum calida morsus stomachi lenire probatur,

Illius

Illius succos oleo mixtos & aceto
 Succida io lana bibat ii & sic superaddita mēbris
 Laxatis, uel contusis multum iuuat: illa
 Prouocat urinam, lumbricos proicit hausta.
 Dente diu tritum solet inde fugare dolorem,
 Omnia potatus succus iuuat interiora:
 Eius cum succo si carica trita bibatur,
 Sudorem poris producere fertur apertis,
 Appositus coxis succus cum polline farris,
 Harum sæpè grauem pellit reprimite dolorem.

SCHOLIA.

- 1 **A** Conita bibenti] id est, uenena, dollmurtz.
 2 Pondere oxybaphi] Siluaticus oxifabum ha-
 bet, & est ponderis genus, Græcis oxonosos dictum, fa-
 ciens dimidium sextarium.
- 3 Acoras pellit] id est, capitis tubera, quæ aliquibus ptiria
 nominantur, sicut in Galemi libro de facile acquisibilibus legimus.
- 4 Vuas curat] uuulam.
- 5 Fauces tumentes] Branchum intelligit.
- 6 Oris uulneribus] id est, Alcolæ.
- 7 Irino mixtus oliuo] oleum irinum describit Mesue di-
 stinctione duodecima, de oleis, & est oleum de lilio, quod cæleste
 uocant, Blaun gilgen.
- 8 Et ros syriaco] Ros syriacus manna est, teste Simphoriano
 tractat. de febribus, cap. 10.
- 9 Syrius ardet] id est, caniculæ sydus, quod est in centro
 fermè cæli.
- 10 Succida lana] impurgata, uel suis adhuc sordibus repleta,
 qua ad unguentū utimur, quod Esopū humidā nominant medici.

G

ii Bi-



11 Bibat] pro, imbia
bat.

DE SERPYLLO.

Von Quendel, hünér
töl. Cap. 39.

De serpyllo uel ἐρπύλλον
Græcè Diosc. lib. 3. cap.
41. Theophrast. lib. 6 de
plant historia. Plin. de re
med. lib. 4. cap. 38. L. A.
pul. cap. 100.

SErpyllum uete
res dixerunt
quòd quasi ser
pat

Terræ uicinum, huic feruida, siccaq; uis est,
Acricum uino coctum contundis oliuo,
Cui rosa 1 dat nomen, hoc unguine perlue frontē
Aegroti, capitis solet hoc sedare dolorem:
Nidor 2 combusti serpentes effugat omnes,
Et quod uis animal infundens ore uenenum,
Hoc ideo miscere cibis messoribus est mos,
Vt si forte sopor fessos depresserit illos,
Vermibus à nocuis turò requiescere possint.
Pestiferos morsus bibitum iuuat, appositumq;
Prouocat urinas, compescit tormina uentris:
Splen iuuat admixto si sæpè sumatur aceto,

Si

Si mel prædictis iungatur, sputa cruenta
 lactantes, mirè potus solet ille iuuare.
 Haustum cum uino iecoris sedare dolorem
 Dicitur, hicq; solet producere menstrua potus.

SCHOLIA.

C¹ Virosa dat nomen] oleum rosaceum intelligit.
² Nidor] id est, cremor.

DE VIOLIS. Von Violaten, Mertzgen negelin.



De uiolis uel *νεκτοίς* Gal. lib. 6. Simp. cap. de uiolis, Mesue in
 lib. de simp. med. cap. 90. Serap. lib. aggreg. cap. 141. Plin. lib. 21.
 cap. 6. Diosc. lib. 3. cap. 129.

N Ecroseus superare decor, nec lilia possunt
 Fragrantes uiolas specie, nec ui, nec odore:
 Dicitur humida uis illis, & frigida primo
 Esse gradu, species tres esse leguntur earum,

G 2 Noscere

Noscere quas tantum diuerso flore ualemus.
Nam sunt purpurei flores, albiq; & nigriq;
Cunctis penè pares sunt in medicamine uires:
Inflammata iuuant loca, tritæ si superaddas
Crapula discutitur bibitis, capitisq; grauedo:
Olfactum solo, uel si caput inde coronas
Anginis & potæ medicantur aquæ resolutæ.
Purpuream uiolam dicunt curare caducos,
Præcipuè & pueros, si mixto sumitur amne:
Radices uiolæ cum myrrha tunde, crocoq;
Hæc inflammatis oculis apponito nocte:
Contritis folijs uiolæ cum melle perungens,
Vlcera sanabis capitis si iungis acetum,
Et cataplasma facis, cedit collectio quæuis:
Illius curat elixatura tumorem
Matricis tepida si sæpè fouebitur illa.
Ani fissuras quas appellant & ragadias,
Addita ceratis medicatur sæpè perunctis,
Pustula si fuerit, melli superadde iugata:
Illius semen cum uino, menstrua purgat,
Tritæ cum mixto radices eius aceto:
Splen siccans bibitæ, uel spleni si superaddas,
Hocq; modo calidam dicunt sedare podagram,
A' stomacho cholera rubeam potata repellit.
Herba uirens uiolæ, uel flos, siccus ué, recens ué,
Morbos de cholera rubea, uel sanguine factos
Mollibus in costis, aut in pulmonibus ipsis
Sedat, si mixto potabitur amne recenti:
Infantum tussim, sic & suspiria sedat,

Ex

Ex uiolis oleum sicut de flore rosarum
 Conficiunt, multis quod dicunt utile & causis:
 Auribus infusum, sonitum fugat atq; dolorem,
 Et capiti prodest, quocunq; dolore laborat,
 Leniter in frigidans, corpusq; sopore resoluens.
 Lumbricos necat infusum, bibitū, uel inunctum,
 Et capitis furfur & oleo depellitur isto,
 Os capitis ictu fuerit si fortè plicatum
 In tantum ut lingua patiens amiserit usum.
 Fac prius hanc uiolam cum uino sumere tritam,
 Postea si fuerit capitis pars dextera læsa,
 Contritam plantæ pedis hanc adnecte sinistri,
 Atq; econuerso facias si læua plicata est.
 Os resilit, linguæq; die redit usus eadem,
 Vt iustus tradit medicus, qui talia scripsit,
 Altera uis uiolæ fertur mirabilis esse:
 Albæ si uiolæ radix teneatur in ore,
 Et transglutitus sic succus sæpius eius,
 Vulneris immodicū tradunt mox sistere fluxum.
 Hanc liquiritæ tradit uim Plinius esse.

SCHOLIA.

- 1** **A** Lbiq; nigriq;] Per nigros, luteos intelligit Macer,
 Arabum lingua teiri nominatos, uulgo gāle negelein.
2 Anginis potæ] per anginā *αὐαρχλω*, quæ fau-
 cium seu gutturis tumor est, intelligit.
3 Præcipuè pueros] Hunc caducum morbum, quo subina
 de pueri laborant, quidam infantilem nomināt, & Auicenna pro-
 prio capite matrem puerorum,

G 3

Raga-

4 Ragadias] Ragadia sunt in ano fissura, uel à complexionē sicca orta, uel ab humoribus acutis, aut medicinis baurachijs inflata. Sic Ioannes Math. de gradibus in 9. ad Almanforem.

5 Vtile causis] ad quæ oleum cōducatur uiolarum Mesue scribit antidotarij distinct. 12.

6 Et capitis furfur] squamulas capitis innuit.



DE ARISTOLOCHIA. Von Holzwurtz. Osterlucey. Cap. 41.

De apisonoxia. lib. 6. simp. cap. 3. Auer. simplicium cap. Aristol. Theoph. 9. de plantar. histor. Diosc. lib. 3. cap. 4. Serap. lib. agg. cap. 171. L. Apul. lib. de uirt. herbarum. cap. 19. Plin. lib. 25. cap. 8.

Aristolochiæ 1 species tres 2 dicimus esse, Longa prior radix est, cuius lōga uocatur: Dicta rotunda sequens, quod sit radice rotunda,

Tertia Clematis Græco sermone uocatur: Viribus hæc penè par dicitur esse rotundæ.

Omnes

Omnes uim calidam, siccamq; leguntur habere,
In primo uis sicca gradu, feruensq; secundo est:
Pestiferos morsus cum uino sumpta rotunda
Curat, & assumpris prodest sic hausta uenenis:
Hocq; modo tardas educit sumpta secundas,
Cū pipere & myrrha putredine mūdat ab omni.
Post partum potata sterās, uel subdita tantūm
Asthmaticis prodest, & frigora sumpta repellit;
Pleureticos 3 curat, mixta si sumitur amne.
Quodlibet infixum superaddita trita 4 repellit,
Vulnera cum mellis purgat, repletq; liquore,
Quod si prædictis irim 5 coniungis, & inde
Vngas gingiuas, dentesq; putredine purgas.
Splenis duritiā soluit, laterisq; dolorem,
Si mixta potatur aqua, febresq; malignas
Hoc potata modo fertur compescere mirè.
Sic etiā spasmis 6 super omnia subuenit hausta,
Et sedat diram sic sæpius hausta podagram,
Et morbum curare solet sic sumpta caducum,
Et uentris nimium sic mitigat illa dolorem.
Sic quoq; fit sumpta leuior paralyticus 7 illa,
Dæmonium fumus depellere dicitur eius:
Infantes fumo dicunt hoc exhilarari,
Fistula 8 curatur huius radicibus herbæ:
Si benè purgatis eius loca concaua 9 farcis,
Singultus 10 sumpta sedari dicitur illa:
Omnia longa potest, quæ dixi posse rotundam;
Longa tamen uires habet illa debiliores,
Vnde quidem si defuerit quandoq; rotunda,

Par pondus longæ ponatur dimidiumq;
 Fomento longæ prodest decoctio miræ.
 Matricum morbis humores extenuando
 Pingues & purgat, eadem si sumitur, illas:
 Plinius hanc formare mares cum carne bouina
 Appositum uulug postquam conceperit, inquit,
 Trita necat pisces admixta calce rotunda:
 Hanc ideo quidam in terræ dixere uenenum.

SCHOLIA.

- 1 **A**ristolochie species] Dicta est aristolochia, quod optima puerperis sit, & menses remoratos, hærentes secundas, & reliquias omnes sua ui sedulo proscribat.
- 2 Tres dicimus esse] Duas aristolochias in nostris usitationes habemus officinis, rotundam, quæ fœmina est: & longam, quæ masculus: tertiam Clematitim uel sarmentariam folijs ferme rutaceis, quia nec passim, nec omnibus obuia, negligimus.
- 3 Pleuriticos curat] de his dictum est.
- 4 Trita repellit] attrahendo.
- 5 Irim coniungas] radicem ireos, von blaumen gilgen.
- 6 Spasimis] contractionibus neruorum.
- 7 Paralyticus] παράλυσις neruorum resolutio dicitur.
- 8 Fistula curatur] de fistula dictum est.
- 9 Concaua farcis] replet.
- 10 Singultus sumpta] Sunt in singultuum genere, qui repletionem oriuntur, inanitione & croso, ab acrioribus stomacho: uulgo der nössch oder gluer.
- 11 Hanc ideo quidam] Plinius quippe lib. 25. cap. 8.

D B



DE MARRV

bio. Von Andorn.

Apffeltraut.

Cap. 42.

DE marrubio uel

Βαμβύκη ἢ πρασίφ

Diosc. lib. 3. ca. 10.

Theoph. libro 6. de

plant. histor. Plin. lē

bro 2. cap. 22. & L.

Apuleius lib. de uirg

tut. herb. 45.

MArrus
biū no
stri di
xerūt, Prasion

Argi,

Hāc herbā me

dici calidā sic

cam'q; secūdo

Dicūt esse gra

du, decoctio totius herbæ

Seminis aut eius, pthificos mirè iuuat hausta:

Pectoris hæc uarios compescit potio morbos,

Et melius prodest illi si iungitur iris,

Asthmaticos sic sumpta iuuat, rursim'q; repellit.

Accelerat partus eadem, pellit'q; secundas,

Si mel marrubio iungatur, uulnera purgat:

Hoc'q; modo curat quæ rodunt i ulcera carnem.

Dicitur hoc bibitum lateris sedare dolorem,

G

5

Omni-

Omniſus his ſuccum ſiccatus proderit eiꝯ:
 Illius ſuccus cum uino melleꝯ ue mixtus,
 Prodeſt luminibus caligine debilitatis:
 Siciuat iſtericos, iniectꝯ naribus idem,
 Auriculæꝯqꝯ grauem dicunt curare dolorem.
 Hunc mixtum roſeo ſi fundas intrus oliuo,
 Vſum marrubij non dicunt eſſe ſaiubrem
 His qui ueſicæ morbo, renumꝯqꝯ laborant.

S C H O L I A.



Q Væ rodūt
 ulcera] her
 pen eſthiome
 num, ſiquidem qui ſerpit, &
 ad oſſa rodit, perfectè cu
 rat: talia Celfus theromata
 nominat.

DE IRIDE. Von
 Blawgilgen, Violmurtzen.
 Cap. 43.

DE Irīde Dioſcorides li.
 bro 1. capite 1. Plinius lib.
 21. capite 7. Aegineta lib.
 7. & Galen. ſimpl.

Iri dat

Iridar florum nomen color ipse suorum,
 Cœlestis similes sunt nempe coloribus iris,
 Illyricam dicunt illam, quia plurima nasci
 Fertur in Illyria, uis eius sicca, calensq;
 Dicitur, atq; gradum dāt huic in utroq; secundū;
 Maior uis huius est in radicibus eius,
 Has desiccandas per frustra rotunda secaras,
 Sicut se partes non tangant, insere filo:
 Inq; loco sicco fac suspendantur in umbra,
 Vix aliter torum poteris siccare per annum.
 Cum uino sedant rursim, præbentq; soporem,
 Si latitans intus sanies præcordia lædit,
 Pellitur illarum cum uino puluere sumpto:
 Cum mulsa bibitus choleram depellit iniquam,
 Termina cum mixto bibitus sedabit aceto,
 Hocq; modo sumptis dicunt prodesse uenenis,
 Spleni contractis & quouis frigore læsis.
 Cum uino bibitus puluis medicabitur eius,
 Hocq; modo sumptus tardantia mēstrua purgat,
 Duricias stericas radicum coctio mollit,
 Si subtus tepida foveantur sæpius illa:
 Hæc cum clysterio si sit subiecta per anum,
 Non modicum schias dicunt prodesse dolori.
 De radicibus his mixto collyria i melle
 Fiunt, quæ uulux pellunt subiecta secundas,
 Inq; locis hæc fixa cauis syringia 2 curant:
 Commixtus melli desiccatur uulnera puluis,
 Carneq; nuda replet, si sit superadditus, ossa
 Pulueris hellebori pars tertia iungitur illi

Iris

Iris radicū tenui cum puluere duplo
 Puluis uterq; simul commixto melle ligatus,
 Hoc superappositum purgat caligine uultum,
 Et papulas ³ eius istud cataplasma repellit.

S C H O L I A.

C Ollyria melle] id est, pessaria hoc collyrio inuncta.
² Syringia curant] fistulas intelligit.
³ Papulas eius] furunculos.



DE ENULA,
 Von Alantwurtz.
 Cap. 44.

DE Enula uel Elna
 Aeginetq; libro 7.
 Plinius libro 20. ca-
 pite 5. Dioscorides li-
 bro 1. capite 27. Co-
 lumel. lib. 13.

E nula quā uul-
 gus Elnā uo-
 cat, eliniūq;
 Dicitur à medi-
 cis, est forma
 cognita cun-
 ctis:

Humida uis eius, & feruida dicitur esse,

Humor

Humor habet gradum primū, feruorūq; secundū
 Dicitur, illius decoctio menstrua purgat:
 Si bibitur mouet urinam, depellit abortum.
 Dicitur hæc eadem stiparum soluere uentrem:
 Radix trita fugat schiasim superaddita coxæ,
 Ex eius folijs cum uini nectare coctis,
 Mirè i nephreticis renes inuoluere prodest.
 Eius radicum puluis cum melle uoratus
 Tussim compescit, orthopnoicisq; 2 medetur:
 Cum succo rutæ succus si sumitur eius,
 Affirmant ruptis quod profit potio talis.

SCHOLIA.

Mirè nephreticis] id est, calculosis.
 2 Orthopnoicis] ὀρθοπνοία defectus est, quā
 nisi erecta ceruice, spiritum ducere admittit.



DE HISSO
 po. Von Kirchēisop.
 Isopen. Capi-
 te 45.

DE Hissopo uel ὕσσωπος Plinius lib. 25.
 cap. 11. & libro 26.
 cap. 11. Diosc. libro
 3. cap. 27. Aegin. lib.
 7. Dinus super Mesa
 ue Alhasce uocat:

Est

E St hyssopum siccū, calidū quoq̃, tertius illi
Est utroq̃ gradu, eius decoctio facta
Sic, ut cocta simul sint mel: ficus quoq̃ sicca
Prodest nō modicū patientib. hausta catharrum
Subuenit & uoci raucae uersata palato,
Et prodest cunctis pulmonum sumpra querelis.
Lumbricos uentris eadem potata repellit,
Impetus & capitis, si distillatio fiat,
Quæ persæpè solent tussim, phthisimq̃ creare,
Prodest hæce eadem decoctio sumpta frequenter.
Omnibus hic prodest puluis cum melle iugatus.
Contrito uiridi, si iungitur oximel illi,
Sicq̃ datur bibicum, stipatum molliet aluum:
Potio si uiridis, uel sicci sæpè bibatur,
Vultibus eximium fertur præstare colorem,
Cum uento nocuo uiscosum phlegma repellens,
Carthama 2 si iungas his, solues fortius aluum:
Cum nitro, & ficu sicca si conteris ipsum,
Et superponas spleni cataplasma tumenti
Hydropicis ue solet siccando repellere morbum.
Cum uino bibicum præcordia 3 tensa relaxat,
Et quicunq̃ nocet tumor interiora, recedit:
In quo decoquitur, si dens foueatur aceto,
Fertur ab immodico citò sæpe dolore leuari:
Accenso fumo sonitus compescitur auris,
Elixum appositum humores lymphidar omnes.
Sic iuuat istericos iniectum naribus idem.
Auriculæ dicunt grauem curare dolorem,
Hoc mixtum roseo si fundis intus oliuo.

Catharrum]

- 1 Catharrum] id est, rheuma defluens à capite.
- 2 Carthama si iungas] si crocum iunxeris hortensem.
- 3 Præcordia tensa] de his dictum est antea.

DE ASARO. Von Haselmurtz.

Cap. 46.

De ἀσάρῳ Dioscor. lib. 1. cap. 8. Plutarch. cōiuiorum lib. 3.
Plin. lib. 21. cap. 6.

E Stasarum Græcè, uulgago dicta latine,
Hæc calidæ & siccæ uirtutis dicitur esse,
Tertius est illi gradus, ut dicunt, in utroq;
Prouocat urinam, potataq; menstrua purgat,
Hocq; modo iecoris medicatur sumpta dolori.
Hydropicosq; iuuat, schiasim fugat hausta fre-
quenter,

Et uulgi morbis decoctio subuenit eius.
Dicitur ictericum potata repellere morbum,
Helleboriq; modo uomitu præcordia purgat,
Sed non est huius purgatio tam uiolenta.
Hæc metuenda quidem, si fiat taliter illa,
Ætatem 2 & uires eius circumspice primum,
Quem purgare uoles, & tempus 3 quale sit anni,
Etsi sit regio feruens, uel frigida ualde,
Aut si temperiem mediam tenet inter utranq;
Nam senibus, puerisq; 4 parum donare licebit,
Ætatis mediæ plus his, iuuenesq; requirunt,
Pinguibus & ualidis 5 plus dandum q; macilentis,
Debilibusq; uiris, magis in gelida 6 regione
Dandum quam calida, duris 7 quocunq; labore
Plus illis 8 tribues, quos reddunt ocia molles.

Hæc

Hæc circumspiciens, & cætera talia tractans,
Non solū tutus dabis hanc, sed quaslibet herbas;
Quæ purgant uomitu, uentrem stomachum'ue
resoluunt.

Sed quia de cunctis dixi communiter herbis,
Quo sit danda modo proprie uulgo docebo.
De folijs eius triginta recentia tollens,
Adde meri tantum, quo possint cuncta recondi:
Tota nocte mero facias macerentur in illo,
Manè teres, uino quo sunt macerata, resolve,
Tunc olus excoctum cum pingui carne recenti
Porcina, prius ægroto da sufficienter:
Et sumat uini quantum uult fortis & albi,
Sic asari succum colatum trade bibendum,
Fortibus & magnis est hic numerus foliorum
Subijciens, reliquis (ut diximus) minuendus
Iuxta quod uires, æstas & cætera poscunt.

S C H O L I A.

ET uulug morbis] id est, matricis.
2 Aetatē & uires] Quæ medici speculatiuo in phar-
maci administratione cōsideranda sint autor scribit: ætas
quippe, uirtus, tempus anni, regio, & artificium. Quæ omnia per
principem cum annexis quarta primi, quinto capite quoq; descri-
buntur. Circa quæ tamē facile constabit, quū hominē nouerimus
(ut Galenus ait) non lapidem, non corium, nec lignum, sed diuini
num quoddam miraculum fermè adorandum ut Plato ait in lib.
de Legib. non sic præcipitāter, sineq; iudicio in quenuis, harū con-
ditionum neglecta cōsideratione grassandum, uelut circūforanei
medici

medici solent, ambubaiæ, præstigiatores, agirtæ, triobulares, uetulae, patibularij, lictores, & hinc inde ambulantes radicularij, qui omniū semoto examine pari tempore, consimili ætate, quauis regione, uirtute constante & non constante, duris aruificijs & mollibus assuetis, minusq; assuetis, uiri quoq; sexui, una eademq; dosi diram Ezulam, Mezereon, asirinos cucumeres, nucem Methel, & alia huius turbulentæ sentinæ, seu fecis potius, administrant: diudicantes triumphasse, si malè affectos peius habere fecerint, & miriades sedium per inferna extorserint, nescij uerborum Hippocratis, qui primò separatorum sermonum 25 Aphorismo deiectiones non secundum multitudinem æstimandas præcipit, parui quantum faciens, sed quale pluris.

3 Et tempus quale sit anni] Eadem Hippocrates docet quarto Aphorismorum, Sub cane & ante canem molestæ sunt purgationes, inquit: & Auicenna, qui, Scito inquit, quòd tēpus quo sumenda est medicina, non est tempus uehementer calidum, neq; frigidum: quarta primi, 5. cap. Causas eleganter subiungit Galenus in commento Aphor. perallegati.

4 Nam senibus, puerisq;] Macer subscribit Auicennæ, qui annum 60 excedentem, & 14. non attingentem, à solutionibus deterret, quarta primi, cap. 5.

5 Validis, debilibusq;] Diligenter secundum rationem facienti contemplandum est, an uictus euacuationi consentiat, uel eam ex toto respuat, aut secundum quantitatem limite, id quod Auicenna quarta primi quoq; monet, quando ipsam dextro oculo inspiciendam hortatur, uitalem intelligens.

6 Magis in gelida regione] Cur in calida regione dosis medicinarum solutiuarū frugalior exhiberi debeat, causam Princeps quarta primi pulchrè docet, inquit: ut plurimum ea, quæ

H uentrem

uentrem soluunt, calida esse, & sic naturam duarum acuitatum
coniunctionem ferre non posse, quòd indiuidua inde reddatur de-
biliora, & magis dissoluta. Quod Macer hic scribit, & Vlsenius
hoc disticho facit:

Climata distinguo, gelidum fortem medicina

Sustinet, in calida sæpe pusilla nocet.

7 Duris quocunq; labore] Minus dandū est multi exer-
citij hominibus aut laborantibus, quòd superfluitates per diapho-
resim, uel sudoris exuberantiam euanescent. unde idem Vlsenius
in suo de reſta pharmacandi ratione compendio sic:

Namq; laboranti non sunt bona pharmaca, uerū

Vltima si fuerit hæc habitudo, dabis,

8 Plus illis tribues, quos] Qui ocio fruuntur, superflua
tatibus in quali, & quanto abundant, quas ad benignum naturæ
nec per resolutionem, nec per euacuationem

suam reducere potest, unā plus illis

dandum Macer hoc

tatur.

DE

DE MENTHA.

Von Krausmüntz.

Cap. 47.

De mentha uel eduo
 uē Serap. 298. Gal.
 ad Pater. 281. Galen.
 lib. 7. Simp. cap. odio
 simum. Dioscor. lib. 3.
 cap. 36.

Vlm calidā
 siccāq; gra
 du fert mē
 tha i secundo,
 Illius poru uis di
 gestua iuuatur:
 Cōfortat itoma



chum, uomitum quoq; derinet hausta,
 Lumbricosq; modo depellere fertur eodem,
 Diuersis morbis occurrit testiculorum.
 Si foueantur aqua, qua menthæ cocta sit herba,
 Concretum soluit lac mammis addita trita.
 Instillata fugat auris cum melle dolorem,
 Aperitas linguæ fugit illa sæpè fricata:
 Haustoq; cum sapa partum solet accelerare,
 Trita canis morsum superaddita cum sale curat.
 Hæc hæmorrhoidis mixto succurrit aceto,
 Matrici succus si subditur illius ante
 Quàm fiat coitus, mulier non concipit inde.
 Caseolos & succus putrescere non sinit eius
 Admixtus, uel si uiridis superadditur herba.

H 2 SCHO:

Fert mentha] Theophrastus non alio quàm minthes nomine pluribus locis mentham uocat.

2 Caseolos succus] Dioscorides lac coire, & in caseū densari menthæ folia non permittere scribit, loco perallegato, putredinis immentor.

DE CYPERO. Von Wildergalgen.

Cap. 48.

De Cypero Plin. lib. 21. cap. 18. Celsus lib. 3. cap. 21. Diosc. lib. 1. cap. 4.

Vim cypero medicī calidam siccāq; secundo
Dicunt esse gradu, potu depellitur eius
Calculus, urinæ purgat, laxatq; meatus.
Dicit Apollodorus: quod pellere possit abortū,
Si mulier foueatur aqua qua coxerit illum:
Afferit hic idem consumere posse lienem,
Illius fumus si sæpius ore trahatur.
Si se sanus homo fumo suffumiget illo,
Dicit eum fieri firmum magis & leuiorem:
Subuenit illarum uicis admixtus oliuo
Succus, sic uicium fugat intertriginis & unctum,
Humores nimios depellit sæpius haustus,
Istius solus puluis, melli'ue iugatus,
Vlcera mirificè, uel uulnera putrida purgat,
Præcipue puluis hic ulceribus ualet oris,
Si bibitur stomachum confortat debilitatum:
Hydropicis multum succurrit sæpius haustum,
Atq; per urinas humores purgat aquosos:
Contrito ualidum cypero si iungis acetum,
Vlcera

Vlcera quæ serpunt cohibes medicamine tali.

S C H O L I A.

Dicit Apollodorus] hunc ex Plinio citat.
 2 Viciū intertriginis] Intertrigo scabiei species est, longius ac profundius ad membra serpens.

DE PÆONIA. Von Beningnen Rosen,
 Gichtwurtz, Benediclen Rosen.

Cap. 49.

De Pæonia uel Πονυοειδης Auic. 2. cano. ca. 562. Serap. agg. ca. 41. Plin. lib. 25. Dioscor. lib. 3. cap. 148. Galen. 61. Simplic. cap. 101.

Pæoniam medici calidam, siccamq; fatetur,
 Hancq; tenere gradum dicunt in utroque secundum,

Splen, iecur, & renes cum mulsâ sumpta iuuabit:

Si iungatur ei uiolenter amygdala trita,

Menstrua sic purgat, & fluxum detinet alui:

Illius in uino decoctio sæpius hausta,

Vesicæ duros sedat sic sumpta dolores,

Eoscotolim: sic illa iuuat, stomachiq; dolorem,

Calculus infantum potu depellitur eius:

Nephreticos eadem multum iuuat, ictericosq;

Pressuras: inferre solent insomnia nocte,

Pæoniæ semen bibitur, sic sæpius arcet.

Illius radix pueris suspensa caducis.

Nō modicū prodest, uelut asserit ipse Galenus,

Quendam se puerum narrat uidisse caducum,

Aetas cuius erat annorum circiter octo,

H 3 Pæoniæ

Præonia puer hic radicem ferre solebat
 Appensam colle, quadam uice concidit illa:
 Moxq; puer recidit, solito quo more ligata,
 Protinus euasit: rem uero probare Galenus
 Hanc plene cupiens, radicem denuo dempsit
 De collo pueri, cecidit, uiguitq; resumpta,
 Cognita uis herbar fuit huius sic manifesta.
 Ipse Dioscorides & cunctis ait esse caducis
 Aptam, si bibitur, uel si suspenditur illa:
 Seminis illius ter quinq; rubentia grana
 Cum uino fluxum matricis sumpta coërcent.
 Nigra solent uarios matricum pellere morbos,
 Si totidem dantur, cum uino nocte bibenda.
 Huius sunt geminæ species, mas & dicitur una,
 Altera quæ minor est species, est foemina dicta.
 Radix maioris est palmis longa duabus,
 Grossaq; ceu digitus, radix diuisa minoris
 Dicitur in plures radices: hæc bene purgat
 Post partum potata steram uino sociata,
 In cunctis reliquis similis uis dicitur illis.

S C H O L I A.

E T scotosim] id est, subitam uisus tenebrositatem, quæ
 apoplexiæ affeclam medici dicunt.

2 Pressuras inferre solēt] has Ephialtas uocāt, et
 à cōtinua emergūt crapula, seu stomachi cruditate, sic ut dormiē
 tes ad motū & sensū torpidi ferri uideātur, suffocationi habiles.

3 Affe

3 Afferit ipse Galenus] libro 6. de simplici medicina,
cap. 101.

4 Ipse Dioscorides] lib. 3. cap. 140. Addit Guainerius ra-
dicem caducis non solum non utilem, sed item nociuā, si non crua-
tur luna decrefcente.

5 Mas dicitur una] Ea ratione in plantis & herbis masculos & feminas esse dicimus, ut quæ herba maioris est uirtutis, masculus sit: quæ minoris, femina. Ex quibus & Plinij illustratur locus lib. Nat. hist. 13. quando inquit: Rerum naturalium scriptores arboribus & omnibus quæ terra gignit, utrumque sexum accommodant. Contrà Aristotelis decreta, qui libro de Animalium generatione primo in ijs marem à femina non separari scribit.

DE BORAGINE. Von Buretsch.

Cap. 50.

DE borragine uel Βορραγόνη Constantinus in lib. de gradibus medicin. Platear. lib. de Simpl. med. cap. 4.

H Erbam quam Græci dixerunt melisophyton,
lon,

Borragam nostri dicunt uulgariter illam:
Præ cunctis apibus gratissima dicitur herbis,
Nec gaudere magis ullius flore uidentur.
Contritīs folijs apium si uasa perungas,
Non fugient, melius quæ facis si lac sibi iungas.
Vnguinē cultores retinent examina tali,
Auxilium præsens apium fert ictibus illa:

H 4 Ictus

Lætus detrita tegitur si protinus herba,
 Hocq; modo quos uespa nocet, uel aranea curat.
 Trita solet ueteres compescere cum sale strumas,
 Hocq; modo uicij dicunt succurrere fœdis.
 Fœmina purgatur decocto cum sale succo,
 Tali discutitur inflatio noxia potu,
 Eius si uiridis decoctio sæpè bibatur:
 Antiquos dysentericos iuuat & ciliacos, 1
 Astmaticis eadem prodest, orthopnoicisq;
 Vlcera depurgat, morbos leuat articulorum.
 Herba canis morsus superaddita cum sale curat,
 Eius fomento decoctio menstrua purgat:
 Ore retenta solet dentis sedare dolorem,
 Lumina purgari caligine Plinius 2 inquit,
 Eius si succo fuerint cum melle peruncta.

S C H O L I A.

1 **I** Vuat Ciliacos] κοιλιακοί uocantur, qui aluum indur-
 tam habent, quæ nihil reddit, ac ne spiritum quidem trans-
 mittit.

2 Plinius inquit] libro 21. cap. 20. & lib. 25. cap. 13.

D E



DE SENE-
tione. Von Grinda-
traut, treutzmurtz.
Cap. 51.

De senetione uel
ἡρίγιον Diosc. lib.
4. cap. 92. Theop-
hrastus in lib. 8.
de plantis, Gal. lib.
8. Sim. ca. 100. Se-
rap. agg. cap. 323.

E Rigeron
Græc,
nos Se-

necion uocitamus,
Quod canis i similis uideatur flore capillis:
Nascitur in muris, & in hortis, & in tabulatis:
Illius herbæ uis frigida dicitur esse,
In medicinali radix non ponitur usu.
Flores cum folijs tundens in fundito uini
Permodicum dulcis, & sic tepesacta tumori
Hæc simul apponas ani uel testiculorum,
Addito thus istis, neruos & uulnera quæuis
Curabis facile posito cataplasmata tali.
Hæc eadem triti facient eius capitelli
Potari prohibent: quia suffocare bibentem
Quidam confirmant, at contra Plinius 2 autor,

H 5 late-

Ictericis quondam potum donasse salubrem,
 Cum uino dicit, talique modo medicari.
 Morbis uesicæ plures ait ille probasse,
 Et cordis ticijs illam, iecorisque dedisse:
 Torminibus quoque cum passo, iuuisseque potu.
 Hoc uarios morbos præcordia, quæ patiuntur,
 Et uiridis facit hæc si tincta uoretur aceto.
 Trita solet duras cum sale spargere strumas.
 Hanc circumscriptam si quis fodiat sine ferro,
 Et tangat dentem uicibus tribus inde dolentem,
 Vnaquaque spuens uice, opusque reponat eodem,
 Quo fuit orta loco, sic rursus uiuet ut herba,
 Plinius ut dicit, non amplius ille dolebit.

SCHOLIA.

Quod canis similis] Plinius hoc habere nomen
 inquit, quod uerè canescat.

2 Plinius ut dicit] Plinius lib. 25. cap. ultimo.

DE CHE.

DE CHELI
donia. Vō Schöl
wurtz, Schwalbē
kraut. Cap. 62.

De Chelidonia
uel *χελιδωνία*
Plin. li. 25. ca. 8.
Cōstant. li. de gra
dib. ca. de quarto
gradu. Dios. li. 2.
ca. 172. & Plin.
li. 8. cap. 28. The
oph. de plātis lib.
8. Gal. 8. Simp.
cap. 172.



E Sfe che
lidonig

species geminæ referuntur

A' medicis, species est maiora prima uocata:

Altera uerò minor i oculis medicatur, utraq;

Cæcatis pullis hac lumina mater hiruado

(Plinius ut scripsit) quamuis sint eruta, reddit:

Hanc nasci & dicunt auibus uenientibus illis,

Et desiccati solito dum more recedunt:

Indeç nomē habet chelidonia. namq; chelidon

Dicitur hæc uolucris Græcorum more uocari,

Florentis succus cum melle coquatur in ære

Ignē leui, spumam donec proieceris omnem,

Et quasi crassiciem mellis decoctio sumat:

Vtilius nullum dicunt oculis medicamen.

Quos

Quos caligo nocet si sint hoc sæpè peruncti,
 Conteritur iuncto sibi radix eius aceto,
 Et sic ictericis cum uino sumitur albo.
 Dentis ut affirmant prohibet contrita dolorem,
 De folijs eius contusis si cataplasma
 Cum uino fiat, maculas abstergere dicunt.

SCHOLIA.

1. **A**ltera uero minor] hoc Græci χηλιδόνιον μινρόν
 nō minant, Latini scrophulariam minorē, quōd strumis,
 quas Græca imitatione scrophulas uocant, medeatur;
 uulgò Feigwartzen oder plater kraut, uel pfaffenhöldlein.
 2. Hanc nasci dicunt] & inde Chelidonium uocatū Theo-
 phra. lib. de Plantis 7. cap. 14. scribit.



DE CENTAU-
 rea. Von Tausentgula-
 den. Cap. 53.

De Centaurea uel χεν-
 ταυρία Serap. agg. cap.
 34. & 35. Gal. 7. Simp.
 cap. 16. & 17. Auic. 2.
 can. cap. 102. Dios. lib.
 3. cap. 6. & 7. Theoph.
 lib. 9. de plātis. Item Ga-
 len. ad Papiam de Cen-
 taureo singularem librā
 conscripsit.

Sunt cētaureę 1
 species, maior
 quę, minor q̃,
 Vt

Vt supra dictis dixi de pluribus herbis:
 Sed quia perpauca species est cognita maior,
 Hanc prætermittens vires narrabo minoris,
 Quam notam cunctis credo vulgaribus ipsis,
 Desiccatiuæ uirtutis creditur esse:
 Non modicum plagas conglutinat inde recētes,
 Inq̃ cicatricem ueteres superaddita ducit.
 Illi qui schiasim patitur decoctio mirē
 Prodest, illius si sit subiecta per anum:
 Sanguine ⁊ detracto sedat mox illa dolorem,
 Fomento neruis eadem medicabitur ægris.
 Illius succus deducit menstrua sumptus,
 Pellit abortiuum, medicamina cuncta maligna:
 Cum uino sumptum dicunt purgare per aluum,
 Melle sibi iuncto caligine lumina purgat:
 Illius exprimitur autumnī tempore succus,
 Quem desiccatum feruenti sole reponunt,
 Ad tales curas, quas diximus esse salubrem.

SCHOLIA.

- 1 **C**entaureæ species] à Chirone Centauro hac herba dicta est centaurium. Nam ea multos in Thessalia medicus curauerat.
- 2 Sanguine detracto] per phlebotomiam.

DE COLUBRINA. Von Natermurtz.

Cap. 54.

De colubrina siue *σπανονθι* Dios. lib. 2. cap. 155. Theoph. lib.
de Plant.

de Plant. 8. cap. Plin. 24. cap. 16. Aegineta lib. 7. Simp. L. Apuleius de herbarum historia cap. 11.

HErba Dracontia Græcorū quā uocatusus,
 Hæc eadē uulgi lingua colubrīna uocatur,
 Quod colubro similis maculoso corpore
 Ex quib. antiquis expertū credimus esse, (surgat:
 Quod queat à simili colubrīna uenena fugare,
 Quisquis se trita radice perunxerit eius,
 Tutus ab incurſu serpentum dicitur esse:
 Morſibus illorum cum uīno sumpta medetur:
 Si iungas oleum cum succo ſeminis eius,
 Auribus infundens, poteris ſedare dolorem.
 Hoc ſucco lanam madidam ſi naribus addas,
 Compelſces morbu, qui polypus 1 eſt uocitatus:
 Sic etiam cancris magnum ſolet eſſe iuuamen,
 Succo radicis eius caligo fugatur.
 Et uarij morbi, quæ lumina perpetiuntur,
 Ex ipſo puro ſi ſint 2 lita, melleuē mixto:
 Et prodeſt oculis radix ſi manditur aſſa,
 Cum 3 puſca granis ter denis ſeminis hauſta,
 Lumina munda ferunt, pulſa caligine, reddit:
 Si marceſcentis illius floris odorem
 Nare trahat prægnans, deponere fertur abortū:
 Vel ſi ſit radix matrici ſubdita trita,
 Puluis radicis eius cum melle iugatus,
 Tuſſim compelſcit, ſumptus ſedatq; catharrum:
 Et cōfert hæmophthiſicis hoc ſæpe iuuamen,
 Peſtoris humores exhaurit non redituros.
 Omnibus his prodeſt radix ſi ſumitur aſſa:

Iſtud

Istud idem facit eius decoctio sumpta,
 Eius cum uino radix Venerem mouet hausta:
 Prouocat urinas, phagedænica 4 uulnera sanat.
 Si sit ei tritæ cum melle Brionia; iuncta,
 Vulneris hoc mundat sordes, syringia curat:
 Sola sibi iuncto maculas depellit aceto.
 Esse pedum uitium dicunt, cui Pernio 6 nomen
 Est à pernicië membri patientis idipsum,
 Plebs dicit mulam, solet hoc de frigore nasci,
 Amne Dracontheæ radices decoque tali,
 Pernio deletur, si sæpius amne fouetur.

SCHOLIA.

Q VI Polypus] Polypus Caruncula est naribus in-
 nascens, cancerata & fœtida, Hippocrate autore nō
 curanda, 6. Aphor. 3 8. De hac Celsus lib. 8. cap. 8.

2 Si sint lita] lita, pro illita.

3 Cum pusca] de pusca dictum est.

4 Phagedænica uulnera] Phagedæna ulcera sunt, quæ
 cum inflammatione & fœtore carnem usq; ad ossa rodunt: ea Plī-
 nius Nomadas appellat.

5 Cum melle Brionia] Brionia radix est, quam uitem ma-
 gram, aut cucurbitam syluestrem uocamus, uulgò scheiszwurtz.
 Hanc L. Apuleius describit in lib. de uiribus herbarum, cap. 66.

6 Cui pernio nomen] perniones sunt excoriationes, quæ
 sunt ex frigoris iniuria in calcaneis, & muga uulgariter uocan-
 tur: quandoque item in pedum digitis, & manuum oriuntur,
 apud

apud Auicennam & Constantinum scissura nominantur.

DE GAISDONE. Von farb lattich oder
Weyd. Cap. 55.

DE Gaisdone uel Isate Plin. lib. 22. cap. 16. Sed perperam
herbæ nomen scriptum arbitror, & Isatim dicendum, id
quod facile ex Plinij notabis scriptis, 20. lib. cap. 7.

ISchas à Græcis est uulgo Gaisda uocata,
Non modicum quæstum præbens tinctori-
bus herba:

De folijs eius tritis factum cataplasma,
Vulnera, magna licet, conglutinat, atq; cruorem
Illorum sistit, reprimat quoscunq; tumores:
Si cum melle teris hanc, sordida uulnera purgat,
Emundat maculas, & sacro subuenit igni,
Qui si iungens albumen eam superaddas.

SCHOLIA.

IS has à Græcis] Plinij uerba hæc sunt, quæ Isatim scribe-
dum manifestant: Tertium, inquit, lactuca genus est, in syluis
nascens, hoc Isatim uocant, cum polenta ulceribus prodest, eo
infectore lanarum utuntur, sanguinem sistit, phagadænas curat,
& contra ignem sacrum radice seu folij prodest. Germanico idio-
mate Weyd uocatur.

DE HELLEBORO ALBO. Von
weiß meszwart. Cap. 56

DE Helleboro albo uel *μαύρο πορνέον*. Serap. lib. agg. ca.
133. Dioscor. lib. 4. cap. 145. Auic. lib. 2. cap. 242. &
245. Mesue cap. 52. Marsil. Ficinus li. de Epidid. ca. 11.
Helleborum

Helleborū geminas species testatur habere,
Albū quod sursum purgat, nigrūq; deorsum
Vim siccam, calidamq; tenet, & tertius illis
Est in utroq; gradus: nigro uiolentius album
Dicitur, unde prius dicam de uiribus eius,
Suppositum quocunq; modo depellit abortum:
Naribus attractus, sternutamenta mouebit:
Illius puluis, capitis pellentia morbos
Miscetur confecturis, quæ lumina purgant:
Et multum prodesse ferunt uitis oculorum,
Pultribus admixtus mures puluis necat eius.
Et cum lacte datus est muscis perniciosus,
Dicunt per uomitum uarios educere sumptum
Humores, ueteresq; ferunt sic pellere morbos:
Purgatur tali uomitu uertigo i uetusta
Insanis, melancholicis, ualet atq; caducis,
Sæpeq; curatur sumpto lymphaticus 2 isto:
Hydropicis in principio mire medicatur,
Emundat lepram, tetanum 3 fugat atq; podagrā:
Confirmat tremulos, redeuntia tormina curat,
Diuersis uiscis stomachi, schiasiq; medetur:
Et tussi ueteri, febribusq; per omnia prodest
Quartanis, annis iam pluribus inueteratis.
Ingenti cura sumpturum Plinius 4 ipsum
Admonet, ut septem se præparet antè diebus,
Humectisq; cibis 5 corpus bene temperet omne,
Nec serò cœnet qui debet sumere manè:
Et quando sumet, rubet explorare serenam
Et calidam, claramq; diem, uentisq; carentem
I Obseruare

Obseruare iubet: curam si spreuerit istam,
Passurum nimios affirmat eum cruciatus:
Helleborumq; iubet in pultribus antea coctum,
Aut in lente 6 dari, sic dicit non nociturum:
Hicq; 7 dari prohibet senibus, puerisq; tenellis,
Mollibus & timidis, animiq; uiris muliebris,
Et macris nimium dicit non accipiendum.
In succo persanæ, uel mulsæ, paneue coctum
Sumere præcipiunt alij, sic utile dicunt.
Phylo composito fertur scripsisse libello,
Qualiter helleborum sit nobis accipiendum,
Inq; suis Hippocras 8 Aphorismis istius herbæ
Solius meminit, quam nouerat utiliozem.
Plures scripserunt huius de uiribus herbæ,
Et quo sit sumenda modo docuere, quibusq;
Non tamen inueni per plura uolumina uolens,
Vllum qui certum pondus 9 donare iuberet:
Istius dixisse satis se, credo, putabant,
Cum iuxta uires, ætates tempora dandum
Iussissent: mihi uero satis non esse uidetur,
Tutam rem subitum, quæ confert sæpè periculum
Commendare, dari cuiquam sine pondere certo
Plinius ut scripsit, Themison 10 donare solebat
Hellebori drachmas geminas, tribuisse sequētes,
Bis binas etiam confirmat: non tamen ipse
Pondere quo iubeat sumi statuisse uidetur:
Cū tamen hellebori nigri iubeat dare drachmā,
Quatuor uaut scrupulos nostri significare uidet,
Albi dimidium pondus tantummodo dandum,
Quod

Quod longe nigra uiolentiùs esse fatetur.

SCHOLIA.

- 1 **V**ertigo uetusta] Græcis σκώτομα dicitur, & est crans quadam oculorum tenebrositas.
- 2 Lymphaticus isto] furiosis: hunc quidam hydrophorbicum nominant.
- 3 Tetanum fugat] Tetanus conuulsio est, quando in ea constituti se ipso flectere non possunt. Aeginet. lib. 3. cap. 20.
- 4 Plinius ipsum] Plin. lib. 25. cap. 5.
- 5 Humectisq; cibis] qui febricitantibus conueniunt.
- 6 Aut in lente dari] Mesue in melle rosato exhibendum suadet, quod tereniabin uocant: uel melle passulato, aut gallinarum iure, seu carniua, ne suam operationem effrenitet. Marsilius Ficinus pomi adnuculo suam maliciam admittere docet, Epidimiarum 11. capite.
- 7 Hancq; dari prohibet] idem Plin. eodem loco.
- 8 Inq; suis Hippocras] Aphorismo quarto, libro Aphor. 14. 15. 16.
- 9 Qui certum pondus] Mesue in suo de simplicibus libro cap. ultimo à charatis 7. ad tertiam 31. transit, seu 31.
- 10 Themison donare sole] huius Themisonis Plinius 25. lib. meminit.
- 11 Quatuor aut scrupul.] scrupulus uiginti granorum herdei pondus est,

DE HELLEBORO NIGRO. Von
 schwartz niesß wurtz oder Christwurtz. Cap. 57.

*De helleboro nigro autores consulendi sunt præfati, & Plin.
 lib. 25. cap. 5. & cap. 13. Theoph. lib. 9.*

Helleborum nigrū non est adeo uiolentum
 Vel formidādū, quantū qđ diximus albū:
 Hoc qđ p̄cipiunt ueteres in lēte coquēdū,
 Aut in iussellis, sic insanis medicari
 Assumptum dicunt, & sic prodesse podagræ:
 Hydropicis, mota febre ⁊ dicitur auxiliari.
 Miram sentit opem sumpto paralyticus illo,
 Et uarios bibitum morbos leuat articulorum:
 Educit choleras uarias, & phlegma per aluum,
 Elixaturæ potu caligo fugatur:
 Duritias suppuratas factum cataplasma
 Concoquit & purgat, uacuat syringia ⁊ collō
 Infixus modicus radicis surculus eius,
 Postq̄ dies geminos sit surculus ille remorus,
 Ordea quam dederint contrito iunget farinam.
 Hydropicus tumor appositus siccabitur illis,
 Menstrua suppositum purgat, depellit abortum:
 Auditum reddit, si surdis auribus illud
 Imponas, & post triduum, biduum uē repellas:
 Appositum tollit maculas eius cataplasma,
 Emundat lepras, scabies quas cūq; repellit.
 Ore diu tentum quo coxeris illud acetum,
 Dentis non modicum dicunt sedare dolorem.
 Hellebori nigri præcepit Plinius ⁊ unam

Donari

Donari drachmam, leniter sic promouet aluum,
Plus quàm bis binos 4 obulos uetat accipiendū.

SCHOLIA.

- ¹ Mota febre] pro febre amota.
² Vacuat syringia] id est, fistulas.
³ Præcepit Plinius] lib. 25. cap. 5.
⁴ Plus quàm bis binos] obulum pondus duodecim gra-
 norum ordeï Ianuensis esse scribit.

DE VERBENA. Von Eysenkraut. Cap. 58.

De Verbenaca, quæ Græcis περὶ σέπων uel ἰσὰ βοτάνη dicitur,
 Dios. lib. 4. cap. 58. Plin. lib. 25. cap. 9. & lib. de re medica 2. cap.
 18. L. Apuleius in herbarum historia cap. 3.

V Erbenam i hierobotanem, peristerionq; 2
 Appellāt Græci, species hæc fertur habere
 Binas 3 effectus est idem penè duabus:
 Cum uino iuuat ictericos si sæpè bibatur.
 Pestíferos morsus curat, superaddita trita,
 Cum uino renouanda quidem per quatuor ista
 Est medicina dies, oris bene uulnera purgat.
 Illius succus tepidus si uoluitur ore,
 Hoc quoq; facta recens herbæ decoctio præstat.
 Hac etiam quæuis putredo repellitur oris,
 Si tepesacta diu uoluatur fauce sonora:
 Glutinat herba recens uulnus superaddita trita.

I s Occur-

Occurrit cunctis cum uino sumpta uenenis:
Quæ furit alternis febris accedendo diebus
Pellitur hac, tribus sumptis radicibus eius
Cum totidem folijs potenter aqua resoluta:
Ista prius patiens, quam frigus senserit ullum,
Hocq; modo febribus quartanis illa medetur,
Bis binis folijs cum tot radicibus haustis
Illius in uino si sit decoctio facta:
Conuiuas hilares inter conuiuia sparsa
Reddere narratur, ut iam præscripta buglossa.
Hanc herbam gestando manu, si quæris ab ægrò,
Dic frater quid agas: bene si responderit æger,
Vivet: si uerò malè, spes est nulla salutis.
Ex hoc compositam quidam iussere coronam
Apponi capiti causa quacuncq; dolenti:
Sic dicunt illam celerem conferre medelam.
Plinius affirmat hanc omnibus esse salubrem
Visceribus, lateris morbis, iecorisq; querelis,
Pectoris & uitijs, & præcipuè medicari
Pulmonum causis, hanc asserit ille phthisiq;
Parotidas & reprimat adipi commixta uetusta
Herbam, cui nomen folijs de mille s; dedere,
Bethonicamq; 6 pari uerbenæ pondere iunge:
Hæc mixta potenter aqua, nullum medicamen
Vtilius credunt illis, quos calculus angit,
Non modicum laudare magos hæc asserit herbã
Plinius, 7 hanc cunctis dicunt obistere morbis,
Et quod quisq; cupit hac impetrare perunctum.
Sic & amicitias captari posse potentum,

Et

Et pelli febres, & plura talia fingunt:
 Quæ quamuis natura & potens concedere possit,
 Vana tamen nobis, & anilia iure videntur.

SCHOLIA.

1 Hierobotanē] quasi sacrā herbam. Nam istac Iouis mensa ad sacrificium & epulas uerebatur, & faciales Romani in sacris legationibus illa coronabantur, mirēq; proficuum expiationibus, si suspensa foret, duxerant.

2 Peristerion] quia in ea uersari plurimum gaudent columbae.

3 Binas habere species] Rectam & supinam. Rectam Plinius marem nominat, seu cristam gallinaceam, à serratis folijs, quæ gallinae cristæ forma referunt, uocat: supinam autem foeminam, & ideo supinam, quod semper humi procumbat. Vulgò Eisen kraut mennlein, & eisen kraut weiblîn.

4 Parotidas reprimat] Quid sit parotis, dictum est.

5 Folijs de mille] mille folium intelligit, quam myriophylion siue achilleam nominant, garb.

6 Bethonicam] de Bethonica dictum est cap. 11.

7 Hanc asserit herbam Plinius] lib. 25. cap. 9. Natur. histor.

8 Natura potens] quum rerum sit magistra, naturam potentem uocat.

DE GAMANDRAE A. Von Gamenderlin, vera
 gisß mein nit. Bathengel. Cap. 59.

De Gamandra chamædri Gal. lib. 8. Semp. cap. 105. Plin. 24.
 rap. 15. Serap. lib. Agg. cap. 180. Diosc. lib. 3. cap. 103. Theophr.
 libro 9.

CHamædris i Græcè, quæ Gamādreā Latine
 Dicitur, hāc herbā calidā, siccam q̄ fatētur;
 Tertius est in utroq; gradū, depellit abortū,
 Si mixta potetur aqua, tussis q̄ medetur:
 Conquassata iuuat, si mixta bibatur aceto.
 Splen siccat, purgat cum uino menstrua sumpta,
 Hydropicis in principio sic sumpta medetur:
 Sic quoq; pestiferis occurrit moribus illa.
 Cunctis prædictis prodest superaddita trita,
 Sordens purgabis uulnus licet inueteratum.
 Si cum melle teras, & tritam de super addas,
 Chamædreos oculi succo cum melle peruncti
 Dicuntur clari, dempta caligine reddi:
 Si tritam misces oleo, corpus q̄ perungas,
 Pellit frigorem, reuocabit & ipsa calorem.

SCHOLIA.

CHamædris] dicta sic est quasi humilis ac terrestris quercus, quod folia quercus habeat, quæ humi repant.

DE MAURELLA. Von Nachtschatt.

Cap. 60.

De Maurella uel *serap.* lib. agg. cap. 238. *Auic.* 2. ca. no. cap. 650. *Galen.* lib. 2. de *Alim.* cap. 48. & lib. 8. *Simp.* 144. *Arnol.* de *Villa noua* in lib. de uinis.

HErbam quā Græci strichnon dixēre, Latini
 Maurellā dicunt, uis eius frigida ualde est:
 Dicitur auriculæ mirè sedare dolorem,
 Illius

Illius succus si sensim funditur intus,
 Aegilopis 1 strichni dicunt cataplasma mederi.
 Istud idem dicunt capitis sedare dolorem,
 Vna cum strichno si sal panisq; terantur,
 Parotidas 2 reprimet cataplasmatis addita more,
 Strichni prurigo depellitur illita succo.
 Succus suppositus fluxum stringit muliebrem,
 Contritis eius folijs coniunge polentam,
 His superappositis sacer ignis, & herpeta 3 mor-
 Dicitur expelli: si uero iunxeris istis (dax
 Argenti spumam, cerussam, oleumq; rosarum,
 Fortius & melius prædictum sit medicamen.

S C H O L I A.

1 Aegilopis strichni] id est, fistulis circa angulū lachry-
 malem oculi.

2 Parotidas reprimat] hoc est, abscessus post aures.

3 Herpeta mordax] herpeta quid sit, antea dictum est.

DE IVSQUIAMO. Von Bilsamentraut
oder Bilsen. Cap. 61.

DE ἰϋσκιᾶμο Galen. lib. 2. de Morbor. causis, Serap. agg.
 capite 340. Galen. 8. Simpl. capite 148. Dioscor. lib. 4. cap. 67.
 & libro 6. cap. 15.

Ivsquiamum 1 Græci, quam nostri caniculatam
 Dicunt, huius herbæ uirtus est frigida ualde:
 Tres habet 2 species, semē profert prior albū,
 Altera subrufum producit, tertia nigrum:

1 5

Nobilior

Nobilior reliquis est semen, quod gerit album,
 Pro quo si desit, mos est apponere rufam:
 Nigrū uerò frequens medicorum: respuit usus.
 Iusquiamī folijs contritis adde polentam,
 Hoc adhibendo potes quo suis curare tumores,
 Sic mirè calidam potes infrigidare podagram:
 Auribus infusus uermes succus necat eius,
 Illarumq; solet uarios lenire dolores.
 Ore diu tepidum si contineatur acetum,
 Quo sint decoctæ radices illius herbæ,
 Dicitur immodicum dentis pacare dolorem:
 Expressus succus contriti seminis eius
 Viscosum, calidumq; potest cōpescere rheuma.
 Si fuerint oculi patientis sæpè peruncti,
 Seminis illius obolus cum semine mixtus
 Miconis, 4 pariter cum mulsâ sumitur illis
 Vtiliter, fluxum matricis quæ patiuntur.
 Et dicunt hæmophthificis sic posse mederi,
 Vel quocunq; modo sanguis iactetur ab ore,
 Dicitur hic potus medicari sæpius haustus
 Cum uīno tritum semen, cataplasmaq; factum.
 Mammæ & testes dicunt curare tumentes.
 Emplastris multis apponitur, antidotisq;
 Infert, sicut olus hæc herba comesta: maniam,
 Præstat idem succus in quouis uulnere fusus.

S C H O L I A.

I Vsquiamum Græci] Hyoscyamō Græci hanc herbam
 nominant, quasi fabam suillā, quod, ut in historia sua Aelia-
 nus

nus inquit, pastu huius herbae sues praesenti mortis periculo sic conuellantur, ut nisi aqua statim se foris & intus proluant, confestim moriantur.

2 Tres habet species] Vnam, quae purpureos fert flores, & nigrum semen: alteram, luteos & semen subflauum: tertiã flore & semine candido, qua in medicinis utimur.

3 Medicorum respuit usus] narcoticis enim, hoc est, stupefactiuis, adnumeratur.

4 Cum semine miconis] id est, papaueris.



5 Comestã māniã] μαρία insanae species est, quae homines tristes facit, non multum distans à uicio, quod Graeci μαριαρχολία uocant.

DE MALVA.
Von Pappeln, oder
Ernrosen. Caput 62.

DE malua uel μαλιά
χρ. Dioscor. lib. 3. cap.
155. Serapius lib.

aggre

Aggre. cap. 76. Galen. lib. 7. Simpl. cap. 91. Auic. cano. 2. cap. 7.
Plin. lib. 20. cap. 21.

Dixerunt malua ueteres, quod molliat aluū,
Esse caco stomachum: Sextus Niger asse-
rit illam

Atq; Dioscorides, tamen interioribus ambo
Sumptam sicut olus multum prodesse fatentur;
Et sic uesicæ dicunt illam medicari,
Sicq; uenenosus occurrere potibus illam.
Hi quoq; confirmant maluæ folijs, salicisq;
Ex æquo tritis, citius, meliusq; cruentum
Sanari uulnus, emplastris quam preciosis.
Addunt autores ipsi, quod malua potenter
Conquassata iuuat, adipi commixta uetusto:
Vnius caulis radix admota dolori
Dentis, sedat eum, Venerem stimulare refertur,
Hæc eadem femori silino annexa geratur,
In lana nigra tectam si gesserit illam
Foemina, mammaram dicunt occurrere morbis.
Scripsit abortiuam: Thebana Olympias illam,
Si resolutus adeps miscebitur anseris illi,
Et sic subdatur ueluti pessaria: 3 uuluæ.
Contritis folijs illius cum sale pauca
Aegilopas 4 pellit, succoq; medeberis eius
Puncturis apium, cui si coniungis olium,
Corpus & inde linas, apium tibi nulla nocebit:
Decoctum lotio capiti superaddito maluam,
Sic turpes acoras, 5 pelles, furfurq; nociuum.
Decoctis folijs eius si iungis olium, 6
Extingues ignem sacrum cataplasmate tali,

Es

Et combusturis illo bene subuenit ignis:
 Duricias stericas eius decoctio mollit,
 Intestinorum causis, matricis & ani,
 Hoc etiam mirè prodest si subditur illis.

S C H O L I A.

1 **C** Acostomacham] stomacho inutilem seu malam
 potius.

2 Scripsit abortiuam] Thebanā Olympiam sic
 scripsisse Plin. habet lib. 20. cap. 21.

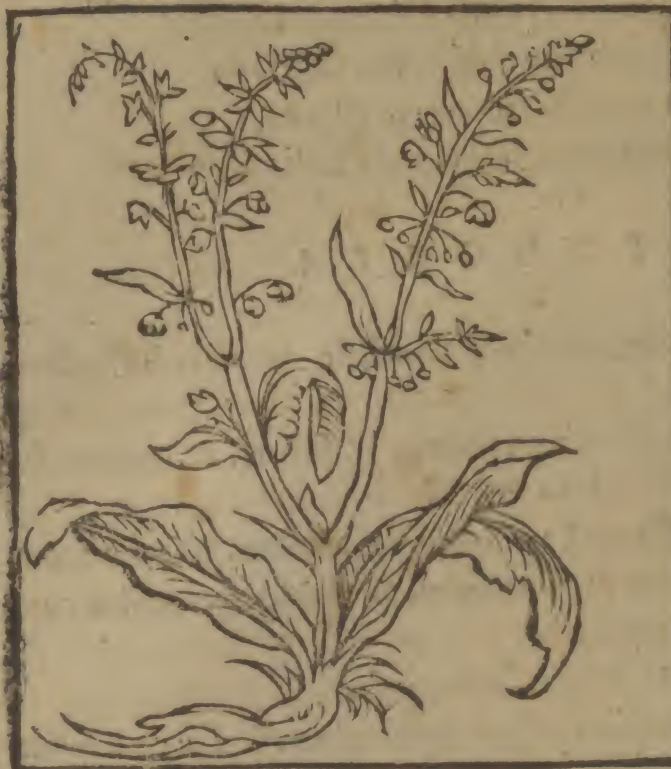
3 Veluti pessaria] pessarium pro matrice, instrumentum
 est, ad longitudinē & spissitudinē mediij digiti, ex pulueribus cum
 aliquo liquore incorporatis.

4 Aegilopas] fistulas lachrymales.

5 Turpes achoras] ἀχώρα capitis ulcus est, squamas instar
 furfurum habens.

6 Furfur'q; nociuum] furfura tenues squamæ sunt, in
 capite & alijs quandoque corporis
 partibus emersa.

D E



DE P A
ratella. Von
Mögelwurtz,
Gründwurtz,
Streiffwurtz,
Zitterwurtz,
Wildampffer.

Cap. 63.

DE paratella
uel πατάθω
Plin. lb. de re
medic. 1. cap.
38. L. Apule-
ius lib. de uir-
tut. herb. cap.
13. Diosc. lib.
2. ca. 106. Aes

ginet. lib. 7.

HErba solet lapathi, uulgo paratella uocari,
Illius species dicuntur quatuor esse,
Par tamē est fermē uis omnib. in medicina
Omnibus est illis feruens, austerāq; uirtus,
Vnde quidem stomachum confortat sumpta, so-
letq;

In stomacho clausum per ructum pellere uentū,
Sumptaq; sicut olus fertur restringere uentrem,
Pruritus mordax, scabiesq; cutis laceratrix
Illius tepido cedunt apozimate 2 fora.

In ui.

In uino coctæ radicis, & bene tritæ
 Apposita, scrophas compescunt, parotidasq;
 Eius sæpe tepens si coctio gargarizetur, 3
 Vuas sedabit tumidas, dentisq; dolorem,
 Et dysentericos potu iuuat, & ciliacos: 4
 Pellitur hac tepida dolor auris, si foueatur,
 Decoctas ualido radices eius aceto,
 Et tritas spleni superaddito sæpe tumentis,
 Quemuis non modicum reprimunt siccando tu-
 morem.

Cum uino, uel aqua radicum coctio facta,
 Menstrua restringet potu, lapidesq; repellet:
 Hæc eadem iuuat ictericos, suspensaq; collo,
 Illius radix scrophas nasci prohibebit.

S C H O L I A.

Illius species dicuntur] prima oxilaphaton Græcis et
 Latinis nominatur, officinæ lapatium acutum. Germani men-
 gelmurtz, grindmurtz, oder zittermurtz dicunt. Secunda hor-
 tensis, priori dissimilis nō quidē in uniuersum, sed duntaxat in fo-
 lijs, quæ latiora sunt, & ob cultū teneriora: hoc rheubarbarū mo-
 nachorū est, quod pro uero Rheubarbarico minimè exhibendum,
 cōtra quorundā pharmacopolarū lucrosas imposturas: qui nisi trē-
 tū rheubarbarū in suis officinis exponūt, quod uelut, quū monacha-
 le sit, optimū uendicāt, uulgò münch reubarbar. Tertia syluestris,
 plantaginē

plantagini fermè similis, quam uulgato nomine bonum uocamus
Hainricum, gut Hainrich. Quarta, quæ gustu acorem planè resis-
pit, & Græcis Oxalidis appellatur, Germanicè Saurampffer.

2 Apozimate] Apozima decoctum est herbarum, uel rā-
dicum simul.

5 Gargarisetur] Ficticium à sono hoc uerbum est, & coa-
luatur significat.

4 Et Ciliacos] de his dictum est.

DE LOLIO. Von Rattenkraut.
Cap. 64.

DE lolio uel αἶρα, ἢ θυάρα, ἢ ἰσάρις Galen. 1. Alim. cap. 38.
Diosc. lib. 2. cap. 91. Plin. lib. 22. cap. 25. ad finem.

FRumētis i nocuā loliū Grecus uocat herbā,
Quam nostri dicūt uulgari more nigellam: 2
Cancros emundat, pascētia uulnera curat,
Cum raphano, modicoq; salis superaddita trita,
Zernas & lepras; compescit eadem.
Sulphure cum uino, purgamentisq; columbæ
Admisce lolium, semen quod lilia præbent,
His iūgas, hæc cocta mero superaddita scrophis:
Sic scrophas spargit, sic apostemata rumpit,
Duricias alias emolliet hoc cataplasma.
Mulla decocta cum uino, thure, crocoq;
Apponas coxæ schiasis, quam uexat iniqua.
Parturiens mulier si se suffumiget illa,
Afferitur citius uentris deponere pondus:
Argenti spumæ commiscens hanc, adipiq;

Appo-

Apponas calidæ cataplasma salubre podagræ,
Et per se tali multum prodesse probaui.

S C H O L I A.

F Rumentis nocuam] Hinc Vergilius Bucolicorū Ae
gloga 5. infelix lolium nominat.

2 Vulgari more nigellā] Est enim uera nigella,
cuius Galen. memnit ad Patern. ciminum Aethiopicū, quod Gitt
uocamus, uulgò schwarzer coriander. Melancholium quoq; Græ
tis nominatur.

3 Zernas & lepras] Zernam medici impetiginem uocant,
Cassius Fælix.



DE CICUTA.

Von Wüterich Wutzer-
ling, Wundtscherlin,
Schirling. Ca-
put 65.

De Cicuta siue *κωκκω* Se-
rap. agg. capite 347. Dio-
scorides libro 4. cap 77,
& libro 6. cap. 11. Plin.
lib. 21. capite 10. Galen.
ad Patern cap. 77.

F Rigida i lætife-
re uis noscitur
esse cicutæ,
Vnde necat gelidi
potâtes more ue-
neni:

Qui perit hac herba, cutis eius fit maculosa,

K Vnde

Vnde genus mortis ualet hoc per signa probari,
 Publica poena: reis hæc esse solebat Athenis,
 Hac sumpta magnus Socrates; fuit exanimatus.
 Qualiter hoc fiat non æstimo dicere nostrum,
 Cū nil quod noceat, sed quod iuuat est referēdū.
 Hac sumpta si quis morti sit proximus herba,
 Forte merū & tepidum bibat, euadetq; periculum:
 Sed quamuis potu solet hæc assumpta nocere,
 Magnificē tamen apposita solet illa iuuare.
 Aestiuas mire iuuat epiphoras & oculorum,
 Si frons contritis folijs sit operta uidentis:
 Vel si sint eius circumlita lumina succo,
 Hac quoq; pelluntur sacer ignis & herpetæ moræ.
 Tradit Anaxilaus, si succo sæpius eius (dax.
 Virgo linat mammas, sibi cum turgescere primū
 Incipient, modicas semper, stantesq; manere.
 Lac contrita uirens mammis superaddita siccat,
 Extinguit tumore fluxum quoq; sceminis omnē
 Si pectus trita cataplasma sæpius illa
 Argenti spumæ commiscens hanc, adipi q;
 Apponas calidæ cataplasma salubre podagræ:
 Et per se tali multum prodesse probaui.
 Singula quid memorem? nocuū quēcunq; calorē
 Apposita trita poteris curare cicuta.

S C H O L I A.

Frigida uis! Constantinus in libro graduum, hanc cal-
 dam & siccam in tertio ordine limitat.
 2 Publica poena] Auxerūt cicuta samā Atheniēses
 succ

succo etus ad mortem in publicis, & capitalibus iudicijs utentes,
quæ alioqui indigna erat, & in omnium poetarum carminibus, sa-
pientumq; scriptis abiecta.

3 Socrates fuit exanimatus] qua morte Socrates perie-
rit, scribit Laertius lib. 2. cap. de Socrate.

4 Forte merum repidum] Cicutæ Bezoar est forte ui-
num si uomitio præcedat, aut lac asini, seu absinthium cum pipe-
re & castoreæ. Vide Guanerium.

5 Epiphoras oculorū] Epiphora superinfusio rheumatis
est, descendens ad oculos cum inflammatione, Oribasio teste.

DE PIPERE. Von Pfeffer. Cap. 66.

De Pipere Scrap. aggreg. cap. 367. Gal. s. simpl. et ad Patern.
cap. 205. Plin. lib. 12. cap. 7. Dioscor. lib. 2. cap. 148.

CArmine descriptis paucis uulgarib. herbis
Nūc species illas, quas iā cunctis ppè notas
Vnus medendi fecit tentabo referre,
Atq; prius piperis, quod notius ipsa coquina
Quam medicina facit, uires puto discutiendas.
Virtutis siccæ piper asseritur, calidæq;
Tertius esse gradus conceditur huic in utroq;
Tres sunt huic species, albū, longumq;, nigrūq;
Sed quia sunt geminæ medicis tantūmodo notæ,
De specie nigra dicam quædam mihi nota.
Crudum uel coctum sumptū cum melle iugatū,
Vim digestiuam stomachi, iecorisq; iuuabit:
Morsus pestiferos curat, fastidia tollit,
Occurrit uarijs thoracis sæpè querelis:

K 2

Quodq;

Quodq; mouere solet frigus periodica febris
 Compescit, febris si sumitur ante tremorem,
 Cum lauri baccis, uel cum folijs bene tritis:
 Cumq; mero tepido potatum, tormina sedat.
 Et scrophas reprimat, admixtum cum pice dura,
 Et superappositum, rectè quoq; iungitur illis.
 Quæ purgare solent oculos caligine dira,
 Admixtum nitro maculas cataplasmate delet:
 Vsti stercoris humani cum puluere tritum,
 Vnâ iunge piper, & sic superaddito cancris.
 Experti nihil utilius hoc puluere dicunt,
 Nemo potest omnes piperis describere vires.
 Namq; piper fermè medicamina cuncta requirunt,
 Antidotisq; solet preciosis pluribus addi,
 Hinc puto tam paucas laudes de simplici dictas
 Innumeris, quod sit hoc dignum laude medelis.

S C H O L I A.

Periodica febris] *περιοδική*. id est, interpellata, quæ
 ex flegmate fit, putrescēte extra uenas, affligens omni die,
 falsa per sex horas quiete.

DE PYRETHRO. Von Bertram.

Cap. 67.

De πυρεθρῳ Serapius aggregat. cap. 366. Dioscor. lib. 3. cap.
 78. Auicenna lib. 2. capite 503. Galenus 8. simpl. cap. 71. & ad
 Patern. cap. 208. Auer. 5. collig.

Est

E St pyrethrum calidum, siccum quoq; quare
tus in istis

Est gradus, excruciat dētes, si frigidus humor
Masticet hoc patiens, teneatq; diutius ore
Et iuuat admixto si gargarizetur aceto: (guā.
Hocq; modo tumidam reprimat de flegmate lin-
Sic uiam releuat humores pondere pressam.
Et multis alijs uicijs sic subuenit oris.
Nō modicum prodest sumptū cū melle caducis,
Sicq; leuare solet morbū qui membra resoluit,
Suspendum collo pueris prodesse caducis
Dicitur, & solo succurrere fertur odore.
Ex oleo quo decoquitur si corpus inungas
Ante febris motum, tollet, minuetq; rigorem
Renum, sæpe grauem fugat unguē tale dolorem:
Miram sentit opem paralyticus inde perunctus,
Non leuiter manibus fuerit si sæpè fricatus.
Vnguine si totum corpus mulcebitur isto,
Largus per poros sudor procedit apertos,
Membrorum solet hæc quemuis curare stuporē,
Et corpus seruare potest à frigore tutum,
Et medicamento soluetur tetanus isto.
Tantumdem prodest si tritum soluis oliuo,
Sicq; fricādo locum, quē uis medicare perungas.

S C H O L I A.

Membra resoluit] paralytim innuit.

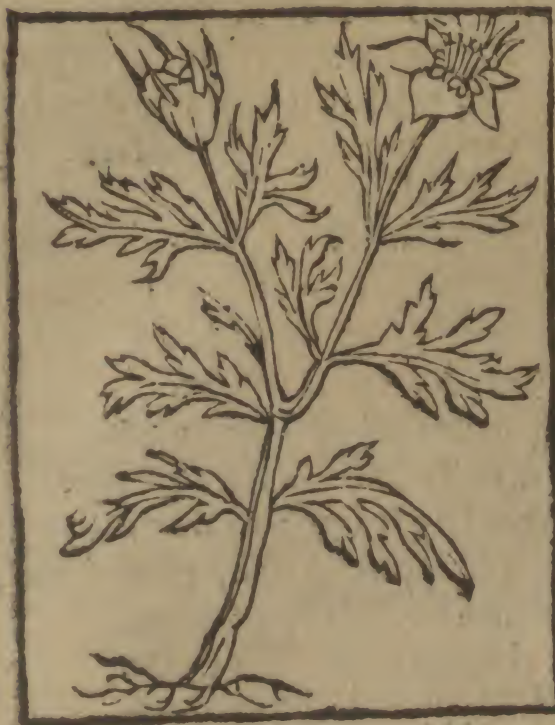
DE ZINGIBERE. Von Imber oder Calam
chutischen vnd Indianischen Pfeffer. Cap. 68.

De Zingibere Dioscor. lib. 2. cap. 149. Constant. lib. de grad.
cap. de simpl. tertij gradus.

K 3

Zingibe

Z Ingiber atq; piper æquales in medicina
Dicunt, hac causa taceo de uiribus eius.



DE CIMINO.

Von Römisch Kimich.

Cap. 69.

De Cimino. Serap. agg.
lib. cap. 187. Galen. 7.
simpl. cap. 59. & ad Pa
ternian. cap. 67. Auic.
lib. 2. cap. 140. Diosc.
lib. 3. cap. 61. & 62.

E Sse putant
medicinalis
dū siccūq;
ciminum,
Tertius est illi gra
dus in uirib. istis:

Allumptum quocunq; modo depellere tradunt
Viscera uexantem uentū, stomachumq; grauātū,
Et digestiūm stomachi, iecorisq; calorem
Excitat, & Veneris credunt inhibere furorem,
Et fluxum uentris in aceto stringere coctum.
Hoc orthopnoicis i miram præstare medelam
Experti dicunt, cum pusca 2 sæpius haustum.
Atq; uenenosis cum uino moribus ipsum
Præbet opem, tritumq; fabæ cum polline iuncto
Melle, repente solet testes curare tumentes
Appositum, sistit cum pusca mēstrua sumptum.

Dicunt

Dicunt pallentem dare mansum sæpè colorem.

S C H O L I A.

H Oc orthopnoicis] de orthopnoicis dictum est.

² Cum pusca haustum] de pusca item.

DE GALANGA. Von Gal'genwuriz.

Cap. 70.

De Galanga Serap. lib. agg. cap. 332. Rases ad Alm. 5. Constant. lib. de Gradibus cap. de cal. & sicc. in tertio.

Phlegmonē stomachi sumptū galāga resoluit,
Et si Phlegmaticus fuerit, corroborat ipsum:
Inclusum uentum sumptum fugat interiorum,
Vim digestiuam iuuat hoc, colicisq; medetur.
Oris non modicum mansum cōmendat odorem,
Augmentat sumptum Veneris, renumq; calorē,

S C H O L I A.

Phlegmonem stomachi] φλεγμοναι, cum tensione
inflammati à sanguine, sunt abcessus.

DE ZEDOARE. Von Zitwang. Cap. 71.

De Zedoaria Paul. Aeginet. cap. Zedoaria, Serap. agg. cap.
172. Auic. cap. de uiribus cordis, & 2 cano. cap. 739.

Apprimē sumptū zedoar obstore uenenis
Affirmāt, & reptiliū morsus leuat haustum:
Sūptū cōfortat stomachū, ructusq; sonan-
Cōmouet, & crebrō fastidia reprimīt usu. (tes
Antiquum stomachi dicunt curare dolorem,
Illud si patiens ieiuno mastice ore,
Et sic infectam sensim uoret ille saluam,
Lumbricos uentris depellere dicitur haustum:
Allia iquem faciunt fœtorem pellit ab ore,
Et nimium bibiti uini depellit odorem.

K 4 S C H O.

SCHOLIA,



Allia quæ
faciūt] idē
facit ruta cō
mestā inquit Nicolaus
Flo.

DE GARIO:
philo. Von Negelcin.
Cap. 72.

De Gariophilo Plin.
li. 12. cap. 7. Constant.
n lib. de gradibus.

Gariophilum dicunt caudū, siccūq; secundo
Esse gradu, iecur & stomachum corroborat
ipsum,

Et fermē cunctis ualet interioribus haustum,
Vim digestiuam mirē iuuat, abstinet aluum:
Accendit Venerem, i si drachmę pondere tritum
Potatum fuerit cum uaccæ lacte recenti,
Vim memorem cerebri cōfortat sæpius haustū.

SCHOLIA.

Venerem cerebri] id est, memoriam.

DE CINAMA. Von Zimet. Cap. 73.

Plin. lib. 6. cap. 29. Diosc. lib. 1. cap. 13. Serap. cap. 266. Gal.
lib. 7. Simp. & idem de Amentis, Anic. lib. 2. cap. 128.

Cina-

Cinama tres species dicuntur habere, sed harū
Est preciosa magis quæ plus subtilis habetur,

Et quæ plus mordet, mixta dulcedine linguam,
Humores stomachi siccant, corroborat ipsum:
Et facit acceptas ut digerat ocys escas,
Sumptū curat hepar, lotiūq; & mēstrua purgat:
Humida tussis eo sedabitur, atq; catharrus,
Hydropisis speciē cui præbēt tympana nomen,
Sumptū non modicū reprimat, renumq; dolorē.
Reptilium morsus curat si iungitur illis,
Quæ curant oculos, humores siccant aquosos,
Si benè contritum loti miscetur aceto,
Liberat oppositum tetra & lentigine uultum:
Siccq; iuuat morbū, qui ducit ab impete, nomen.
Grossa magis species fluxum hæmorrhoidarum
Stringit, aqua gelida benè si contrita bibatur,
Tempore quo nondum patiens ieiunia fregit,
De specie geminas hæc quærit potio drachmas.

SCHOLIA.

1 **T**ympana nomen] Hydropisis tres sunt species, ὑπὸ σκληρῇ, id est, subtercus: τυμπανίτης, quæ siccam sonat, aut uentosam: ἀσκληίτης, aquosa.

2 **Tetra lentigine]** Lentigo in facie maculas præbet, lentis instar: has Celsus lenticulas nominat.

3 **Ab impete nomen]** impetiginem intelligit, quæ cutis est fœdatio, hinc inde serpens, de qua Serenus Samonicus in suo de omnium morborum cura uolumine sic ait:

K s Si uerò

Si uerò uitium est, quod ducit ab impete nomen,
 Hoc matutina poteris cohibere saluas
 Seu folio platani, quod mansum mane uorabis.

DE COSTO. Von bitter Costen. Cap. 74.

De Costo Gal. 7. Simpl. cap. 43. Aegineta cap. 65. Auic. libro
 2. cap. de Costo, Auerr. 5. collig. Serapius libro aggregat. capite
 318. Dios. lib. 1. cap. 15.

Costi sūt gemine species, grauis una rubēsque
 Est, & amara nimis, hæc Indica dicitur esse,
 Altera uerò leuis, nec amara, colore sub alba
 Hanc Arabes mittunt, prior utilior medicinæ
 Vrinās purgant, & eis obstantia pellunt:
 Splen curant plenè, laterisque fugare dolorem
 Dicunt, cum uino tepido si sumpserit æger.
 Menstrua purgabunt si se suffumiget illis
 Fœmina, sic etiam uulvæ sedare dolorem
 Dicunt, aut ex his sibi si pessaria subdat.
 Lumbricos pellunt, purgant lentigine uultum,
 Si tritis cum melle linas: Veneremque mouere
 Dicuntur, si sint cum mulla sumpta tepenti.
 Ex oleo costum quo coxeris, illine quemuis,
 Ante febris typum reddes à frigore tutum,
 Subuenit hoc schiasī, mēbrisque stupētibus unguē,
 Antiquum uulnus citò purgat puluis eorum.

SCHOLIA.

Febri typum] Typus est accidens febrium interpola-
 rum, communicans secundum aduentum, non secundum
 moram: uel recessum, indicans utrum materia calida sit,
 frigida: lege medicorum Epiphaniam.

De spica

DE SPICA. Cap. 75.

Este gradu primo calidam, siccamq; periti
 Testantur, spicā quæ dicitur Indica nardus:
 Confortat potata iecur, stomachiq; dolores
 Mitigat, & renes illius apozima purgat:
 Vesicam iuuat, urinas & menstrua pellit,
 Istericis prodest, nocuisq; humoribus obstat.
 Quos caput ad pectus trāsmittit, sæpè per uuam
 Puncturas aufert, & morsus interiorum,
 In stomacho clausū solet hausta repellere uentū,
 Matricis nimium restringit subdita fluxum:
 Cum gelida si detur aqua, sedare tremorem
 Dicitur hæc cordis, & nausea sistitur inde.
 Excitat hæc Venerem cum cepe sumpta liquore,
 Duricias stericas elixatura resoluit,
 Eius fomento per partes inferiores,
 Lumina si tepida foueantur sæpius illa,
 Affirmant acri prurigne libera reddi
 Palpebræq; pili bene confortantur eadem.
 Est Nardi species, quæ Celtica i spica uocatur,
 Celtarum tantum quæ nascitur in regione,
 Omnia quæ nardus ualet Indica dicitur ista
 Possè, licet uires uideatur habere minores.

SCHOLIA.

1. Quæ dicitur Celtica] id est, Iberica.

DE THVRE. Von Weyrauch. Cap. 76.

De thure Serap. lib. agg. cap. 178. Gal. 7. Simp. cap. 77. & ad
 Patern. cap. 275, Diosc. lib. 1, cap. 72, & 73.

Thus

THus calidū, siccumq; gradu dixere secūdo,
 Lumina clarificat lachrymō si soluitur ui:
 Contritum uel scemineo cum lacte repertū,
 Acri cum uino tritum pice, lacte q; mixtis
 Vulnēra præcipuē curare recentia dicunt,
 Pingui porcino mixtum medicabitur uetis.
 At mixtum melli panaricia 2 decutit unguis,
 Thus bene contritum, uino q; repente solutum,
 Affirmant auri multum prodesse dolenti.
 Tritum cum creta 3 Cimolæa, sic q; rosato
 Permixtum, mammas dicunt curare rumentes
 Nil credunt Hæmophthificis magis auxiliari.
 Admixto uino si sumatur, uel aceto
 Thus cum lacte terens muliebri si superaddas
 Vlcēribus fieri quæ sæpē uidentur in ano,
 Aut alio quocunq; loco, medicabitur illis.
 Huic aloe 4 iungēs, lachrymam q; albuminis ou
 Sic ut sit spissum, sectæ superaddito uenæ,
 Aut his uulneribus nimio, quæ sanguine manā
 Nec soluas, nisi comperias diuisa coisse.
 Si sit opus, medicamen idem superadde priori,
 Donec firmari ualeat solidata cicatrix,
 Affirmant mellus nil sistere posse cruorem.
 Vim memorem cerebri proprio cōfortat odore,
 Origano inunctum si quis commasticet ipsum,
 Humores capitis nocuos per spūta repellit:
 Alleuat ista grauem capitis purgatio linguam,
 Anseris aut anathis mixta pinguedine thuri,
 Fit cataplasma ualens membris, quæ leserit ignis.

S C H O.

SCHOLIA.

- L** Achrymo oui] albumine.
 2 Panaritium decutit] Panaricium apostema calidum est, accidens plerumq in summitate alicuius digitorum manus in latere unguis, cū intenso dolore & uigilijs. sic *Valesc. lib. 7. cap. 42.*
 3 Creta Cimolga] creta alba, quæ ad nos ex Sardinia defertur. *Vide Plin. lib. 35. cap. 18. & Serap. lib. agg. cap. 406.*
 4 Huic aloë iungens] de aloë sequitur.

DE ALOË. Vom Oelbaum. Cap. 77.

De aloë *Auic. cano. 2. cap. 66. Gal. 7. simp. de ingen. sanit. cap. 21. & lib. de sequela potent. animæ, cap. 2. & lib. de cathar. cap. 3. Diosc. lib. 3. cap. 23. Serap. cap. 201.*

Sunt aloë species geminæ, q̄ subrubet, & quæ
 Intus sicut hepar, cū frangitur, hæc hæpatheza
 Dicitur, & magnas habet in medicamine uires.

Vilior est piceo, quæ fracto colore uidetur,
 Flegmate mūdificat stomachū, caput, articulosq;
 Leuiter humorē nocuum purgando per aluum
 Ictericos purgat, iecoris iuuat interiora:
 Vulnus quoq; recēs putredine purgat ab omni,
 Illius iniectus puluis, siccandoq; sanat:
 Ventrīs præcipuè dicunt & testiculorum
 Vulnera curari, uel ulcera puluere tali.
 Si soluaturs aqua iuuat apostema labrorum,
 Et uaris superappositum, nec non oculorum:
 Liuoremq; fugat sic circa lumina factum,
 Acricum uino miscens, oleoq; rosato

Vnge

Vnge dolens caput & frontem, mireꝝq; iunabit;
 Vnguine pruritus sedabitur hoc oculorum.
 Cum uino bene contritum, cataplasmaꝝ factum
 Confortat, retinetꝝq; pilos, quoscunq; cadentes.
 Linguae, gingiuis, uirꝝ quoꝝ subuenit oris,
 Si refricetur eo cum uino, melleꝝq; trito.
 Hoc sumptum per se uentrem non soluit acutē,
 Esse tamen stomachi putat Oribasius aptum,
 Cum lædant illum soluentia cætera uentrem:
 Illius geminas cum mulsa sumere drachmas,
 Idem præcepit choleram sic, flegmaꝝq; purgat:
 Vnaquaq; die post cœnam sumere dixit,
 Vtile tres eius pillulas, binas uē uirentis
 Cum succo caulīs formatas, ut faba grossas
 Aut cicer: humores nocuos cum stercore purgat,
 Non corrumpendo stomachū, nec uim faciendo.
 Purgatus pillulis fuerit qui sæpius istis,
 Vix unquam capitis vexabitur ipse dolorē.
 Et nihil est oculis, mihi crede, salubrius istis:
 Si uerò duram uis soluere largius aluum,
 Partibus est geminis pars admiscenda terendo,
 Vna ⁊ diagridij, sic apta solutio fiet.

SCHOLIA.

C Vm lædant illum soluen.] Vnde Galen. 6. de
 simp. cap. 23. aloēn præ omnibus simplic. stomacho ac-
 commodatam atq; utilem scribit: quam cantilenam &
 Plinius roborat lib. 27. cap. 4.

2 Vna diagridij] Diagridium scammonium est, suis corre-
 ctis limitatum.

D B

DE HERBA QVADAM
EXOTICA, CVIVS NOMEN

mulier est amara, D. Georgij Pictorij iocus.

HErbarum vires descripsit carmine Macer,
 Ac dotes herbis dixit inesse bonas,
 Omnibus ast utilē tacuit, si pcul ab hortis
 Planterur, uel agris, procul & à domibus.
 Hanc, Lector, recto mulierem nomine dicunt
 Vipperea lingua, uipperisq; labris,
 Radicem fert ipsa nigram, quæ soæter ut hircus,
 Quæq; assam fœdam uincit odore suo,
 Candicat & folio, uitta tum toruè tuetur,
 Et florem profert, terq; quaterq; nigrum,
 Fructus dat toruos, & pessima semina talis,
 Quæ possunt multis damna referre bonis,
 Ut sunt coniunctos odio disringere fratres,
 Lingua seu truci findere amicitias:
 Et facere inuisos genitori garrula natos,
 Acuere & dentes semper in excidium,
 Spargere gliscentes rixas, melleq; nocendi
 Fraudes atq; dolos spargere uippereos.
 Sextus huic herbæ legitur gradus esse calorís,
 Septimus in sicco, toxica sic superat.
 Eruiere ex terra hâc magni est, mihi crede, laboris,
 Atq; uirum cordis postulat istud opus.
 Hæc etenim claua saltem, seu fuste, flagello,
 Bacillo aut trunco est, effodienda tibi.

Irriguum

Irriguum petit ipsa locum quo crescere possit,
Aut quod plantari cum ratione queat.
Hinc igitur Rheni, non ripas occupet istæ,
Sed medium, sacco, uel medicante bono:
Alsa potetur, potetur Danubioq;
Proferat ut florem plantula recte suum:
Hæc tibi descripsi uiridem, ut florescere in horto
Permittas nunquam Lector amice tuo.

AVTO:

AVTORES, QVOS AVTOR

IMITATVS EST, ET QVORVM

*Suffragio in scholijs nostris usi
fuimus.***A**pollodorus
Auicenna
Agrippa

Auerrois

Angel. Polit.

Arnoldus

Anaxilaus

Aesclepius

Aristoteles

Bart. Angl.

Cor. Celsus

Caelius Aurelian.

Cassius Fælix

Columella

Christ. de Honest.

Cato Censor.

Chrysippus

Constantinus

Conrad. Gesn.

Diocles

Dioscorides

Francis. Florid.

Galenus

Guanerius

Georg. Valla

Helianus

Hippocrates

Hemefon

Iustus

Iulius Pollux

Iouianus pont.

Ianuensis

Iustus

Leonh. Fuchsius

Lucius Apul.

Laërtius

Meniacus

Mesne

M. Varro

Math. de Gradib.

Marfil. Ficinus

Melinius

Nicander

Oribasius

Octaph. Cleoph.

Petrus Crinit.

Plinius

Pythagoras

Palladius

Paul. Aegin.

Plato

Rases

Serenus

Simphorianus

Sylvatico

Serapio

Strabus Gallus

Theophrastus

Vergilius

Vlisenius

Varignana

F I N I S.

L

OMNIVM

OMNIVM QVÆ IN
SCHOLIIS HABENTVR
fructuosus INDEX.

| A | | | | |
|---|---------------------------|--------|------------------------|--------|
| A | Bsintium | fol.7 | apium | 27 |
| | abrotanum | fol.4 | apozima | 29 |
| | adonid, fabula | 60 | aqua pluuiialis | 10 |
| | aconitum | 97 | artemisia | 1 |
| | ἄχωρ | 16 | ἄρτυρις | 3 |
| | agilops | fol.45 | ἄρνα | 20 |
| | ἀμύδια | 56 | arnoglossa | 21 |
| | aizoon | 54 | artetica | 25 |
| | agersten aug | 63 | argolici | 65 |
| | ægyptij cepas nō tetigere | 84 | aristolochia | 102 |
| | ætas Catonis Frugi. | 92 | aristoloch. unde dicta | 104 |
| | aluus quid | 3 | ἄσθμα | 6 |
| | allium | 15 | ascarides | 7 |
| | alcola | 21 | asklite | 143 |
| | alcides | 28 | atriplex | 72 |
| | alumen scissum | 93 | azarum | 118 |
| | alumen iameni. | ibid. | B | |
| | alumen de rocho. | ibid. | Bethonica | 34 |
| | aloe | 157 | borrago | 119 |
| | ambrosia | 54 | brionia | 127 |
| | anethum | 32 | burtzel | 56 |
| | ἄνθραξ | 39 | bupthalmon | 54 |
| | Anthemion | 44 | C | |
| | anthera | 60 | Cataplasma | 14 |
| | | | cancer. | ibid. |
| | | | | cauto- |

INDEX.

163

| | | | |
|-------------------------|--------|--------------------------|----------|
| cauterium | 22 | fecisse | 74 |
| carica | 25 | circumforaneorum impostu | |
| carbunculus | 39 | ra | 113 |
| camamila | 42 | cyperus | 116 |
| calamintha | 47 | climata distinguenda | 114 |
| cardamon | 54 | alematitis | 104 |
| caulis | 90 | clauus pedum | 63 |
| cardiaca passio | 85 | colici | 14 |
| causon | 56 | comitialis morbus | 21 |
| camedris | 136 | coronandi mos | 28 |
| cepe gradus uariat | 6.82 | condiloma | 34 |
| cephelargia | 55 | coriandrum | 73 |
| cephalæa. | ibid. | coriambion | 74 |
| centaurea | 124 | cœliaci | 120 |
| cerussa quomodo | 26 | colubrina | 125 |
| cestron | 37 | costus | 154 |
| cerifolium | 70 | crambe | 93 |
| cera uirginea | 71 | creta Cimolæa | 157 |
| chora | 17 | | |
| chrysanthemion | 45 | D | |
| chrysoespermon | 54 | Dissenterici | 21 |
| chrysippus de Brassica | 93 | diagridium | 158 |
| chelidonia | 123 | doll & wurtz | 97 |
| ciminum æthiopicum | 145 | dropax | 89 |
| cicuta pœna Athenis | 11.147 | dropadismon. | ibid. |
| ciminum | 26.150 | E | |
| cinama | 152 | Ελεφαντίασις | 47 |
| cicutæ bezoar | 147 | Enzomon | 78 |
| cimices coriandro nomen | | ephialtæ | 118 |
| | | L 2 | epiphora |

| | | | |
|-----------------------------|------------|------------------|-------|
| epiphora | 147 | hamorrhoids | 34 |
| ein rosen | 31 | helleborus albus | 128 |
| eruca | 77 | hellebor. niger | 135 |
| eschara | 32 | Hippocrates | 41 |
| exanthima | 45 | hippocondria | 42 |
| F | | hisopus | 109 |
| FAuus | 26 | hierobotanes | 135 |
| fellis seruandi ratio | 25 | hyosciamus | 138 |
| fœniculum | 50 | I | |
| foeniculum serpentes inuene | | INula | 108 |
| runt | 52 | iris | 106 |
| fungorum Bezoar | 11 | icterus | 14 |
| furunculi | 77 | ἰστέραν | 4 |
| G | | ἰσχίαν | 6 |
| GAlbula | 14 | Isaris | ibid. |
| gangrena | 34 | isenkraut | 125 |
| gaisdone | 128 | iufquiamus | 137 |
| gamandrea | 135 | K | |
| gargarizo | 144 | KEiri | 101 |
| galanga | 151 | καρκίνωμα | 14 |
| gariophili | 152 | κοιλιακοί | 21 |
| git | 145 | κλιθήριον | 25 |
| γλώσσον | 20 | καύσων | 56 |
| gradus simp. quatuor | 5 | L | |
| H | | Lactuca | 57 |
| HEraclius morbus | 21 | laser vurtz | 70 |
| Herculeus morbus | ibid. | lentigo | 29 |
| hamophthisci | ibid. & 37 | leucanthemion | 44 |
| herpes | 26 | lemma | 55. |
| | | ληχία | |

I N D E X.

165

| | | | |
|--------------------------|---------|----------------|---------|
| λεχένης | 63 | nausea medela | 11 |
| lethargus | 65 | nasturtium 57. | unde 77 |
| libros defendi à muribus | 11 | νεφρίτις | 17 |
| lilium | 61 | nitrum | 26 |
| lirinum oleum | 62 | nepta | 45 |
| lilium Iunonis flos | 93 | | |
| lichena | 77 | ○ Bolus | 133 |
| ligusticum | 67 | opium | 4 |
| lithargyron | 75 | opij Bezoar | 4 |
| limphaticus | 131 | ὀρθοπνοία | 6 |
| lolium | 124 | oxilaphaton | 143 |
| lumbricorum genera | 7 | oxalidis | 144 |
| | | oxithema | 34 |
| M | | | |
| Matrix | 4 | | |
| malua | 29. 140 | P Arthenis | 5 |
| malua cur solsequium | 30 | parotis | 14 |
| malacha | 31 | papauer | 79 |
| marathrum | 52 | pastinaca | 94 |
| marrubium | 105 | paralysis | 104 |
| mania | 139 | papula | 108 |
| medico quæ tenenda | 112 | paratella | 142 |
| menta 115. mengel vurtz | 143 | panaritia | 157 |
| minthes | 116 | pernio | 127 |
| myriophilon | 135 | peristeron | 135 |
| morbus caducus | 21 | peffarium | 141 |
| morella | 136 | periodica feb. | 22 |
| multinernia | 21 | πύλον | 26 |
| | | peptica uirtus | 68 |
| N | | peonia | 117 |
| Nardus Celtica | 10 | | |
| | | L | 3 |
| | | | pfaif |

| | | | |
|-------------|-------|-----------------------|-----|
| pfaſſhœdlin | 124 | S | |
| piper | 147 | SAnitas | 12 |
| pyretrum | 148 | sacer ignis | 21 |
| phlegmon | 131 | ſabina | 38 |
| phrenes | 6 | S.Barblen plater | 39 |
| phrenesis | 63 | ſampſichon | 45 |
| pleuritis | 13 | ſatyri | 66 |
| πλῆυρα | 21 | ſcrophularia | 124 |
| plantago | ibid. | ſcropha | 21 |
| platerkraut | 124 | ſentafis | 118 |
| portulaca | 33 | ſcrupulus | 131 |
| polypus | 127 | ſclyroſis | 70 |
| polymeron | 21 | ſaturegia | 63 |
| ποδάγρα | 23 | ſeptum tranſuerſum | 6 |
| porrum | 39 | ſecundina | 17 |
| præcordia | 6 | σέλινον | 38 |
| pulegium | 47 | ſedum | 54 |
| ptiſis | 22 | ſerpillum | 98 |
| ptiſana | 42 | ſeplafiorum impoſtura | 113 |
| | | ſexus cur herbis | 118 |
| | | ſenecion | 121 |
| | | ſchiaſis | 6 |
| | | ſiler montan. | 10 |
| | | σίρυνγισ | 22 |
| | | ſingultus | 47 |
| | | Siliſ Italici mors | 63 |
| | | ſilphion | 70 |
| | | ſinapium | 86 |
| | | ſmirnion | 68 |

ſozu-

INDEX.

167

| | | | |
|-----------------|-----|-------------------|-------|
| sozusa | 3 | thus | 155 |
| Socratis mors | 11 | tineas quæ arcent | 11 |
| sperma | 22 | typus | 154 |
| spica | 155 | | |
| stera | 11 | V | |
| stomachi feruor | 52 | VEtonica | 37 |
| Strabus Gallus | 68 | uetones | ibid. |
| succida lana | 97 | uertigo | 131 |
| suggillata | 11 | uerbena | 133 |
| | | uomica | 37 |
| T | | uocalis uena | 30 |
| TEnasinus | 57 | urtica | 14 |
| tetanus | 131 | uulua | 15 |
| themison | 22 | | |
| therebintum | 15 | Z | |
| thimus | 65 | ZErna | 145 |
| thereniabin | 131 | zedoaria | 151 |
| | | zingiber | 149 |

FINIS INDICIS MATERIARVM.

L 4

ELEN

E L E N C H V S O M N I V M Q V A E I N H O C M . A .

*cri uolumine continentur, ex quo uel citra puluerem
quisque singularum herbarum uirtu-
tes addiscet.*

ARTEMISIA, fol. 1.

Menses trahit,
Abortiuum pellit,
Matricis duritiem soluit,
Vrinam prouocat,
Lapides proscribit,
Ictericos curat,
Strumis medetur,
Oppij Bezoar est,
Venenatis auxiliatur,
Morsus ferarum pellit,
Aduersus rubetas ualet,
Pro stomacho est,
Præcordia sanat.

ABROTANVM, fol. 4.

Neruos confortat,
Pectus mundificat,
Dispnoicis ualet,
Tussim repellit,
Lumbos roborat,
Matrici est proficuum,
Vrinam mundificat,

Contra

Contra schiasim ualet,
Menses impeditos soluit,
Serpentes fugat
Februm accessiones sedat,
Lumbricos eiicit,
Oculis collyrium est,
Stirpes infixas extrahit,
Venerem excitat.

AB S I N T H I V M, fol. 7.

Stomachi robur est,
Lumbricos necat,
Aluum mollit,
Vrinam prouocat,
Menstrua ducit,
Fastidium ablegat,
Pectus lenit,
Culicum fuga est,
Ictero subuenit:
Pro hepate est
Et Splene,
Fungis est Bezoar
Et cicutæ,
Morsibus uenenatis subuenit,
Oculos clarificat,
Suggillatis prodest,
Auditum reuocat,
Subuenit anginæ,
Vulnera sanat,

L s

Et uls

Et ulcera,
 Pruritus compescit,
 Nauseam tollit marinam,
 Inguinis tumori utilis est,
 Somnum præstat,
 Crines denigrat,
 Tineas pellit,
 Ranam sub linguam sedat,
 Liuorem alterat,
 Aurium sonitum depellit,
 Splenis duritiem mollit,
 Mures arcet.

V R T I C A, fol. 12.

Ictericos subleuat,
 Tussim sedat,
 Ventris tumori prodest,
 Vulnera purgat,
 Canis morsui medetur,
 Cancrum & parotidas iuuat,
 Luxata reponit,
 Splenis tumorem lenit,
 Podagram mitigat,
 Ex naribus cruorem elicit,
 Ex naribus fluxum tollit,
 Menses trahit,
 Matricem occlusam aperit,
 Venerem incitat,

Pleuresi

Pleuresi auxiliatur,
Vrinam cit,
Aluum astrictam mollit,
Astringit uuulam,
Sudorem prouocat,
Quadrupedes ad coitum angit,
Capillorum casum impedit.

A L L I V M, fol. 15.

Ictus serpentis sanat,
Odore uermes abiguntur,
Vermes & tineas proscribit,
Vesicæ prodest,
Secundas expellit,
Pulmonem roborat,
Hydropicis subuenit,
Et nephreticis,
Item ictericis:
Aluum astrictam mollit,
Capitis dolori prodest,
Et aurium passionibus
Et tussi:
Suspiria tollit,
Clarificat uocem,
Tenasmonem pellit,
Aguas corrigit.

P L A N T A G O, fol. 17.

Vlcera humida siccat,

Ventrem

Ventrem restringit,
 Et diasintheriam:
 Scrophas dissoluit,
 Hydropim fugat,
 Et asthma.
 Epilepsiam quoq:
 Alcolam curat,
 Aurium pus elicit,
 Sacrum extinguit ignem,
 Hæmophthificis dat sanitatem,
 Et phthificis.
 Drasinther stringit.
 Collyrium est,
 Gingiuas curat,
 Dentium dolorem reprimat.
 Menses impedit,
 Renibus confert,
 Scrophas incidit,
 Februm accessiones impedit:
 Fistulis medetur,
 Lumbricos necat,
 Parotidas abigit,
 Fessum restituit,
 Vesicæ prodest.

R V T A, folio 22.

Stomachum roborat,
 Expellit partus,

Venerem

Venerem coërcet,
Tulsim profligat,
Menstrua purgat,
Tormina inhibet,
Pulmonem iuuat,
Costarum morbo auxiliatur,
Schiasiquoq;
Lumbricos necat,
Hydropisim curat,
Et oculos caligantes,
Capitisq; dolorem,
Et aurium.
Sacrum extinguit ignem,
Ac herpetam;
Acoras quoq; lenit,
Et narium ulcera.
Obstat ebrietati,
Mithridaticum est,
Mustale sanat ictum.
Cholon emendat,
Et testes tumentes,
Diapeganon est.
Extenuat bilem,
Ventrem lenit,
Et digestionem roborat.

A P I V M. fol. 27.
Oculos tumefactos curat,
Et mammas tumentes;

Ardorem

Ardorem stomachi sedat,
 Ventos creat,
 Urinam prouocat,
 Veneno resistit,
 Tussim compescit,
 Ventrem fluentem impedit,
 Et uomitum,
 Amissum colorem reparat
 Febris rigorem sedat,
 Hydropis & splenis tumidita-
 tem iuuat,
 Lentiginem abijcit,
 Et ulcera mundificat.

M A L V A, folio, 29.

Vulnera purgat,
 Scrophas incidit,
 Matricis tumorem lenit,
 Nervos indig. relaxat,
 Apostem. dura rumpit.
 Diasinther medetur,
 Secundas pellit,
 Hæmophthoicis prodest,
 Lapides frangit,
 Deformes maculas emendat,
 Venenis obstitit,
 Caua uulnera replet,
 Combustioni ualet.

Anethum

A N E T H V M, folio 32.

Lac auget,
 Stomacho proficuum est,
 Nauseam sedat,
 Vrinam elicit,
 Matrici utilis est,
 Tormina secludit,
 Digestionem procurat,
 Visum lædit,
 Genitale claudit iter,
 Vuam siccatur,
 Corrosiuum est,
 Vulnera curat,
 Singultum proscindit,
 Oculorum tollit feruorem,
 Hæmorrhoidas mitigat,
 Et condylomata,
 Cepheam domat,
 Et neruos indignatos relaxat.

B E T O N I C A, folio 34.

Lapides eijcit,
 Vrinas cit,
 Sputo sanguinis medetur,
 Et hydropicis.
 Oculos læsos rectificat,
 Et aures:

Hemphecos

Hemphecos restituit,
 Tussim iuuat,
 Suspiria sedat,
 Et stomachi dolores.
 Mouet aluum,
 Vulnera curat,
 Capitis facturæ subuenit,
 Lachrymas restringit,
 Caliginem proscindit,
 Oculos clarificat,
 Vomica[m] sanat,
 Spleni iecoriq[ue] prodest,
 Renes purgat,
 Quotidianam impedit,
 Vomitiuum est,
 Ruptos consolidat,
 Contra uenena est.
 Icterus sanat,
 Et menstrua mundificat,
 Digestionem confortat,
 Contra serpentes est,
 Atq[ue] liuorem depellit.

S A B I N A, fol. 3 s.

Vulnera ficit,
 Anthraces curat,
 Cit menstrua,
 Embrion. mort. excludit,

Cutem

Cutem lenit.
Vertiginem sedat.

P O R R U M, folio 39.
Contra sanguinis expuitionem,
Flux. sanguinar. compescit,
Contractas curat matr.
Fœcundas reddit,
Vlcera mundificat,
Pectus item.
Et tussim:
Vocem clarificat,
Ventrem stringit,
Morsui serpentis auxiliatur.
Tussim antiquam curat,
Et pulmoniacos,
Auribus prodest,
Esui fungorum obstat,
Cephaleæ prodest,
Lumbis similiter.
Fracturas solidat,
Nervos indignatos relaxat,
Ebrietati resistit,
Et duram remollit aluum.

C H A M O M I L L A, folio 42.
Vrinam prouocat,
Lapidem uesticæ frangit,
Menstrua purgat,

M

Tor-

Tormina sedat,
 Stomachi inflationem tollit,
 Ictericis prodest,
 Iecur confortat,
 Pellit abortum,
 Accessionem febris impedit,
 Hippocondria suspens. purgat,
 Pestiferos morsus tollit,
 Lienem mundificat,
 Aegilopas curat,
 Anathemata proscribit.

N E P T A, folio 45.

Frigora febris tollit,
 Schiasim proscribit,
 Menstrua purgat,
 Elephantiasis prodest,
 Serpentum morsus aufert,
 Lumbricos necat,
 Purgat ictericos,
 Et asthmaticos,
 Pleurisim quoq̃.
 Vibices cicatricum tollit,
 Serpentes fugat,
 Singultum proscribit,
 Et Venerem.

P V L E G I V M. fol. 47.
 Abortum facit,
 Menses elicit,

Et

Et secundas:
 Contractis succurrit,
 Sputum faciliat,
 Nauseam curat,
 Melancholiam proscindit,
 Morsui serpentum subuenit,
 Sincopi prodest.
 Gingiuas confirmat,
 Podagram sedat,
 Papulas tollit,
 Spleneticis auxiliatur.
 Contra pruritem est,
 Tussim compescit,
 Urinam cit,
 Venerem stimulat.
 Pulmonem & iecur roborat,
 Lac mammis auget,
 Atq; morsus caninos sanat.

FOENICVLVM, folio 50.

Venenis resistit,
 Oculos clarificat,
 Aurium uermes necat,
 Renibus prodest,
 Et hydropicis.
 Lac auget,
 Nephreticos subleuat,
 Menses resoluit,

M 2 Nauseam

Nauseam sedat,
 Feruorem stomachi tollit,
 Virgæ uirili prodest,
 Venerem incitat,
 Pleuresi conducit.

A C I D V L A, folio 52.

Tollit fastidium,
 Sacrum compescit ignem,
 Phagedenis prodest,
 Et combustioni,
 Capitis dolori subuenit,
 Cephalargiæ item:
 Ventris fluxus sedat,
 Et menses nimios:
 Lumbricos pellit,
 Visum confortat,
 Venenis obstat,
 Et scorpionis ictui:
 Auditum confortat,
 Lemnas oculorum soluit.

P O R T V L A C A, folio 55.

Causonidi ualet,
 Et stomacho,
 Lenit calorem,
 Fluxum restringit,

Hæmo-

Hamodiam soluit,
 Solis calorem lenit,
 Ventrem emollit,
 Expuentibus sang. prodest.

L A C T V C A, folio 57.

Calorem extinguit,
 Somnifera est,
 Aluum soluit,
 Somnia uana compescit,
 Alui fluxum compescit,
 Lac auget, &
 Oculis prodest.

R O S A, folio 58.

Sacrum compescit ignem,
 Præcordia sanat,
 Menses impedit,
 Collyria præbet,
 Alcolam sanat,
 Omnem feruorem sedat,
 Ventrem mollit,
 Capitis feruorem tollit,
 Vulnera replet,
 Combustionem curat,
 Dentium dolorem mitigat,
 Fulgebres rectificat,

M 3

Pruri-

Pruritus tollit,
Oleum rosarum præbet.

LILIVM, folio 61.

Vsturas arcet,
Duricas stericas mollit,
Nervos induratos item
Morsus serpent. curat,
Fungis bezoar est.
Clauos pedum sanat,
Pilos reddit,
Ventrem purgat,
Et menses.
Neruis præcisis medetur,
Plagas siccatur,
Cicatrices inducit,
Rugas erugat,
Lichenas & furfur emendat,
Sudorem elicit, &
Tumorem maturat.

SATVREGIA, folio 63.

Vrinam prouocat,
Et abortiuum:
Pectus mundificat,
Tormina sedat,
Lethargum proscibit,
Prægnan.

Prægnantibus obest,
Nauseam sedat, &
Venerem parit.

SALVIA, folio 66.
Pellit abortiuum,
Menses purgat,
Contra uenena est:
Sanguinem sistit,
Compescit Venerem,
Laterisq; dolorem:
Pruritus uulvæ curat,
Virgæq; uirilis, &
Capillos tingit.

LIGUSTICVM, folio 67.
Stomachi uentos sedat,
Digestionem procurat,
Vrinas mouet,
Menstrua purgat,
Venen. mors. prodest,
Et colicis.
Pepticam confortat uirtutem,
Oculos lædit item.

OSTRVCIVM, folio 69.
Iecori prodest,
Ictericos iuuat,

M 4 Et

Et spleneticos.
 Sclyrosim sanat,
 Lapides frangit,
 Lotium mouet,
 Tussim sedat,
 Orthopnoicis subuenit,
 Depellit abortum:
 Menstrua cit,
 Leporam emendat,
 Et quasuis pustulas, &
 Sternutare facit.

CH A E R I F O L I V M, folio 76.

Cancris medetur,
 Lateris dolori quoq̃:
 Pituitam soluit,
 Lumbricos necat,
 Vrinas mouet,
 Parotidas curat,
 Vomitus compescit, &
 Vertiginem fugat.

A T R I P L E X, folio 77.

Aluum ducit,
 Clauis medetur,
 Scabros unguis curat,
 Sacrum extinguit ignem,

Poda-

Podagram sanat,
Et icterum tollit.

CORIANDRVM, fol. 73.

Lumbricos expellit,
Et tineas,
Testium tumiditatem iuuat,
Ventrem cohibet,
Sacrum ignem sanat,
Calorem omnem extinguit,
Scrophas dissoluit,
Febrem arcet,
Et menstrua tardat.

NASTVRTIVM, fol. 74.

Venerem coërcet,
Anthracem curat,
Et furunculos:
Crines retinet,
Dentis dolorem mitigat,
Depellit abortum,
Vermes depellit,
Serpentes odore fugat.
Splenem reprimit,
Schiafi medetur,
Et lichenis,
Capitisq; pruritui,

M , Pectoris

Pectōris angorem tollit.
 Aluum mollificat,
 Et tussim sanat,

E R V C A, fol. 77.

Vrinam mouet,
 Tussim repellit,
 Maculas cutis tollit,
 Et lentigines.
 Ossa fracta emendat,
 Pestiferos ictus quoq̃.
 Contra uerbera est,
 Venerem stimulat.

P A P A V E R, fol. 79.

Somnum inducit,
 Ventrem stringit,
 Menses retinet,
 Tussim compescit,
 Lethargum infert,
 Fauces curat,
 Sacrum extinguit ignem,
 Gutturis asperitatem lenit,
 Rheumata siccat,
 Oppium præbet,
 Capitis dolorem sedat:
 Aurium dolorem compescit, &

Poda-

Podagram mitigat.

C E P E, fol. 82.

Sitim facit,
 Cholericis obest,
 Pulchrum facit colorem,
 Somnum inducit.
 Alium trahit,
 Morsum curat canis,
 Et anguis.
 Auribus prodest,
 Linguam reparat,
 Caput purgat,
 Calles pedum soluit.
 Dentibus conuenit,
 Dyssenteriam curat,
 Capillos reddit
 Oris foetorem proscibit,
 Fastidia tollit,
 Oculos iuuat,
 Et maculas proscindit.

B V G L O S S V S, fol. 84.

Choleram purgat,
 Et cardiacam,
 Et pulmonem:
 Schiasim edetur, &

Conuiuas

Conuiuas exhilarat.

S I N A P I, fol. 86.

Humores incidit,
Adurit cutem,
Commouet aluum,
Confringit lapides,
Vrinam cit:
Oris collutiō est,
Sternutamentum est,
Stomachum confortat,
Suspiria sedat,
Morsum serpentis curat,
Contra fungos est,
Tussim sanat,
Et phthisim.
Vesicatorium est,
Schiassi prodest,
Iecur roborat.
Sinapismus est,
De sinapi uinum conficitur,
Et oleum.
Dentes dolorosos curat,
Vocem reddit sonoram,
Scrophas dispergit,
Caducos iuuat,
Et matricem.
Læthargum abigit,
Alopecix medetur,
Et lepræ,

Atq̃

Atq̃ periodicam fugat febrem.

C A V L I S, fol. 90.

Vulnera sanat,
Et cancos,
Podagram item,
Fistulas quoq̃.
Luxata iuuat,
Tumorem tollit,
Caliginem abigit,
Augēt lac,
Stomachum roborat,
Digerit escas,
Aluum impedit.
Splenem reprimat,
Febris ardorem sedat,
Lepram nubilat,
Crines detinet,
Lateris dolorem lenit,
Vermes pellit,
Claram reddit uocem,
Purgat caput,
Et ebrietatis est Bezoar.

P A S T I N A C A, fol. 94.

Lumbos iuuat,
Et iecur,

Asthmati-

Asthmaticos item,
 Ventremq; fluentem:
 Testium ablegat tumorem,
 Accendit Venerem,
 Dentibus prodest,
 Scorpionis medetur ictui, &
 Molæ subuenit.

O R I G A N V M, fol. 96.

Venenis Bezoar est,
 Hydropicos curat,
 Melancholicos purgat,
 Tussim repellit,
 Pruritus & acoras tollit,
 Iuuat ictericos,
 Vuulam curat,
 Oris ulcera item.
 Aurium dolori medetur,
 Stomachi morsum sedat,
 Membris contusis utilis.
 Lumbricos prouocat,
 Dentis cruciatum lenit,
 Sudorem prouocat,
 Et coxis prodest.

S E R P I L L V M, fol. 98.

Capitis dolorem sedat,

Serpentes

Serpentes effugat;
Prouocat urinas,
Compescit tormina,
Splenem iuuat,
Sputum cruentum tollit,
Iecoris sedat dolorem,
Et menstrua ducit.

V I O L A, fol. 166.

Inflammationes tollit,
Capitis grauedinem proscindit,
Anginæ medicatur,
Et caducis.
Inflammatos oculos sanat,
Caput ulcerosum item.
Matrici prodest,
Ragadias ani profligat,
Menstrua purgat,
Podagram lenit,
Cholera euacuat,
Et tussim infantum.
Caput infrigidat,
Lumbricos necat,
Capitis furfur tollit,
Vocem reparat,
Et sanguinis fluxum sistit,
Aristo.

ARISTOLOCHIA, fol. 102.

Pestiferos morsus curat,
Secundas trahit,
Asthmaticis prodest,
Pleuresim sanat,
Vulnera purgat,
Dentes item:
Febres fugat,
Et spasmus:
Podagram lenit,
Ac morbum caducum,
Dæmonia fugat,
Et fistulas,
Ac singultum,
Concipere mares facit,
Trita pisces necat.

MARRUBIVM, fol. 105.

Phthisicos iuuat,
Pectus sanat,
Asthmaticos item.
Tussientes quoq;
Partus accelerat,
Atq; secundas.
Vulnera purgat,
Pleuresim sedat,
Visum roborat,

Et

Et istericos.
Aurium dolori subuenit:
Sed uesicæ obest,
Et renibus.

I R I S, fol. 106.

Tussim sedat,
Soporem præbet,
Præcordia mundificat,
Choleram proscribit,
Et tormina,
Item uenena.
Menses cit,
Matricem mollificat,
Schiasî prodest,
Fistulas curat,
Vulnera siccat,
Epidermida inducit,
Caliginem abigit,
Et papulas.

E N V L A, fol. 109.

Menses ducit,
Vrinam & abortum:
Ventrem lenit,
Et schiasim.
Nephreticis medetur,

N

Et

Et tussi.

Spiritum item uix trahentibus,
Et rupsis prodest.

HYSOPVS, fol. 100.

Catharrum sanat,
Et raucedinem;
Et pulmoni prodest,
Lumbricos necat,
Aluum mollit.
Vultum colorat,
Phlegma educit,
Tumorem splenis sanat,
Hydropicis auxiliatur,
Præcordia relaxat,
Dentium dolorem mitigat,
Aurium tinnitum soluit.

ASARVM, fol. 111.

Prouocat urinam,
Et menstrua;
Hydropicos iuuat,
Et schiasim.
Icterus pellit,
Vomitum facit.

MENTA, fol. 115.

Confortat stomachum,

Vomitum

Vomitum compescit,
 Lumbricos expellit,
 Testibus prodest,
 Lac soluit concretum,
 Auris dolorem sedat,
 Partum accelerat,
 Canis morsum sanat,
 Hæmophthiſicis prodest,
 Conceptionem impedit,
 Et putredinem casei uetat.

C I P E R V S, fol. 116.

Calculum pellit,
 Et abortum:
 Lienem extenuat,
 Corpus roborat,
 Intertriginem curat,
 Vulnera purgat,
 Oris ulcera sanat,
 Stomachum confortat,
 Et hydropicos.

P A B O N I A, fol. 117.

Splen & iecur confortat,
 Fluxum alui impedit,
 Scothosim deponit,
 Infantis calculum eijcit,

N 2

Nephreti.

Nephreticos sanat,
Eriethericos,
Et caducos.
Menses impedit,
Et steriles purgat,

B O R A G O, fol. 119.

Apes fouet,
Apes retinet,
Ictibus apum ualet,
Et araneorum.
Strumas deponit,
Dysentericos curat,
Et ciliacos,
Etiam asthmaticos
Canis morsum sedat,
Dentes curat,
Et oculos clarificat.

S E N E C I O, fol. 121.

Tumori ualet testium,
Nervos & uulnera curat,
Ictericis prodest,
Et morbis uesicæ,
Et cordis uicijs.
Tormina sedat,
Strumas dissoluit,

Et

Et dentibus subuenit,

CHELIDONIA, fol. 123.
Oculis medicatur,
Et ictericis,
Dentium dolorem tollit,
Maculasq; abstergit.

CENTAVREA, fol. 124.

Plagas conglutinat,
Schiafi subuenit,
Et neruis.
Menses trahit,
Aluum ducit,
Oculos clarificat.

COLVBRINA, fol. 125.

Venena fugat,
A' serpentibus tuetur,
Aurium dolorem lenit,
Polypum abigit,
Et cancrum,
Oculorum caliginem item.
Abortum pellit,
Tussim sedat,
Et catharrum.
Sanguinem spuētibus conuenit,
N 9 Venerem

Venerem mouer,
Phagedenica mundat,
Et fistulas, &
Pernioni medetur.

I S A T I S, fol. 128.

Vulnera glutinat,
Sacro igni prodest,
Et tumorem sedat.

H E L L E B O R V S, fol. 128.

Pellit abortum.
Sternutatorium est,
Lumina purgat,
Mures necat,
Et muscas.
Vomitum facit,
Vertiginem pellit,
Melancholicis conducit,
Et lymphaticis,
Hydropicis item.
Lepram mundat,
Tormina sanat,
Et schiasim.
Febris prodest,
Et tetano.

Helle-

HELLEBORVS NIGER, fol. 132.

Infanis conuenit,
 Et podagræ,
 Hydropicis quoq̃,
 Item paralyticis:
 Phlegma proſcribit,
 Et caliginem.
 Fiſtulas mundat,
 Et menſes:
 Depellit abortum,
 Auditum reddit,
 Emendat lepras,
 Dentium dolorem ſedat.

VERBENA, fol. 133.

Iuuat ictericos,
 Morſus curat,
 Oris ulcera ſanat,
 Venenis nocet,
 Febres curat,
 Conuulſas hilarat.
 An æger moriatur indicat:
 Capiti prodeſt,
 Et pectori, atq̃ pulmoni,
 Pthiſi quoq̃.
 Parotidas diſſoluit,
 Calculum frangit,

N 4

Impetrare

Impetrare facit,
Amicitias conciliat.

G A M A N D R A E A, folio 135.

Tussi medetur,
Splen siccatur,
Menstrua purgat,
Hydropicis subuenit,
Morsus sanat,
Vulnera mundat,
Caliginem pellit,
Et frigus.

I V S Q V I A M V S, folio 137.

Podagram lenit,
Aurium uermes necat,
Dentis dolorem mitigat,
Compescit rheuma,
Menses impedit,
Hæmophthysicis prodest,
Tumorem testium sedat,
Et mammarum,
Maniam præstat.

M A L V A. folio 139.

Vesicæ medicatur,

Vul)

Vulnus sanat,
 Dentes dolorosos lenit,
 Venerem stimulat,
 Mammas curat,
 Abortum parit,
 Aegilopas pellit,
 Puncturas apum sedat,
 Acoras item,
 Et capitis furfur,
 Ac sacrum ignem.
 Matrīci prodest,
 Et intestinis.

PARATELLA, folio 141.

Stomachum confortat,
 Ventrem impedit,
 Scabiem curat,
 Scrophas compescit,
 Et parotidas,
 Vuulam item,
 Et dentis dolorem.
 Dysentericos curat,
 Et coeliacos,
 Aurium etiam dolorem.
 Splenis tumorem soluit,
 Menses sistit,
 Lapides expellit,
 Et scrophas impedit.

N 6

Lolium

L O L I V M, folio 144.

Cancros emundat,
 Vulnera curat,
 Zernas & lepras item:
 Scrophas spargit,
 Schiasim curat,
 Partus accelerat,
 Atq; podagras lenit.

C I C V T A, folio 145.

Necat,
 Epiphoras oculorum sanat,
 Sacrum pellit ignem,
 Mammæ extenuat,
 Venerem extinguit,
 Et podagram.

P I P E R, folio 147.

Digestionem confortat,
 Morsus curat,
 Et pectus.
 Febres compescit,
 Tormina sedat,
 Scrophas reprimi,
 Caliginem depellit,
 Maculas delet,

Cancro

Cancro medetur.

PYRETHRVM, folio 148.

Dentes curat,
Et ranulam sub lingua,
Equuam,
Caducos eleuat,
Paralyſi medetur,
Febris rigorem tollit,
Sudorem prouocat,
Et tetanum curat.

ZINGIBER, folio 149.

Ea curat quæ piper.

CIMINVM, folio 150.
Ventos carminat,
Digestionem procurat,
Venerem ſedar,
Ventrem ſtringit,
Orthopnoicis prodeſt,
Morſus curat,
Teſtes curat,
Et menſtrua.

GALANGA, folio 151.
Flegmones diſſoluit,

Stoma

Stomachum roborat,
 Ventos carminat,
 Digestionem adiuuat,
 Et colicos,
 Atq; bonum oris facit odorem

ZEDOARIA, folio 151.

Obstat uenenis,
 Morsus leuat,
 Confortat stomachum,
 Ructus sedat,
 Fastidia tollit,
 Lumbricos depellit,
 Allij foetorem inhibet.

GARIOPHILVS, folio 152.

Corroborat stomachum,
 Digestiuam confortat,
 Inhibet aluum,
 Accendit Venerem,
 Et memoriam auget.

CINAMOMVM, folio 152.

Humores siccant,
 Digestionem promouet,
 Curat hepar,

Menses

Menses purgat,
Tussim & catharrum curat,
Tympanitem quoq̃,
Renumq̃ dolores,
Et morsus pestiferos.
Oculis conuenit,
Lentiginem tollit,
Et impetiginem,
Hæmorrhoides quoq̃.

C O S T V S, folio, 154.

Splen curat,
Laterisq̃ dolorem:
Menstrua purgat,
Lumbricos pellit,
Lentigines abigit,
Venerem cit,
Febres depellit,
Et schiasim tollit.

S P I C A, folio 155.

Confortat iecur,
Et stomachum,
Renes purgat,
Et matricem.
Ictero obstat,
Ventos carminat,
Menses impedit,
Cordis tremori subuenit,
Nauseam tollit,
Venerem excitat,

Pal-

Palpebras mundat.

T H V S, folio 155.

Oculos clarificat,

Vulnera conglutinat,

Panaritium decurrit,

Auribus prodest,

Mamillas tumentes iuuat,

Hæmorrhificis auxiliatur.

Condylomata sedat,

Sanguinem sistit,

Memoriam roborat,

Caput expurgat,

Et adustioni prodest.

A L O E, folio 157.

Phlegma expurgat,

Ictericos item,

Vulnera mundificat,

Oculis medetur,

Pilos retinet,

Linguam sanat.

Ventrem lenit,

Stomacho subuenit.

F I N I S.

BASILEÆ,

PER SEBASTIANVM HENRICPETRI,

ANNO A' CHRISTO NATO,

CIO. 10. XXCI.



